साहित्य में सत्य तथा तथ्य

(सचित्र)

साहित्य में सत्य तथा तथ्य

साहित्यिकों के अमर उद्गार

अरुण, एम. ए.

१९५५
आत्माराम एण्ड संस
प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता
कश्मीरी गेट
दिल्ली-६
मूल्य तीन रुपये

प्रकाशक
रामलाल पुरी, संचालक
आत्माराम एण्ड संस
काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

लेखक की रचनायें

मौलिक

अमृत और विष
मृत्यु में जीवन
सचित्र गृह विनोद
सचित्र व्यंग विनोद
सचित्र बाल विनोद
आदम का बेटा
साहित्य में सत्य तथा तथ्य
रेलगाड़ी के डिब्बे
महापुरुषों के संस्मरण
जय काश्मीर
गप्पों का खज़ाना
हास्यार्थ कोष
आदमी, जंगल और झील
सिन्धु की घाटी में
मनुष्य कैसे पैदा हुआ
भूत भाग गया
हँसो बच्चो
नया मनुष्य
बाल आदर्श
शऊर की बातें
सेवा मार्ग
बाल शिक्षा

अनुवादित

मैक्सिम गोर्की की कहानियाँ
ऐन्टन चेखोव की कहानियाँ
आस्कर वाइल्ड की कहानियाँ

मुद्रक
मदन मोहन
निष्काम प्रेस
मेरठ

चित्रकार
योगेन्द्रकुमार 'लल्ला'

भूमिका

मेरे सामाजिक एकांकी 'रेलगाड़ी के डिब्बे' में एक स्थान पर जब पंकज के दिल को बहुत धक्का लगता है तब निशीथ के कहने पर "शाबाश है यार तुम्हें भी। दिल पर इतनी ठेस लगने पर भी मैं तुम्हें वैसे का वैसा पाता हूँ।" वह उत्तर देता है, "बड़े आदमियों को सुख-दुःख में एक समान रहना चाहिये। देखते नहीं सूर्य निकलते समय भी लाल रहता है और डूबते समय भी।" जितने सज्जनों ने यह नाटक सुना वे यह सुनकर मुग्ध हो गये।

अब इसमें बात क्या है ? 'बड़े आदमी सुख-दुःख में समान रहते हैं, सूर्य निकलते समय भी लाल रहता है और डूबते समय भी।' यह संस्कृत का एक सुभाषित है। इसका प्रयोग मोती के समान चमका। उस स्थल पर उसने सोने में सुहागे का कार्य किया। वहाँ तीन-चार पृष्ठ भर कर भी मैं पंकज का दुःख और मानसिक द्वन्द्व उस रूप में वर्णन नहीं कर सकता था जो इन बीस शब्दों ने कर दिया।

ये सत्य और तथ्य लेखन को ही नहीं सजाते, बातचीत को भी आभूषित करते हैं। किसी व्यक्ति की बातचीत से पहचान लिया जाता है कि वह कितना सुसंस्कृत है। अध्ययनशील व्यक्ति सैंकड़ों की भीड़ में चमक उठता है। जिस पार्टी, गोष्ठी आदि में वह पहुँच जाता है वही सफल बन जाती है।

बेकन ने कहा है— अध्ययन मनुष्य को पूर्ण बनाता है। साहित्यिकों के अमर उद्‌गारों को पढ़कर मनुष्य का ज्ञान बढ़ता है, उसकी प्रतिभा बहुमुखी होती है, वह अपने को सुन्दरता से व्यक्त कर पाता है, उसकी लेखन-शैली तीव्र और तीक्ष्ण हो उठती है तथा बातचीत आभूषित।

ये सत्य और तथ्य व्यक्ति को शिक्षा देते हैं, उसका जीवन बदल डालते हैं।

पर जीवन बहुत छोटा है और साहित्य बहुत विशाल। तीन सौ जन्म लेने पर भी संसार का समस्त साहित्य नहीं पढ़ा जा सकता। आज का जीवन वैसे भी बहुत व्यस्त हो गया है। जैसे जैसे सभ्यता बढ़ती जा रही है, वैसे वैसे जीवन एक भागदौड़ बनता जा रहा है।

इसी कारण, जो थोड़ा-बहुत साहित्य मैंने पढ़ा है, उसमें से अमर सत्य तथा तथ्य छाँट कर इस पुस्तक में एकत्रित कर दिये हैं। मैं जानता हूँ कि यह साहित्य-निधि का बूँद-मात्र है। पर फिर भी यह निधि है हीरे की खान। छोटे से छोटा हीरा भी मनुष्य को अलंकृत कर उठता है।

यह पुस्तक विद्यार्थियों के लिये विशेष रूप से उपयोगी है। यह उनका जीवन जीवन बनायेगी, उन्हें अपने को व्यक्त करने में सहायता देगी, उन्हें सफल नागरिक सिद्ध करेगी।

संसार के महान पुरुषों के उद्धरण इसमें संकलित हैं। गांधीजी, जवाहरलाल नेहरू, शरतचन्द्र चटर्जी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, प्रेमचन्द, निराला, जयशंकर प्रसाद, खलील जिब्रान, बर्नर्ड शॉ, इलिया एहरनबुर्ग,

पेब्लो नेरूदा, टालस्टाय, स्वामी विवेकानन्द, रोमा रोलां, मैक्सिम गोर्की आदि यदि आधुनिक युग का प्रतिनिधित्व करते हैं तो वेदव्यास, वाल्मीकि, बुद्ध, अशोक, ईसा, कालिदास, भवभूति, गेटे, शेक्सपियर, प्लेटो आदि बीते युग का। इन्हीं नामों में लेखकों की सूची समाप्त नहीं हो जायगी। यदि सब उद्धरणों के लेखकों का नाम लिखा जाये तो कम से कम पाँच पृष्ठ भरेंगे।

इन उद्धरणों के नीचे नाम मैंने इसीलिये नहीं दिये कि सत्य और तथ्य भूगोल की या समय की सीमा से बँधे नहीं होते, वे अमर होते हैं। टालस्टाय ने नारी के विषय में जो तथ्य दिया है, लगभग वही खलील जिब्रान ने। नाम देते तो अलग अलग उद्धरण दिये जाते। अमर उद्‌गार वही हैं, केवल भाषा का थोड़ा अन्तर है। इसी कारण मैंने नाम छोड़ दिये हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि मैं कृतघ्न हूँ। मैं उन सब महापुरुषों का अति कृतज्ञ हूँ जिन्होंने अमर विचारों को कलेवर देकर संसार के समक्ष रखा।

इस पुस्तक में एक विचार के उद्धरण नहीं हैं, सब प्रकार के हैं। कोई मनष्य के गुण दिखलाता है, तो दूसरा दोषों को दूर करने के उपाय बताता है। कोई बड़ाई है तो कोई बुराई। कोई हास्य है तो कोई व्यंग। कोई प्रकृति दर्शाता है तो दूसरा अन्तःकरण।

फिर, उद्‌गार सब समय और स्थान के हैं। व्यंग में संस्कृत का प्राचीन सुभाषित, 'हे वैद्यराज, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। तुम यमराज से भी बढ़ कर हो। यमराज तो केवल शरीर ही लेता है

लेकिन तुम शरीर के साथ-साथ धन भी लेते हो।' है, तो साथ में प्रेमचन्द जी का भी 'नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिये। ऐसा काम ढूँढना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखाई देता है और फिर घटते घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदा प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसमें बरकत होती है।'

अन्त में मैं सब साहित्यकारों को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिनके उद्गार इस पुस्तक में संकलित हैं। संकलन में मित्र श्रीकृष्ण की सहायता को भी मैं नहीं भूल सकता।

— अरुण

साहित्य में सत्य तथा तथ्य

मेरे ऊपर कभी कभी आशावादी होने का दोषारोपण किया जाता है। लेकिन मैंने कभी भी जीवन के दुःखों या कष्टों की अवहेलना नहीं की और उन्हें तुच्छ नहीं माना, मैंने यह कभी नहीं कहा कि मनुष्य सुखी है, केवल यह कहा कि वे सुखी हो सकते हैं: कि वे सुखी नहीं हैं, बहुधा इसमें उनका ही दोष है: कि हम में से अधिकतर प्राप्त सुख से अधिक सुख ठुकरा देते हैं। यह हमें घोर निराश बना देता है।

कुछ मनुष्य, जो उन्हें मिल नहीं सकता जानते हुए भी उसी की कामना में, जिससे वे बच नहीं सकते उसका खेद प्रकट करने में,

और जिसे वह समझते नहीं उसके विषय में बात करने में अपने जीवन व्यर्थ गँवा देते हैं।

यह अवश्य सत्य है कि हम जीवन को बिना दुखों के नहीं गुज़ार सकते। जहाँ धूप होगी वहाँ छाया भी अवश्य होगी। हमें इस बात का गिला नहीं करना चाहिये कि गुलाब में कांटे होते हैं; बल्कि इस बात का धन्यवाद देना चाहिये कि कांटों में भी फूल होते हैं।



तुम झूठ से शायद घृणा करते हो, मैं भी करता हूँ, परन्तु जो समाज-व्यवस्था झूठ को प्रश्रय देने के लिये तैयार की गई है, उसे मान कर यदि कोई कल्याण कार्य करना चाहो तो तुम्हें झूठ का ही आश्रय लेना पड़ेगा। सत्य इस समाज-व्यवस्था में प्रच्छन्न होकर वास कर रहा है। तुम उसे पहचानने में भूल न करना। इतिहास साक्षी है कि देखी सुनी बात को ज्यों का त्यों कह देना या मान लेना सत्य नहीं है। सत्य वह है जिससे लोक का आत्यन्तिक कल्याण होता है। ऊपर से वह जैसा भी झूठ क्यों न दिखाई देता हो वही सत्य है। .... मैं तुमसे आशा रखता हूँ कि उचित अवसर पर न तो तुम झूठ से झल्ला उठोगे और न ऐसे झूठ के बोलने में हिचकोगे ही जिससे समस्त मनुष्य जाति उपकृत होती हो।



जिस व्यक्ति ने भूख से कुम्हलाये पुत्र को; दूसरे के घर में सेवा करने वाली पत्नी को; विपत्तिग्रस्त मित्र को; दुही हुई, किन्तु चारे के अभाव में भूखी खड़ी रंभाती गौ को; पथ्य के अभाव में रोग-शय्या पर पड़े हुए माता-पिता को; तथा वैरी से पराजित

अपने स्वामी को देख लिया, उसे नरक देखने की क्या आवश्यकता है ? इससे अधिक अप्रिय और वहाँ क्या होगा ?



पहले ब्रह्मा ने ब्रह्माण्ड को रचा और आराम किया।

तब ब्रह्मा ने पुरुष को रचा और फिर आराम किया।

तब ब्रह्मा ने स्त्री को रचा और उस दिन से न ब्रह्मा को आराम मिला, न पुरुष को।



व्यंग बिना अपवाद के मिश्रण के भी हो सकता है। हाँ, व्यंग में अपवाद सरलता से मिलाया जा सकता है। परन्तु वैसा व्यंग तो आनन्ददायक न हो कर विषैले ढंग की तरह दुखदायी होता है। अपवाद रूपी शस्त्र को लिये हुए तीन इंच लम्बी जीभ बड़े से बड़े मनुष्य को आहत कर सकती है। तलवार का प्रहार चाहे खाली भी जाये पर अपवाद का वार खाली नहीं जाता। वह बड़े से बड़े मनुष्य को भी धक्का लगा सकता है।



वीणा को बजाते बजाते, काम पड़ने पर, यदि तुरन्त तलवार न उठ पाई, कोमल सेज पर सोते सोते, संकट आने पर यदि तुरन्त ही उछल कर कमर न कसी, ध्रुवपद को गाते गाते, शत्रु के सामने आने पर, यदि तुरन्त गरज कर चुनौती न दे पाई, जिन कानों में मीठे स्वरों की रसधार बह बह कर जा रही थी, उन्हीं कानों में यदि रणवादों और कड़खों की धुन न समा पाई, तो ऐसी वीणा, सेज और ध्रुवपद की तानों का काम ही क्या !



संसार में सबसे बड़े अधिकार सेवा और त्याग से मिलते हैं और वे आपको मिले हुए हैं। उन अधिकारों के सामने वोट कोई चीज़ नहीं। मुझे खेद है, हमारी बहनें पश्चिम का आदर्श ले रही हैं, जहाँ नारी ने अपना पद खो दिया है और स्वामिनी से गिर कर विलास की वस्तु बन गई है। पश्चिम की स्त्री स्वच्छन्द होना चाहती है, इसलिये कि वह अधिक से अधिक विलास कर सके।



बिन्दु सिन्धु ? बूंदों का वारिधि
बूंदों पर अवलम्बित।
व्यक्ति समाज ? व्यक्ति में रहता
अखिल उदधि अन्तर्हित।
सागर की असीमता जड़ है,
जन-समाज की जीवित।
सृजन शक्ति का दूत व्यक्ति
करता समाज को विकसित॥



बन्द कञ्चुकी के सब खोल दिये प्यार से,
यौवन उभार ने
पल्लव-पर्यंक पर सोती शेफालिके।
मूक-आह्वान भरे लालसी कपोलों के
व्याकुल विकास पर
झरते हैं शिशिर से चुम्बन गगन के।



विजन-वन-वल्लरी पर
सोती थी सुहाग-भरी-स्नेह-स्वप्न-मग्न—

अमल-कोमल-तनु तरुणी— जूही की कली,
दृग बन्द किये, शिथिल,— पत्राङ्क में,
वासन्ती निशा थी,
विरह विधुर-प्रिया-संग छोड़
किसी दूर देश में था पवन
जिसे कहते हैं मलयानिल।



चित्त की मंजुल भावनाएँ उद्वेग बन बन कर विनष्ट होती जा रही हैं।



इन में मूल्य नहीं हृदय भी लगा है। ये दाम पर नहीं बिकते।



यह मन का विष, यह बदलने वाली हृदय की क्षुद्रता है। ओह! जब हम अनजान लोगों की भूल और दुखों पर क्षमा या सहानुभूति प्रकट करते हैं तो भूल जाते हैं कि यहाँ मेरा स्वार्थ नहीं है।



पात भरी सहरी, सकल सुत बारे बारे,
केवट की जाति कछु वेद न पढ़ाइहौं।
सब परिवार मेरो याही लागि राजा जू,
हौं दीन वित्तहीन कैसे दूसरी गढ़ाइहौं॥
गौतम की घरनी ज्यों तरनी तरेगी मेरी,
प्रभु सों निषाद ह्वै कै वाद न बढ़ाइहौं।
'तुलसी' के ईस राम रावरे सों साँची कहौं,
बिना पग धोये नाथ नाव न चढ़ाइहौं॥



जो किसी ने इस पर प्रश्न कर दिया, 'क्यों जनाब, टोकने से क्या हो गया ?' तो और भी बिगड़े। बोले— 'आप तो अंगरेजी पढ़ कर नास्तिक हो गये, आप इन बातों को क्या समझ सकते हैं।' नास्तिक की परिभाषा भी कितनी बढ़िया है ! जो छींक और टोकने में कोई हानि न समझे वह नास्तिक। खुदा हाफिज है इन अक़्ल के दुश्मनों का !



आप चाहे कैसे कड़े मिज़ाज हों, रुक्खण हों, मक्खीचूस हों, जहाँ हम चार दिन झुक झुक के सलाम करेंगे, दौड़ दौड़ आपके पास आवेंगे, आपकी हाँ में हाँ मिलावेंगे, आपको इन्द्र, वरुण, हातिम, कर्ण, सूर्य, चन्द्र, लैली, शीरीं इत्यादि बनावेंगे, आपको ज़मीन से उठा के झंडे पर चढ़ावेंगे, फिर बतलाइये आप कब तक राह पर नहीं आवेंगे।



अंधेरा पाख बीता। उजेला पाख आया। पश्चिम की ओर सूर्य डूबा और वक्राकार हँसिया की तरह चन्द्रमा उसी दिशा में दिखलाई पड़ा। मानों कर्कशा के समान पश्चिम दिशा सूर्य के प्रचंड ताप से दुखी हो, क्रोध में आ इसी हँसिये को लेकर दौड़ रही है और सूर्य भयभीत होकर पाताल में छिपने के लिये जा रहा है।



एतदर्थ आख्यायिका-लेखक को उत्कृष्ट कोटि की ध्वन्यात्मक शैली का प्रश्रय लेना पड़ता है, नहीं तो वह स्वल्प सीमा में अपनी अभीष्ट सिद्धि नहीं कर सकता। श्रेष्ठ आख्यायिका की शैली इसलिये ध्वनिगर्भित, पुष्ट और वेगवती होती है तथा उसमें शिथिल व्यापार की योजना कदापि नहीं की जाती।



वास्तव में मैं वाचाल नहीं हूँ। नदी के प्रवाह को जहाँ कहीं बांध दिया जाता है तब वह रुद्ध हो जाता है। फिर जब प्रचण्ड वर्षा के कारण प्रवाह में पूर आ जाता है, तब प्रशान्त, अवरुद्ध-सरिता-सलिल बांध को तोड़ फोड़ कर बह पड़ता है। फलों से लदे हुये वृक्ष झंझावात के झोंकों से झुक कर प्राणियों को फलों का प्रसाद दे उठते हैं। यही मेरा स्वभाव है। राजकुमार, कितने समय से स्तब्धता के संकट को सहन करता चला आ रहा हूँ।



समुद्र शान्त और गहन गम्भीर होते हुये भी, आडोलित विडोलित भी है। एक उर्मि के आने से कहीं जलराशि में भँवर पड़ जाता है तो कहीं मन्द मंथर विपुल समतल के नीचे निश्चल सी जल-रेखाओं के साथ रवि-रश्मियाँ आलिंगन करती हुई प्रतीत होती हैं। फिर जहाँ भुजा उठाये हुए तरंग आई कि आभा नाचती हुई उसके ऊपर अठखेलियाँ करने लगी और भँवर कूप तथा समतल अदृश्य हुआ।



खेलन अब मोरी जात बलैया।
जबहि मोहि देखत लरकन संग तबहि खिजत बल भैया॥
मोसो कहत तात वसुदेव को देवकी तेरी मैया।
मोल लियो कछु दे वसुदेव को करि करि जतन बढ़ैया॥
अब बाबा कहि रहत नंद को यशुमति को कहे मैया।
ऐसहि कहि सब मोहि खिजावत तब उठि चलौं खिसैया॥
पाछे नन्द सुनत हैं ठाडे हँसत हँसत उर लैया।
सूर नन्द बलरामहि धिर्‌यो सुनि मन हरष कन्हैया॥



सब बुराइयों की एकमात्र औषधि तुम्हारा अपना सद्गुण है। जो द्वेष करे उससे प्रेम करना ही उसे सुधारने का मार्ग है। हरएक अवगुण गुण से सुधरता है। रास्ता भूलने वाले को सही रास्ता दिखाओ। उसकी ग़लती से तुम्हें कौन सा नुकसान पहुँचा है? यदि तुम्हारा स्वभाव नहीं बिगड़ा, तो कुछ भी नहीं बिगड़ा। जो मूर्ख है वह अन्य प्रकार का बर्ताव कैसे कर सकता है? इसे न समझ कर उस बेचारे पर तुम व्यर्थ क्रोध कर रहे हो? उसके स्वभाव को जानते हुये तुम्हें कृतज्ञता की आशा नहीं करनी चाहिये। तुम अपने स्वभाव के अनुसार ही तो आचरण करते हो। फिर उसका पारितोषिक क्यों चाहते हो।

❀

तब एक बच्चे को छाती से चिपटाये एक तरुणी ने कहा—गुरुवर, सन्तान के बारे में हमें कुछ उपदेश दीजिये।

उन्होंने उत्तर दिया—

तुम्हारी सन्तान तुम्हारी नहीं है।

उन्होंने तुम से जन्म ज़रूर लिया किन्तु तुम निमित्त मात्र हो।

कुछ काल तुम्हारे साथ रहने से तुम्हारे बच्चे तुम्हारी सम्पत्ति नहीं बन जाते।

तुम उन्हें अपना प्यार दे सकती हो, अपने विचार व भावनायें नहीं।

क्योंकि अपने विचार व भावनायें वे अपने साथ लाये हैं।

उनके शरीर को घर देना मात्र ही तुम्हारे हाथ है, उनकी आत्मा को तुम बन्दी नहीं बना सकती। उनकी आत्मा का निवास दूर भविष्य के मन्दिर में है, जहाँ तुम्हारी दृष्टि स्वप्न में भी नहीं पहुँच सकती।





अपनी सन्तान को अपने ही सांचे में ढालने का प्रयत्न छोड़ दो। उनके समान होने की कोशिश भले ही करो।

क्योंकि जीवन पीछे नहीं मुड़ता, न ही भूत काल के सींखचों में क़ैद रहता है।

जीवन आगे बढ़ता है।

सन्तान तुमसे आगे बढ़ेगी।



स्वतन्त्रता कोई निजी मामला नहीं है, बल्कि एक सामाजिक समझौता है।



तुम एक बाजे के समान बनो जिसे कोई भी वायु बजा सके।



आशा से भर कर यात्रा करनी गन्तव्य स्थान पर पहुँचने से अधिक अच्छी है; और सच्ची सफलता कार्य करने में है।



"कठोरता का उदाहरण है पुरुष और कोमलता का विश्लेषण है— स्त्री जाति। पुरुष क्रूरता है तो स्त्री करुणा है— जो अन्तर्जगत् का उच्चतम विकास है, जिसके बल पर समस्त सदाचार ठहरे हुये हैं। इसीलिए प्रकृति ने उसे इतना सुन्दर और मनमोहन आवरण दिया है— रमणी का रूप।"



काल का चक्र घूम रहा है। उस चक्र में गति है, सृष्टि है, तो संघर्ष भी हैं। उससे ज्योति के जो स्फुलिंग फूटते हैं, वे सबके लिये

एक से नहीं सिद्ध हो पाते। किसी के लिये वे प्रकाश के कण हैं, तो किसी और के लिये फूस के जंगल में एक चिनगारी के समान। जो सब प्रकार से सम्भव है काल के चारु चरण उसे असम्भव बना डालते हैं। इसके विपरीत जो चारों ओर से असम्भव प्रतीत होता है, काल की करुण-कोर उसे सम्भव करके जगत की आँखों में एक एक जुगनू खोंस देती है।



क्षमा का जन्म होता है अन्तःकरण से; शरीर के भीतर उस कोने से, जहाँ आग की चिनगारियाँ ही नहीं, आँसुओं का झरना भी बहता है। क्षमा शब्दजाल की चेरी नहीं हुआ करती। हृदय गल गल कर जब अपना पावन रस, आँखों का गला चीर कर उपस्थित करता है, तब कहीं क्षमा के द्वार खुलते हैं। फिर मैं पूछता हूँ क्या बेईमानी, धोखेबाज़ी और विश्वासघात जैसे अपराधों को मिटाने का एकमात्र उपाय यही क्षमा है? यह क्षमा नहीं, ईश्वर की इस पवित्र रचना के साथ घोर बलात्कार है— पाप है यह।



कंकड़ी जल में जाकर कोई स्थायी विवर नहीं फोड़ सकती। क्षण भर जल का समतल भले ही उलट-पुलट हो, लेकिन इधर-उधर से जलतरंग दौड़कर किसी छिद्र का चिह्नमात्र भी नहीं रहने देती। जगत की भी यही चाल है। यदि स्वर्ग से देवेन्द्र भी भागकर इस लोक-चलाचल में आ खड़े हों, फिर संसार देखते ही देखते उन्हें अपना बना लेगा। दो दिन में राम 'हाय जानकी' कहकर बन-बन भटकते फिरे। दो क्षण में वही विश्वामित्र को स्वर्ग से घसीट लाया।



यह क्या शोर है जो मैं पूर्ण चन्द्रमा के गोले में देख रहा हूँ। सारा संसार धूर्तता, झूठ और शरारत से भरा हुआ दिखाई देता है। प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि अब सुख-शान्ति के दिन आयें; परन्तु दुःख है कि दिन-दिन ख़राबी बढ़ती जा रही है। दुष्ट मूर्खों को सुन्दर सुन्दर खाने को मिल रहा है; विद्वान और सज्जन अपने हृदय का रक्त पीकर दिन काट रहे हैं। बहुमूल्य अरबी घोड़ा गधे की काठी के नीचे है, इसके विपरीत प्रत्येक गधे के गले में सोने के पट्ठे पड़े हैं। कन्याएँ माताओं के साथ लड़ रही हैं। पुत्र पिता के विपरीत है। भाई-भाई में प्रेम नहीं है। बाप भी पुत्र के विरुद्ध हो रहा है। ऐ लोगो, ख्वाजा हाफ़िज़ की नसीहत सुनो—जाओ नेकी करो, क्योंकि यह उपदेश मोतियों और माणिक्यों से भी मेरी समझ में बढ़कर है।



परिवर्तन की शक्ति शरीर में नहीं, बुद्धि में रहती है। उसी को तेज कहते हैं। तेजस्वी बुद्धि का अर्थ यही है कि बुद्धि जैसा सोचती है वैसी जीवन की सत्ता उसके शरीर पर होनी चाहिये।



फल जितना ज्यादा गलता है, बीज उतना ही ज्यादा सख्त होता है। यहाँ तक कि नया अंकुर देने की शक्ति उस सड़े हुए फल के भीतर के बीज में ही होती है। ठीक इसी तरह जैसे-जैसे हमारा शरीर जीर्ण होता जाय, हमारी बुद्धि जीर्ण होने के बदले तेजस्वी होनी चाहिए।



दुख तो उस छिलके का तोड़ा जाना है जिसने तुम्हारे ज्ञान के फल को छिपा रखा है।

जिस तरह फल के ऊपर के कठोर छिलके को टूटना पड़ता है, जिससे कि उसके हृदय को भी सूर्य का प्रकाश मिल सके, उसी तरह तुम्हारा भी दुःख से परिचय होना आवश्यक है।

यदि तुम अपने रोज़ के चमत्कारों को कौतूहल से देखने की हृदय को आंखें दे सको तो तुम जान पाओगे कि तुम्हारा दुःख तुम्हारे सुख की अपेक्षा कम आश्चर्यपूर्ण नहीं है।

तब तुम अपने जीवन की ऋतुओं का उसी तरह स्वागत करोगे जिस तरह तुम उन ऋतुओं का स्वागत करते हो जो तुम्हारे खेतों में आती-जाती हैं। और तभी तुम शान्तिपूर्वक अपने दुःख-रूपी शिशिर का निरीक्षण कर सकोगे।

तुम्हारा अधिकांश दुःख स्वयं तुम्हारी अपनी सृष्टि है।

दुःख एक कड़वी औषधि है जिससे तुम्हारा अंतर्वासी चिकित्सक तुम्हारी रोगी आत्मा को स्वस्थ करता है।

इसलिये अपने चिकित्सक पर विश्वास करो और उसकी दी हुई औषधि को चुपचाप शान्ति से पी लो।

क्योंकि उसके हाथ यद्यपि कठोर और भारी हैं, फिर भी उन हाथों के संचालक तो अदृश्य के कोमल हाथ हैं।

और औषधि की प्याली यद्यपि तुम्हारे होठों को जलाती है, फिर भी वह मिट्टी से बनी है जिसे कुम्हार ने पवित्रताओं से सींचा है।



मेरी राय में सब विद्याओं की विद्या यह है कि हम अपने को साफ रखना सीखें। मन को भद्दी चीजों से हटाकर सुन्दर, मनोहर वस्तुओं की ओर जमाना, विरोध से हटाकर ऐक्य में स्थित करना,

मृत्यु से हटाकर दिव्य जीवन के रहस्य में लगाना, बीमारी के विचारों से हटाकर आरोग्य के मीठे विचारों में उसे सुख-स्नान कराना—यह एक बहुत बड़ी कला है। ऐसा करना कोई सहज काम नहीं, पर मनुष्य के लिये यह सम्भव जरूर है। विचारों को यथायोग्य रूप देने की इसके लिये बड़ी आवश्यकता है।



परिस्थितियाँ मनुष्य को कष्ट पहुँचा सकती हैं, धक्का दे सकती हैं, पर रगड़कर नष्ट नहीं कर सकतीं। मनुष्य परिस्थितियों से बड़ा है, बशर्ते वह मनुष्य हो, काम क्रोध का पुतला जड़ पिंड नहीं, लोभ मोह का गुलाम पशु नहीं, किसी प्रकार जीवित रहकर मरने की तैयारी करते रहने वाला भुनगा नहीं— 'मनुष्य'। ऋषि ने ऐसे ही मनुष्य की याद करके कहा था— "तुम से वह गुप्त रहस्य कहे जाता हूँ, मनुष्य से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है।"



किसी अन्धे का हाथ पकड़कर यदि हम उसे एक कमरे में ले जायं और वहाँ की हर वस्तु का उसे स्पर्श करा कर उस कमरे का परिचय दिला दें तो शायद वह उसमें रह भी सकेगा और अपना नित्य का व्यवहार चला सकेगा, लेकिन इतनी झंझट करने के बजाय यदि हम इस अन्धे को दृष्टि दे सकें, तो एक क्षण पूर्व का अन्धा कमरे की सभी वस्तुओं का मानो स्वामी बन जायगा। फिर तो उसे कमरे की हर चीज़ से परिचय कराने की जरूरत भी नहीं रहेगी। साहित्य की महिमा भी ऐसी ही है। साहित्य पाठ नहीं सिखाता, बल्कि दृष्टि देता है। वह जीवन का उद्दीपन है, रहस्योद्‌घाटन है, साक्षात्करण है।



जहाँ सुख है, आनन्द है, ऐश्वर्य है, आराम है, वैभव है, विलास है, वही स्वर्ग है।

जहाँ दुःख है, दर्द है, प्रताड़ना है, दीनता है, दरिद्रता है, दुर्दशा है, वही नरक है।

पर जहाँ दुःख-सुख है, हर्ष-विषाद है, संपन्नता और दरिद्रता है, जहाँ लोग मरते भी हैं और जीते भी हैं, जहाँ शहनाइयां भी बजती हैं और मातम भी होता है, वही दुनिया है। उसी को दुनिया कहते हैं।

जहाँ रूप है, गंध है, रस है, सौन्दर्य है, घृणा है, लोभ है, क्रोध है, मोह है, आसक्ति है, विरक्ति है। वही दुनिया है, उसी को दुनिया कहते हैं।

जहां धूप है, छांह है, अन्धकार है, प्रकाश है, अपने हैं, पराये हैं, 'मैं' है और 'तू' है, बचपन है, जवानी है, बुढ़ापा है, बीमारी है, मौत है, वही दुनिया है। उसी को दुनिया कहते हैं।



प्रत्येक परमाणु के मिलन में एक सम है, प्रत्येक हरी हरी पत्ती के हिलने में एक लय है। मनुष्य ने अपना स्वर विकृत कर रखा है, इसी से तो उसका स्वर विश्व-वाणी में शीघ्र नहीं मिलता। पाण्डित्य के मारे जब देखो, जहाँ देखो, बेताल बेसुरा बोलेगा। पक्षियों को देखो, उनकी 'चह चह', 'कल कल', 'छल छल' में, काकली में, रागिनी है।



जीवन के अन्तिम दृश्य को जानते हुए, अपनी आंखों से देखना, जीवन रहस्य के चरम सौन्दर्य की नग्न और भयानक

वास्तविकता का अनुभव केवल सच्चे वीर हृदय को होता है। ध्वंसमयी महामाया प्रकृति का यह निरन्तर संगीत है। उसे सुनने के लिये हृदय में साहस और बल एकत्र करो। अत्याचार के श्मशान में ही मंगल का, शिव का, सत्य सुन्दर संगीत का समारम्भ होता है।



प्रेम की बून्दों में यह असार संसार मिथ्या-रूप हो कर घुल जाता है और हम इस पृथ्वी से उठ कर आत्मा के पवित्र नभोमंडल में उड़ने लगते हैं।



कला का अर्थ है सृजन। वह कलाकार की अपनी सृष्टि है। वह मानो उसकी अन्तरात्मा का प्रयत्न विकास है। कला में यदि कहीं अनुकरणशीलता है तो उसका कारण कलाकार पर देश और काल के वे प्रभाव हैं, जो उसकी अन्तरात्मा में संस्कार के रूप में बद्धमूल हो गये हैं। परन्तु यदि अनुकरणशीलता में ही कला की समाप्ति है, यदि उसमें कलाकार की कोई अपनी विशेषता नहीं है, तो वह क्षणिक है। किसी भी कलाकार की कृति में अपूर्वता लाती है उसकी अनूभूति।



लक्ष्मी का आकार तो बहुत बड़ा है ही नहीं, और वह भी समयानुसार छोटा बड़ा होता रहता है। यहाँ तक कि कभी वह अपना बड़ा आकार समेट कर काग़ज़ के चन्द अक्षरों में छिपा लेती है। कभी कभी तो मनुष्य की जिह्वा पर जा बैठती है, आकार का लोप हो जाता है। किन्तु उसके रहने को बहुत आकार की जरूरत होती है। वह आई और घर बढ़ने लगा। छोटे घर में उससे रहा नहीं जाता।



जो नहीं उतरता, वह भी क्या नशा रहा ? लेकिन अगर नशा न हो तो सामने देखती तो हो,— उस नशे के लिये शराब हर घड़ी, हर कहीं मौजूद है। नदी बह रही है, पेड़ हौले हौले हिल रहे हैं, घास की हरियाली बिछी है, आसमान है जो सबको लेकर भी सूना है, और यह धरती जो सब सहती है और गूंगी है। इस सब कुछ के भीतर क्या वह नहीं है जो अक्षय है।



केसव कहि न जाय का कहिये।
देखत तव रचना विचित्र अति, समुझि मन ही मन रहिये ॥
सून्य भीति पर चित्र, रंग नहीं, तनु बिनु लिखा चितेरे।
धोये मिटे न, मरै भीति, दुख पाइय इहि तनु हेरे ॥
रवि-कर-नीर बसै अति दारुण मकर रूप तेहि माहीं।
बदनहीन सो ग्रसै चराचर, पान करन जे जाहीं ॥
कोउ कह सत्य, झूठ कह कोऊ, जुगल प्रबल कोउ मानै।
'तुलसिदास' परिहरै तीनि भ्रम, सो आपन पहिचानै ॥



भौहें सुरचाप चारु प्रमुदित पयोधर,
भूषन जराय जाति तड़ित रलाइ है।
दूरि करि सुख मुख सुखमा ससी की नैन,
अमल कमल दल दलित निकाई है।
'केसोदास' प्रबल करेनुका गमनहर,
मुकुत सुहंसक-सबद सुखदाई है।
अम्बर बलित मति जो है नीलकंठ जू की,
कालिका की बरषा हरषि हिय आई है ॥







ज्ञान समझता है कि सत्य को अर्थ का मोह नहीं है और सत्य समझता है कि वह स्वयं अर्थ है। ज्ञान के लिये अर्थ साधना है, इष्ट है, उद्देश्य है। यहाँ तक कि वही उसका आदर्श और धर्म कर्म भी है। किन्तु सत्य के लिये अर्थ एक साधन है, उपकरण है। ज्ञान उसे शुभ्र-ज्योत्स्ना के रूप में देखता है, तो सत्य उसे स्वेद बिन्दु का मैल, कपट का घट और प्रपंच की देन मानता है।



मुख कमल समीप सजे थे,
दो किसलय दल पुरइन के।
जल बिन्दु सदृश ठहरे कब,
इन कानों में दुख किनके।
है किस अनंग के धनु की,
यह शिथिल शिञ्जनी दुहरी।
अलबेली बाहु लता या,
तन छवि सर की है लहरी॥



मैं सोचता हूँ कि आत्म-प्रवंचना से बढ़कर दूसरा कोई अविवेक नहीं, आत्म-प्रतारणा से बढ़कर और कोई दुःख नहीं, और कठिनाइयों पर विजय पाने के आनन्द से बढ़कर और कोई सुख नहीं।



कहूँ तीर पर कमल अमल सोभित बहु भांतिन।
कहूँ सैवालन मध्य कमुदिनी लगि रहि पांतिन॥
मनु दृग धारी अनेक जमुन निरखति निज सोभा।
कै उमगे प्रिय-प्रिया-प्रेम के अनगिन गोभा॥
कै करिकै कर बहू पीय को टेरत निज ढंग सोहई।
कै पूजन को उपचार लै चलति मिलन मन मोहई॥



संसार सीमाबद्ध है, परन्तु कल्पना तो असीम है। हमारी आकांक्षायें उसी कल्पना लोक में पहुँच कर तृप्ति लाभ कर सकती हैं। सत्य के निष्ठुर आघात पर कल्पना मधुर प्रलेप लगा देती है। कल्पना के द्वारा हम किस लोक में भ्रमण नहीं करते, किस भयानक स्थिति का अनुभव नहीं करते, किस प्रेम की मधुरिमा से पूर्ण जीवन का अनुभव नहीं करते। इसीलिये कथाओं से मनोरंजन होता है।



कहुँ सुन्दरी नहात वारि कर जुगल उछारत।
जुग अम्बुज मिलि मुक्त गुच्छ मनु सुच्छ निकारत॥
धोवति सुन्दरि बदन करन अति ही छवि पावत।
वारिधि नाते ससि कलंक मनु कमल मिटावत॥
सुन्दरि ससि मुख नीर मध्य इमि सुन्दर सोहत।
कमल बेल लहलही नवल कुसुमन मन मोहत॥



परन्तु जीवन की सतह साबुन, तेल, नाई, धोबी, दरजी और चमार की कृपा से ऊँची नहीं हो सकती। ये सब जो कुछ दे सकते हैं वह तो बाहरी पहरावा है। वास्तव में जीवन की सतह ऊँची करने का अर्थ यह है कि हम अपनी आत्मा के पाँचों कोषों को अच्छी अवस्था में रखें।



तुलसी सन्त सुअम्ब तरु, फूल फलहिं परहेत।
इततें ये पाहन हनें, उततें वे फल देत॥



इस प्रकार के ऐसे मनुष्य भी हुआ करते हैं जो दूसरों को कुछ कहने ही नहीं देते। वे चाहते हैं कि सब मनुष्य केवल उनकी बातों को सुना करें और वे कुछ न कहा करें— उसे चुपचाप सुनते चले जायें। परन्तु इससे सुनने वालों के साहस की समाप्ति हो जाती है। इससे बातचीत करने का सब आनन्द चला जाता है। किन्हीं किन्हीं मनुष्यों में एक महान् दुर्गुण यह होता है कि वे सदैव अनुपस्थित मनुष्यों की निन्दा किया करते हैं और अनाप-शनाप बक कर और सदा किसी का पक्ष लेकर अपने साथियों का मनोरंजन करना तथा उन्हें अपनी ओर आकर्षित करना चाहते हैं। किसी मनुष्य के आचरण के विषय में राय देना, उसके सम्बन्ध में कुछ भली बुरी बातें करना और समाज की दृष्टि में उसे नीचे गिराने का प्रयत्न करना मानों इनके संभाषण में हँसी दिल्लगी की बात है। परन्तु इन मनुष्यों का उद्देश्य कभी सिद्ध नहीं होता। समाज के सभी मनुष्यों का दिल इनसे फिर जाता है। इसलिये बातचीत करते समय अपने मुँह से ऐसा शब्द कभी नहीं निकालना चाहिये जिससे फिर हमको पश्चात्ताप करना पड़े। ऐसी तुच्छ बात भी नहीं करनी चाहिये जिससे दूसरों का अमूल्य समय नष्ट हो अथवा अपनी नीचता प्रकट हो।



तौ लगि या मन सदन में हरि आवै केहि बाट।
विकट जुरें जौ लौं निपट, खुलैं न कपट कपाट॥



मृगमद की गन्ध छिपती नहीं। बसन्त की बासन्ती .... जेठ की आधी रात में कोयल की कूक .... शरद् की चाँदनी रोके नहीं रुकती। राजकुमारी अपने प्रणय से मुझे धन्य करना चाहती हैं और अब मेरा मन भी उनमें रम गया है। पर महामात्य प्रणय

भी राजनीति का कूटचक्र जो चला रहे हैं। अपने प्रणय में भी मैं स्वतन्त्र नहीं हूँ मित्र! इसमें भी पाण्डव कुल की मर्यादा और नीति शास्त्र की .... बेड़ी बन रही है।

❀

कनक कनक तैं सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाये बौराइ जग, या पाये बौराय॥

❀

पृथ्वी पर पहाड़ों की चोटियाँ भी मिलती हैं .... पर धरती के जीवों का पालन करती है वह भूमि जो समतल है। सम्भव है गौतम किसी दिन पर्वत की चोटी से दीख पड़ें, पर जिस दिन सारी धरती पर्वत बन जायेगी इसकी उपज रुक जायगी और उन पर्वतों की ओर सिर उठाकर देखने वाला कोई भी न रहेगा।

❀

पुर ते निकसी रघुबीर वधू,
धर धीर दये मग में डग द्वै।
झलकीं भरी भाल कनी जल की,
पुट सुख गये मधुराधर वै॥
फिर बूझित हैं चलनौं अब केतिक,
पिय, पर्णकुटी करिहौ कित ह्वै।
तिय की लखि आतुरता पिय की,
अँखियाँ अति चारु चलिं जल च्वै॥

❀

और जो कर्महीन होगी, दूसरों के श्रम का फल लेगी। मनुष्य अपने कर्म और निर्माण में अमर है। मृत्यु के बन्धन कर्म से छूटते हैं। निर्वाण के लिये निर्माण करना होगा। प्रकृति जन्म में जो बीज धर देती है, वे समय पर उगते हैं .... फूलते हैं ...... फलते

हैं। उनका उगना वासना है ...... फूलना प्रणय, फलना सन्तान। और यह सब गौतम के लिये भी हो चुका है। केवल वे कर्म से भागे हैं .... जो त्याग हो सकता है और कायरता भी।



कबहुँ होत सत-चन्द कबहुँ प्रगटत दुरि भाजत।
पवन-गवन-बस बिम्ब रूप जल में बहु साजत॥
मनु ससि भरि अनुराग जमुन जल लोटत डोलै।
कै तरंग की डोर हिंडोलन करति कलोलै॥
कै बाल गुड़ी नभ में उड़ी सोहत इत उत धावती।
कै अवगाहत डोलत कोउ ब्रज रमनी जल आवती॥



हृदय से बढ़कर कोई प्रचारक नहीं, समय से बढ़कर कोई शिक्षक नहीं, संसार से बढ़कर कोई पुस्तक नहीं, और ईश्वर से बढ़कर कोई मित्र नहीं।



ऊधो मन तो एकै आहि।
सो तो लै हरि संग सिधारे, जोग सिखावत काहि?
रे शठ, कुटिलवचन, रस लंपट! अबलन तन धौं चाहि।
अब काहे को लोन लगावत, विरह अनल तन दाहि।
परमारथ उपचार करत हौं, विरह व्यथा नहीं जाहि।
जाको राजरोग कफ बाढ़त, दही खवावत ताहि॥
सुन्दर स्याम सलोनी मूरति पूरि रहि हिय मांहि।
सूर ताहि तजि निर्गुन सिन्धुहि कौन सकै अवगाहि?



लोभियों का दमन योगियों के दमन से किसी प्रकार कम नहीं होता। लोभ के बल से वे काम और क्रोध को जीतते हैं, सुख का,

वासना का त्याग करते हैं, मान अपमान में समान भाव रखते हैं। अब और चाहिये क्या? जिससे वे कुछ पाने की आशा रखते हैं वह यदि उन्हें दस गालियाँ भी देता है तो उनकी आकृति पर न रोष का कोई चिह्न प्रकट होता है और न मन में ग्लानि होती है। न उन्हें मक्खी चूसने में घृणा होती है और न रक्त चूसने में दया। सुन्दर से सुन्दर रूप देखकर वे अपनी कौड़ी भी नहीं भूलते। करुण से करुण स्वर सुन कर वे अपना एक पैसा भी किसी के यहाँ नहीं छोड़ते। तुच्छ से तुच्छ व्यक्ति के सामने हाथ फैलाने में वे लज्जित नहीं होते। क्रोध, दया, घृणा, लज्जा आदि करने से क्या मिलता है कि वे करने जायें। और जिस बात में उनका कुछ लगे वह उनके काम की कैसे हो सकती है। फिर चाहे वह कष्ट-निवारण हो या सुख-प्राप्ति, धर्म हो या न्याय। वे शरीर सुखाते हैं, अच्छे भोजन, अच्छे वस्त्र आदि की आकांक्षा नहीं करते, लोभ के अंकुश से अपनी सम्पूर्ण इन्द्रियों को वश में रखते हैं। लोभियो! तुम्हारा क्रोध, तुम्हारा इन्द्रिय-निग्रह, तुम्हारी मान-अपमान-समता, तुम्हारा तप अनुकरणीय हैं; तुम्हारी निष्ठुरता, तुम्हारी निर्लज्जता, तुम्हारा अविवेक, तुम्हारा अन्याय विगर्हणीय हैं। तुम धन्य हो! तुम्हें धिक्कार है!!



बाल गोपाल खेलो मेरे तात।
बलि बलि जाऊँ मुखारविन्द की अमी वचन बोलत तुतरात॥
उनींदे नैन विशाल की शोभा, कहत न बनि आवै कछु बात।
दूर खरे सब सखा बुलावत नयन मींडी उठि धाय प्रभात॥
दुहु कर माट गह्यौ नंदनँदन छिटकी बूंद दधि परत अघात।
मानहुँ गज मुक्ता मरकत पर शोभित सुभग सांवरे गात॥

जननी प्रति मांगत मनमोहन दै माखन रोटी उठि प्रात।
लोटत पुहुमि 'सूर' सुन्दर घर चारि पदारथ जाके हाथ॥

❀

जैसे उजली धूप सबको हँसाती हुई आलोक फैला देती है, जैसे उल्लास की मुक्त प्रेरणा फूलों की पंखुड़ियों को गद्‌गद् कर देती है, जैसे सुरभि का शीतल झोंका सबका आलिंगन करने के लिये विह्वल रहता है, वैसे ही जीवन की निरन्तर परिस्थिति होनी चाहिये।

❀

सांई से लगन कठिन है भाई।
जैसे पपीहा प्यासा बूंद का, पिया पिया रट लाई।
प्यासे प्राण तड़फै दिन राती और नीर नभाई॥
जैसे मिरगा शब्द सनेही शब्द सुनन को जाई।
शब्द सुनै और प्राण दान दै, तनिको नहीं डराई॥
जैसी सती चढ़ी सत ऊपर, पिय की राह मन भाई।
पावक देख डरे व नाहिं, हँसत बैठे सदा माई॥
छोड़ो तन अपने की आसा, निर्भय ह्वै गुन गाई।
कहत कबीर सुनो भई साधो, नाहिं तो जनम नसाई॥

❀

साहित्य में जीवन ही नहीं, जीवन की वे कामनायें जो अनन्त जीवन में भी पूरी नहीं हो सकतीं, निहित रहती हैं। जीवन यदि मनुष्यता की अभिव्यक्ति है तो साहित्य में उस अभिव्यक्ति की आशा, उत्कण्ठा भी सम्मिलित है। जीवन यदि सम्पूर्णता से रहित है तो साहित्य उसके सहित है, तभी तो उसका नाम साहित्य है।

❀

क्या यह सामाजिक संवर्षण केवल रे मानव का जीवन ?
सुन्दरता आनन्द प्रेम के स्वप्न चिरन्तन क्या केवल प्रभात
के उडुगण रिक्त शरद् घन ?
क्या यह उचित कि यह सामाजिक साधारणता मूल्य
व्यक्ति का करे नियंत्रित ?
जंगम जीवन ज्वर की जड़ता करे मनुज आत्मा मर्यादित ?



जब कभी अन्तःकरण रुदन करता है, उसके स्वर में स्वर मिलाती हुई गाने लगती हूँ। उस संगीत में वेदना लय हो जाती है। हृदय की कचोट में एक सुख मिलता है, एकाकी जीवन की व्याकुलता में अनिर्वचनीय दशा बन जाती है। सहन करते रहते चिर-सहचर दुःख भी सुख-सा प्रिय बन गया है।



ध्यान रखना होगा कि रोटी का टुकड़ा यदि पेट के लिये उपयोगी है तो जीवन का गान हृदय के लिये। जो कुछ शरीर की पूर्ति करे वही उपयोगिता नहीं है। आज के संक्रान्ति काल में यदि इसे ही उपयोगिता मानते हैं तो इसके मानी यह हैं कि जीवन का वाद्य यन्त्र कहीं टूट गया है और बिना जीवन निर्माण हुए उससे कोई सुरीला स्वर नहीं निकाला जा सकता।



जीवन की दो भयंकर दुर्घटनायें हैं— पहली इच्छित वस्तु का न पाना, दूसरी उसका पा जाना।



अपने चरित्र के विषय में कुछ मत कहो, जो तुम हो वह तुम्हारे सिर पर खड़ा होकर शोर कर रहा है जिससे उसके विपरीत

कही बात सुनाई नहीं पड़ रही है।

❀

दूसरों के विषय में बुरी राय बनाने में शीघ्रता न करो, परमेश्वर भी मनुष्य को दण्ड देने के लिये उसकी मृत्युपर्यन्त ठहरता है।

❀

सीधा रास्ता जैसा सरल है ऐसा ही कठिन है। ऐसा न होता तो सब सीधा रास्ता ही लेते।

❀

हमें अपना भार हल्का होने के लिये प्रार्थना नहीं करनी चाहिये बल्कि कमर और भी मज़बूत होने की प्रार्थना करनी चाहिये।

❀

अज्ञान की भांति ज्ञान भी सरल निष्कपट सुनहले स्वप्न देखने वाला होता है।

❀

यह कोई नया आविष्कार नहीं है कि संकटों में ही हमारी आत्मा को जागृति मिलती है।

❀

सेवा ही वह सीमेण्ट है जो दम्पति को जीवनपर्यन्त स्नेह और साहचर्य में जोड़े रख सकता है।

❀

परदा होता है हवा के लिये, आंधी में पर्दे उठा कर रख दिये जाते हैं।

❀

बच्चों को बिगाड़ने के दो सरल उपाय हैं— या तो उनकी कोई इच्छा पूर्ण न कीजिये, या प्रत्येक इच्छा पूर्ण कीजिये।

❀

सांस रुकती है उसे मौत कहते हैं, गति रुकती है उसे मौत कहते हैं, हवा रुकती है वह भी मौत है। रुकना सदा मौत है, जीवन नाम चलने का है।

❀

बेवक़ूफी अक़्ल का एक दरजा है और अक़्ल बेवक़ूफी का दूसरा दरजा।

❀

आलसी मनुष्य की स्त्री विधवा समझनी चाहिये।

❀

प्रेमिका किसी की भी बदसूरत नहीं होती।

❀

क्रोध में मनुष्य का मुख खुला रहता है तथा आँखें बन्द।

❀

संसार में सबसे बुरी चीज़ दान करना है, यह मनुष्य को आलसी बना देता है।

❀

संसार में सड़क सबसे अकेली है। इसे सब छोड़ कर चले जाते हैं।

❀

बड़े आदमियों के रोग भी बड़े होते हैं। वह बड़ा आदमी ही क्या, जिसे कोई छोटा रोग हो।

❀

सुना है संगदिल की आँखों से आँसू नहीं बहते,
अगर सच है तो फिर पत्थर से चश्मे क्यों निकलते हैं।

❀

जो जनता की सरकार है— जनता द्वारा बनाई गई है, और जनता के लिये है, वह इस धरती से कभी नष्ट नहीं होगी।



दामन बचाके मुश्किले गम से गुज़र गया,
उठ उठ के देखती रही गर्दे सफर मुझे।



किसी की मेहरबानी मांगना अपनी आज़ादी बेचना है।



कोई भी व्यक्ति पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं कर सकता जब तक कि वह अपनी गल्तियों के आइने में वास्तविक कारणों को पूरी तरह जानने की कोशिश नहीं करता।



यदि तुम अवश्य ही किसी को कलंकित करना चाहते हो तो अपने भाव बोलो नहीं, लिखो, लेकिन रेत में और पानी के किनारे।



प्रतिकूल स्थिति से घबराओ नहीं, याद रखो— सफलता की पतंग अनुकूल हवा के साथ नहीं, प्रतिकूल हवा के विरुद्ध उठती है।



यदि तुम सहकारिता में विश्वास नहीं करते तो तुम उस गाड़ी की दशा पर ग़ौर करो जिसका एक पहिया उतर गया है।



उन लोगों की सलाह लो जो तुम्हारी वास्तविकता तुम्हें बतलायेंगे चाहे वह सुनकर तुम्हें कष्ट ही पहुँचे। केवल प्रशंसा ही तुम्हें बेहतरी प्रदान नहीं करेगी जो तुम्हारी आवश्यकता है।



अगर तुम महान् कार्य नहीं कर सकते तो छोटे कार्य महान् तरीक़े से करो।

❀

संसार को बताओ नहीं कि तुम यह कर सकते हो। इसे करके दिखाओ।

❀

घर कुछ ऐसी चीज़ है जो ख़रीदी नहीं जा सकती। आप एक मकान ख़रीद सकते हैं लेकिन केवल स्त्री ही इस घर को बना सकती है।

❀

बोलने से पहले अच्छी तरह सोच लो, क्योंकि तुम्हारी ज़बान से निकले हुए शब्द दूसरे व्यक्ति के दिल में तुम्हारे लिये सफलता व असफलता के बीज बो देंगे।

❀

बलवान में ही स्वतन्त्र रहने की योग्यता है। निर्बल की स्वतन्त्रता तो पागल के हाथ में डायनामाइट की छड़ी है।

❀

सोते रहने का नाम कलियुग है, आलस्य में सदैव तन्द्रिल रहने का नाम द्वापर है, अनिश्चय में खड़े रहने का नाम त्रेता है और सदैव गतिशील रहने का नाम सतयुग है।

❀

जब तक समाज में पागलख़ाने और जेलख़ाने हैं तब तक हम अपनी पाठशालाओं को शाला नहीं कह सकते।

❀

कविता दुख की बहन है, हर आदमी जो दुख सहता और रोता है क़वि है। हर आँसू एक गीत है और हृदय कविता।



कविता एक शराब है पर शैतान की नहीं, ईश्वर की।



यदि तुम बेदिली से रोटी पकाते हो तो वह कड़वी होगी।



मुसीबत जब आती है तो एक साथ आती है।



स्वर्ग में नौकरी करने की अपेक्षा नर्क में राज्य करना बेहतर है।



काम करने वाला मरने से कुछ पहले ही वृद्ध होता है।



सद्गुणों का पीछा करना— पहाड़ पर चढ़ाई करना है, अवगुणों का पीछा करना जैसे उतराई उतरना।



पुरुषों को विवाह के पहले अपनी आँखें पूरी खुली रखनी चाहियें और विवाह के बाद आधी बन्द।



ईश्वर ने एक हाथ में सेव, जहर, बिच्छू, कांटे, गुलाब और शहद लिये। जब उसने मुट्ठी खोलकर देखा तो वह स्त्री थी।



आदत या तो मनुष्य की सबसे अच्छी सेविका है या सबसे बुरी मालकिन।



युद्ध तीन सेनाओं का जन्मदाता है— अपाहिजों की सेना,

शोक-ग्रस्तों की सेना और चोरों की सेना।



अमीर वह है जिसकी आय उसके व्यय से अधिक है और ग़रीब वह है जिसका व्यय आय से अधिक है।



ग़रीब वह नहीं है जिसके पास थोड़ा है बल्कि वह जो अधिक आकांक्षा करता है।



जनता की आवाज़ ईश्वर की आवाज़ है।



मित्र की परख विपत्ति में होती है, शूरवीर की युद्ध में, ईमानदार की कर्ज़ में और स्त्री की जब धन समाप्त हो जाये।



माता पिता की गालियाँ घी और दूध की घूंटें होती हैं।



अपनी भूल को स्वीकार करने में हुई देर कोई देर नहीं है।



पैसा चीज़ ख़राब है, उसका लेन देन आपस में मनमुटाव पैदा कर देता है।



जिसने अपनापन खोया उसने सब कुछ खोया।



पाप में फँस जाना मनुष्य का सा काम है,
पाप में रमे रहना शैतान का सा काम है,
पाप के लिये खेद प्रकट करना देवता का सा काम है,
पाप को छोड़ देना ईश्वर का सा काम है।



संसार में जितने पाप हैं उन सबसे बढ़कर पाप मनुष्य की दया के ऊपर अत्याचार करना है।



पाप के पंजों में फँसा हुआ मन पतझड़ का पत्ता है जो हवा के ज़रा से झोंके में गिर पड़ता है।



दूसरे के पाप को देखकर दंड देने से पहले अपने पाप को देखो।



जिन पापों को लोग करना चाहते हैं उन्हें सुनना कोई पसन्द नहीं करता।



मेरी दृष्टि में कृतघ्नता से बढ़कर संसार में दूसरा कोई पाप नहीं है।



हम पुराने रूपवादी (फार्मेलिस्ट) आलोचकों के सिद्धान्तों से कभी भी आज की नयी रचनाओं की आलोचना नहीं कर सकते। नये कलाकारों के साथ साथ हमें नये आलोचकों— गतिशील जीवन के वास्तविक आलोचकों— को भी बनाना है, जिससे हमारी रचनाओं की क्रियात्मक आलोचना हो सके और हम सही रास्ते पर उन्नति कर सकें।

प्रगतिशील आलोचकों को समाजवादी कला की अन्धाधुन्ध प्रशंसा भी नहीं करनी चाहिये, वरना कला की सच्ची आलोचना न मिल सकने के कारण उसकी उन्नति नहीं हो सकती। आत्म-आलोचना का सिद्धान्त किसी कलाकार को न भूलना चाहिये।

जनता की ज़िन्दगी और उसके नवीन संघर्षों को नये यथार्थवाद की कसौटी पर प्रत्येक कला के नमूने को परखना है।



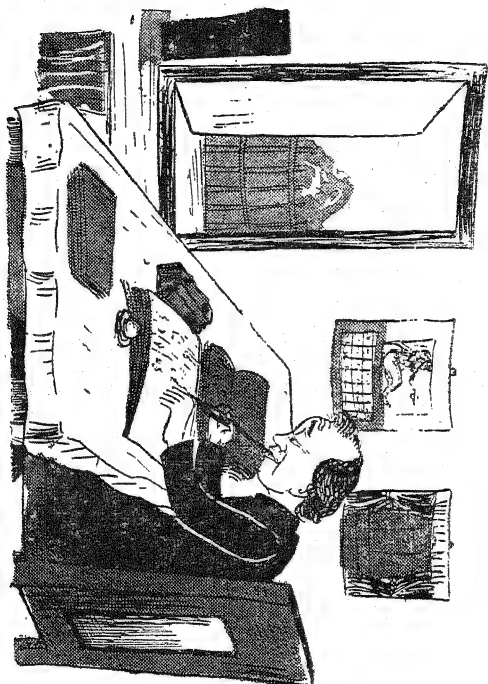
कोई कितना ही चतुर क्यों न हो, किन्तु ऊँचे स्तर के यथार्थ चित्रण के बिना, और किन्हीं अनावश्यक बातों में से आवश्यक कथानक-सत्य की पकड़ के बिना, एक कथाकार महान कला की ओर अग्रसर नहीं हो सकता। यह वस्तु सत्य अशरीरी, एक समान, ठहरा हुआ और अपने में पूर्ण कभी नहीं हो सकता। यदि ऐसा होता तो हमारी यह धरती गतिहीन और ठहरी हुई हो जाती और किसी भी तरह की उन्नति, विकास या परिवर्तन न होते। इसलिये इस वस्तु सत्य तक पहुँचने का केवल एक ऐतिहासिक तरीक़ा ही हो सकता है जिसके द्वारा समस्त अतीत को समोकर वर्त्तमान और भविष्य को व्यक्त किया जा सकता है।



लेखक में कुतूहल और जिज्ञासा आवश्यक है उसे जीवन का गहरा और निकट अध्ययन करना होगा। उसे यथार्थ के भीतर अपनी सारी बौद्धिक शक्ति को लेकर डुबकी लगानी होगी। उसे चीज़ों की तह में पहुँचना होगा। उसे नवीन के अंकुरों को पहिचानना होगा, और अपने हृदय के संवेग के साथ प्राचीन के विरुद्ध नवीन के संघर्ष को दिखाना होगा।



किसी प्रसिद्ध पत्रिका के साहित्य सम्पादक के पास एक पुस्तक आलोचना के लिये आयी। तीन सौ पृष्ठ वाली पुस्तक में लेखक ने आत्मकथा लिखी थी। साहित्य सम्पादक ने पुस्तक की आलोचना में लिखा— "सचमुच लेखक ने सम्पूर्ण जीवन आनन्द, उल्लास और संतोष के साथ व्यतीत किया। पृष्ठ ८९, १५७, २४३,





२४४, २५४ और २५७ में वह लगभग बेहोश हो गये। पृष्ठ २६५ में उनको फालिज मार गया। पृष्ठ ७२ में उनकी बोली बन्द हो गई। पृष्ठ २७५ में वह डूबते-डूबते बचे। पृष्ठ २३ और १२१ में वह आत्म-हत्या करना चाहते थे। पृष्ठ २०३ में उनकी बड़ी इच्छा थी कि वह मर जाते। पृष्ठ ३८ में वह क़रीब-क़रीब मर ही गये थे। उसी पृष्ठ में वह मरने के लिये घर चले गये। पृष्ठ ४१ में वह लगभग मर गये। पृष्ठ १६५ में वह सचमुच मर गये। पृष्ठ १६६ में उनकी सांस रुक गई। पृष्ठ २५५ में वह क़तई तौर से मर गये और पृष्ठ २७३ में उनको पता चला कि उन्हें जीवन में अभी इतना काम बाक़ी है कि वह सो कर अपना एक घण्टा भी ख़राब नहीं करना चाहते। इससे अधिक लिखना व्यर्थ है!"



उस विषय पर तुम हरगिज़ न लिखो जो स्वयम् तुम्हारे लिये अरोचक है। अगर एक किताब लिखने का विचार तुम्हारे मन में उठता है, लेकिन तुम यह महसूस नहीं करते कि तुम्हें ज़रूर ज़रूर वह किताब लिखनी है, तो बेहतर है कि तुम वह किताब न लिखो।



जीवन मेरे लिये छोटा-मोटा दीपक नहीं है; बल्कि वह एक बड़ी मशाल है, जो इस समय मेरे हाथ में दी गई है। और मैं चाहता हूँ कि इससे पहिले कि मैं उसे अपनी अगली पीढ़ी को दूँ, वह अधिक से अधिक प्रकाश बखेर ले।



जो ईश्वर इस संसार में एक रोटी का टुकड़ा नहीं दे सकता वह स्वर्ग में दुनिया भर के सुख देगा, इसकी कौन सी गारंटी है?



मनुष्य के श्रम का पुरस्कार उससे प्राप्त धन नहीं है, बल्कि यह

कि वह मनुष्य उस श्रम से क्या बन सकता है।



मुझे आगामी कल से डर नहीं, क्योंकि मैं पिछला कल देख चुका हूँ और आज से प्यार करता हूँ।



चीत्कार और रक्त के बगैर जन्म होता ही नहीं।



जीवन मनुष्य की सबसे बड़ी सम्पत्ति है, और मनुष्य-जीवन एक ही बार मिलता है। मनुष्य को ऐसे रहना चाहिये कि उसे इस बात का पश्चात्ताप न करना पड़े कि उसका दिन यों ही बीत गया। उसे अपने गन्दे, निष्प्रयोजन अतीत के लिये शर्मिन्दा न होना पड़े, और मरने के समय वह कह सके, मेरा सारा जीवन और मेरी सारी शक्ति संसार के सबसे पवित्र कार्य, मानव जाति की भलाई, में लगा था।



एक घण्टे का परिश्रम एक महीने के रोने-झींकने से अधिक कारगर होता है।



मानव शब्द से ही महिमा की एक ध्वनि निकलती है।



लोगों की धारणा है कि यदि अख़बार का दाम घट कर दो आने से एक आना हो जाय, अगर मज़दूर की मज़दूरी बारह आने से घट कर छः आने हो जाय, अगर गेहूँ का दाम आठ आने से चार आने सेर हो जाय, तो उसी हिसाब से वे ग़रीब हो जाते हैं। इसके उलटे, अगर अख़बार का दाम दो आने के बजाय चार आने हो जाय, मज़दूर की मज़दूरी बारह आने से डेढ़ रुपया हो जाय, अगर गेहूँ

की क़ीमत छः आने से बारह आने सेर हो जाय तो हम अमीर हो जाते हैं। अगर मकान का दाम पाँच हज़ार से बढ़कर दस हज़ार हो जाय, अगर एक प्याली चाय का दाम एक आने से बढ़कर दो आने हो जाय, तो बहुत से लोगों के अनुसार हम अमीर होने लगते हैं। परन्तु यह धारणा ग़लत है। अगर दाम के दूना बढ़ने से हम दूने अमीर हो जायं, तो हम सौ गुना और हज़ार गुना बढ़ाकर क्यों न सौगुना या हज़ारगुना अमीर हो जायँ। और, इस प्रकार हम सब लोग लखपति और करोड़पति हो जायँ।

लेकिन यह अर्थशास्त्र ग़लत है। चीज़ों के दाम बढ़ने से कोई अमीर नहीं होता। बल्कि अधिक वस्तुओं का उत्पादन करने और अधिक व्यक्तियों को काम देने से सारा राष्ट्र अमीर बन सकता है। यह धारणा निर्मूल है कि दाम दूना कर देने से राष्ट्रीय धन भी दूना हो जाता है।

❀

साहित्यकार में जितनी यह सौन्दर्यानुभूति जाग्रत और सक्रिय होती है, उसकी रचना उतनी ही प्रभावशाली होती है। प्रकृति-निरीक्षण और अपनी अनुभूतियों की तीक्ष्णता की बदौलत उसके सौन्दर्य-बोध में इतनी तीव्रता आ जाती है कि जो कुछ असुन्दर है, अभद्र है, मनुष्यता से रहित है, वह उसके लिये असह्य हो उठता है।

❀

यहाँ मैं कुछ उन शब्दों की याद आपको दिलाना चाहूँगा, जिनका उपयोग आजकल बिल्कुल नहीं किया जाता। वे शब्द कर्त्तव्य, प्रेरणा और सेवा जैसे हैं। सचाई यह है कि ये शब्द न तो हास्यास्पद हैं न खोखले। इन शब्दों में लेखक के कर्त्तव्य का पूरा अर्थ है— लेखक वह व्यक्ति है, जो अपने छोटे जीवन में भी कई

जीवन जीता है, जिसका कर्त्तव्य जनता के दिलों को अपनी कष्ट-साधना से गरमाना है, इन्सान के अन्तः-संसार को प्रकाशमान करना है और पाठकों को अधिक स्पष्टता से देखने और अधिक पूर्णता और ऊँचाई के साथ जीने में सहायता करना है।

❀

ख्याति के मन्दिर में धनवान मूर्खों, छटे हुए बदमाशों और मानव जाति के हत्यारों के लिये सदैव स्थान सुरक्षित रहता है।

❀

जो व्यक्ति ख्याति प्राप्त करने के लिये ही जीवित रहता है, उसे मैं अच्छा नहीं समझता। मैं ऐसा आदमी चाहता हूँ, जो अपने अच्छे जीवन के कारण स्वतः ख्याति प्राप्त कर ले।

❀

पृथक् सभ्यताओं का युग बीत गया। अब हम बीते इतिहास को दुहरा नहीं सकते। हमें ऐसा करना भी नहीं चाहिये। हमें अपनी सारी शक्ति लगाकर नई अन्तर्राष्ट्रीय सभ्यता का निर्माण करना होगा। परन्तु अधिकारों और कर्त्तव्यों की समता के आधार पर ही इस नवीन सभ्यता का निर्माण हो सकता है।

❀

वीर वे ही नहीं हैं, जो लड़ाई के मैदान में तलवार लेकर लड़ते हैं। पारिवारिक संघर्ष में जूझकर विजय प्राप्त करने वाले भी सच्चे वीर होते हैं।

❀

मैं नारी की पूजा करता हूँ, इसलिये कि वह जगत-जननी है। जो समाज नारी की अवहेलना करता है, वह न स्वराज्य प्राप्त कर सकता है, न उसका सांस्कृतिक विकास हो सकता है। यह बात मैं

गम्भीर अध्ययन और विश्लेषण के बाद पूरी जिम्मेदारी से कह रहा हूँ।



मैं न तो राज्य की कामना करता हूँ, न स्वर्ग ही चाहता हूँ, न यही कि दुबारा जन्म लेने से छुटकारा पा जाऊँ। मेरी एकमात्र कामना यही है कि दुर्दशाग्रस्त प्राणियों की पीड़ा का नाश हो, सब सुखी हों, सभी स्वस्थ सबल रहें, सब लोग भले दिन देखें, और कष्ट एवं क्लेश किसी के हिस्से में न पड़े।



यदि तुम्हारी पुकार सुनकर भी कोई साथ नहीं आता, तो तुम अकेले चलो, अकेले चलो, अकेले चलो!



सफलता भाग्य या प्रतिभा की चीज नहीं, वह तो पूरी तैयारी और दृढ़ निश्चय से ही प्राप्त हो सकती है।



जिसने अपनी आत्मा खो दी, उसके पास कुछ भी शेष नहीं रहा।



उद्देश्य की एकाग्रता सफलता का रहस्य है।



अपनी योग्यता पर अविश्वास क्यों करते हो? जिस काम में तुम्हारा मन लगे, उसी में लगे रहो। इससे यह प्रमाणित होगा कि तुम कम से कम एक काम में तो सफल हो सकते हो।



जो सचमुच सत्वृत्तियों वाला मनुष्य है, वह अपनी जिम्मेदारी पूरी करता है। जिस व्यक्ति में ये सत्वृत्तियाँ नहीं हैं, वह केवल

अधिकार, अधिकार चिल्लाया करता है।



ज्योंही हम सभ्यता के निर्माण के आन्दोलन में भाग लेते हैं, हमारी शारीरिक और मानसिक एकान्तता दूर हो जाती है और हम विश्व मानव समाज का एक अंग बन जाते हैं।



पाप के बल पर मनुष्य सम्पन्न हो सकते हैं, अपने शत्रु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं, उनकी सारी इच्छायें पूरी हो सकती हैं। परन्तु ऐसे आदमी मूलतः नष्ट ही होते रहते हैं।



कभी भविष्यवाणी न कीजिये। यदि आपकी भविष्यवाणी ग़लत निकल गई, तो हर कोई याद रखेगा, और यदि ठीक निकली तो किसी को याद न रहेगी।



दूसरों से बाज़ी लगाने में हारने की सम्भावना रहती है। किन्तु जो स्वयम् अपने से बाज़ी लगाता है वह हमेशा जीतता है।



सौन्दर्य के लिये शादी करना मन्दा सौदा है, क्योंकि कोई भी आदमी, जो आपकी पत्नी को देखता है, उससे उतनी ही प्रेरणा पा लेता है, जितनी आपको मिलती है।



अधिकतर लोग इसी से संतोष कर लेते हैं कि वे अपने पड़ौसी से बुरे नहीं हैं। परन्तु यह आत्मसंतोष नहीं, जीवन का सबसे बड़ा धोखा है।



हर आदमी कोई न कोई हास्यास्पद या मूर्खतापूर्ण कार्य अवश्य करता है, और उसे प्रायः उन्हीं कार्यों को याद करने में सबसे अधिक आनन्द आता है।



दवा में अधिक हँसी-मज़ाक नहीं चल सकता, लेकिन हँसी-मज़ाक दवा का काम करते हैं।



जो लेखक अपने पाठक को अधिक ज्ञान प्रदान करता है और उसका समय कम लेता है, वही बड़ा लेखक है।



लोग निन्दा के तीर फेंकते हैं। वे तीर ज़मीन पर आ गिरते हैं। उन्हें हम उठा लेते हैं और अपनी छाती में भोंकने लगते हैं। फिर कहते हैं कि हमें तीर लगा। इसी तरह दूसरों से की हुई अपनी निन्दा के शब्द हम दूसरों के सामने उच्चारण करते हैं और इसी तरह हम अपने दुःख की वृद्धि करते हैं।



यदि स्वर्ग कोई स्थान है, तो प्रेम ही वहाँ जाने का मार्ग है।



परमात्मा प्रेम का भूखा है।



जो प्रगट न किया जाय, वह सबसे पवित्र है।



सबसे उत्तम विजय प्रेम की है, जो सदा के लिये विजितों के हृदय को बाँध देती है।



जो उपकार जताने का इच्छुक है, वह द्वार खटखटाता है। जिसके हृदय में प्रेम है, उसके लिये द्वार खुले हैं।



मौन रूपी व्याख्यान की महत्ता इतनी बलवती और इतनी अर्थवती और प्रभावती है कि उसके समान क्या मातृभाषा, क्या साहित्य भाषा और क्या अन्य देश की भाषा, सबकी सब तुच्छ प्रतीत होती हैं। अन्य कोई भाषा दिव्य नहीं केवल आचरण की मौन भाषा ही ईश्वरीय है।



हम आसमान के तारे तोड़ना चाहते हैं, मगर काम आँखों के तारे भी नहीं देते। हम पर लगाकर उड़ना चाहते हैं, मगर उठाने से पाँव भी नहीं उठते। हम पालिसी पर पालिश करके उसके रंग को छिपाना चाहते हैं, पर हमारी यह पालिसी हमारे बने हुए रंग को भी बदरंग कर देती है।



फूल चुनने के लिये ठहरो मत, आगे बढ़े चले चलो, तुम्हारे मार्ग में निरंतर फूल खिलते रहेंगे।



चन्द्रमा अपना प्रकाश सम्पूर्ण गगन में डालता है, परन्तु अपना कलंक वह अपने ही तक रखता है।



मनुष्य मनुष्य की गुलामी करे, यह क्या है? यह शरीर और आत्मा का तिरस्कार है।



सदा सिर पर रखे हुए और स्नेह से पाले हुए बाल भी एक दिन रंग बदल ही देते हैं।







यदि तुम सत्य का आवाहन करते हो, तो पहले यह ढूँढ निकालो कि तुम्हारे अन्दर कौन सी चीज़ है जो मिथ्या है, और उसका सतत त्याग करो।



मृत्यु में आतंक नहीं होता, मृत्यु तो एक प्रसन्नतापूर्ण निद्रा है जिसके पीछे जागरण का आगमन होता है।



उद्योगहीन और कार्यहीन मनुष्यों के मन में शैतान का निवास रहता है। हाथ पर हाथ धर कर बैठे रहना मनुष्य के हेतु धर्म के विरुद्ध है। मनुष्य का मन पनचक्की के समान है, जब उसमें डालते जाओगे, तब वह गेहूँ को पीसकर आटा बना देगी। परन्तु जब उसमें गेहूँ न डालोगे तब वह स्वयम् अपने आपको पीसकर क्षीण बना डालेगी। अतः हमारा यही कर्त्तव्य है कि हम कुछ न कुछ अच्छा व्यवसाय अपने लिए पसन्द करें। यह व्यवसाय हमारे मन, इच्छा, कार्यशक्ति और स्वभाव के अनुकूल होना चाहिए।



जीवन के निश्चित बिन्दुओं को जोड़ने का कार्य हमारा मस्तिष्क कर लेता है ; पर इस क्रम से बँधी परिधि में सजीवता के रंग भरने की क्षमता हृदय में ही सम्भव है।



केवल विचारों की दुनिया में रहना असम्भव को सम्भव समझने का प्रयास करना है। यही बात चरित्र के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। यदि विचार और चरित्र का समन्वय हो जाय, तो ऐसी बातें हो सकती हैं, जिन पर हज़ारों वर्षों तक संसार विस्मय करता रहेगा।



जब आदमी का कोई बस नहीं चलता, तो अपने को तक़दीर पर ही छोड़ देता है। न जाने यह धाँधली कब तक चलती रहेगी? जिसे पेट की रोटी मयस्सर नहीं, उसके लिए मरजाद और इज्जत सब ढोंग हैं।



अपना भाग्य खुद बनाना होगा। अपनी बुद्धि और साहस से इन आफ़तों पर विजय पाना होगा। कोई देवता, कोई गुप्त शक्ति मदद करने न आएगी।



कोई बाहरी ताक़त इन्सान को नीचे नहीं गिरा सकती। इंसान को गिराने वाला इंसान स्वयम् है।



गुनाह छिपा नहीं रहता, वह मनुष्य के मुँह पर लिखा रहता है।



नीम का स्वाद कटु है और गंध मधुर। ऐसा ही प्रेम है, जिसका रंग सुन्दर है और स्पर्श कठोर।



कवि का दर्शन जीवन के प्रति उसकी आस्था का दूसरा नाम है।



हे अर्जुन! साधनरहित पुरुष के अन्तःकरण में श्रेष्ठ बुद्धि नहीं होती। उसके अन्तःकरण में आस्तिक भाव भी नहीं होता और बिना आस्तिक भाव होने वाले पुरुष को शान्ति भी नहीं होती। फिर, शान्तिरहित पुरुष को सुख कैसे मिल सकता है?



धर्म अच्छा है, साधु है। किन्तु धर्म क्या है? पाप से अपने को बचाना, सुकृतों का करना, दया, दान, सत्यता और शुद्धता।



इस रूपक को समझो! गन्दे कपड़े पहनने वाला आदमी धूल में बैठ सकता है, लेकिन जिसने स्वच्छ कपड़े पहन रखे हैं वह धूल में कभी नहीं बैठता।



संसार की समस्त मनोहर भावनायें एक सुन्दर कर्म के सामने कुछ भार नहीं रखतीं।



ग्यारह वर्ष की आयु— मेरे पिता के क्या कहने! वे हर चीज़ को जानते हैं।

सोलह वर्ष की आयु— सचमुच मेरे माता-पिता उतने बुद्धिमान नहीं हैं जितना मैं सोचा करता था। वे हर चीज़ को नहीं जानते।

उन्नीस वर्ष की आयु— मेरे माता-पिता यह सोचते हैं कि वे हमेशा ठीक कहते हैं, लेकिन जितना मैं अभी तक जान पाया हूँ वे उससे भी कम जानते हैं।

बाइस वर्ष की आयु— मेरे माता-पिता युवक-युवतियों को नहीं समझ सकते। नई पीढ़ी के समान कोई चीज़ उनके पास नहीं।

पैंतीस वर्ष की आयु— सच बात यह है कि मेरे माता-पिता कई बातों में ठीक थे।

पचास वर्ष की आयु— मेरे माता-पिता कितने शानदार मनुष्य थे। उनका साफ़ दिमाग़ था और वे ठीक समय पर आवश्यक काम करते थे। मेरे प्यारे माता-पिता !



समाज परिवर्त्तनशील है। उसमें नित्य नई बातें होनी आवश्यक हैं। पुरानी बातें अनुपयोगी हो जाती हैं, उनका असली मतलब हम भूल जाते हैं या उनका स्वरूप बदल जाता है। उनका ठाठ तो बना रहता है, परन्तु प्राण निकल जाता है। जो रीतियाँ या प्रथाएँ अनावश्यक हैं, उन्हें दूर करना ही होगा।



प्रतीत होता है कि मानव सफल तो स्वयम् होना चाहता है, मगर विफलता को भगवान की इच्छा बनाना चाहता है और इस तरह विफलता का सारा दोष उस अन्तर्यामी पर थोपना चाहता है जिसके द्वारा हुई सफलता का सारा श्रेय स्वयम् ही उठाना चाहता है।



जीवन के चन्द दिन ही जीवन की अवधि हैं। यदि इतने दिनों को भी निष्क्रियता के आवरण में ढक कर समय के प्रवाह से बचाये रहेंगे तो एक दिन आयेगा जब घूँघट उठाने पर घूँघट ही रह जायेगा और हमारा पता न होगा।



आज और कल में केवल इतना ही अन्तर नहीं है कि आज जा रहा है और कल आ रहा है, बल्कि सबसे बड़ा अन्तर तो यह है कि आज हमारा है और कल पता नहीं किसका।



मनुष्य अपनी विशेषताओं को जितना रगड़ता, जितना पैना करता चलता है, वह उतनी ही चमकती जाती हैं, और उन्हें जितना संभाल संभाल कर सुरक्षित रखता जाता है, वह उतनी ही फीकी पड़ने लगती हैं।



गुणों के विकास के लिये जो भी समय मिले, उसका पूरा उपयोग होना चाहिये। जब वह विकसित हो जायेंगे तब वह अपना मार्ग स्वयम् कर लेंगे और उन्हें लेकर हम जिस मार्ग की तलाश करेंगे, तब वह अनायास ही हमारे समक्ष आ जायेगा।



प्रगतिवादियों को आज तक किसी ने नहीं रोका और यदि उन्हें रुकना ही पड़ा तो केवल अपनी प्रगति विरोधी उस स्थिति के कारण जो किसी का मार्ग अवरुद्ध करके ही प्रगति के भ्रम में डाल देती है।



हमारी अच्छाइयाँ ही हमारे भीतर स्थित भगवान के अनेक रूपों में प्रगट होती हैं और यदि उन रूपों की अभिव्यक्ति संभव नहीं होती तो हमें मानना पड़ेगा कि हम घर में प्रभु की प्रतिमा तो रखते हैं लेकिन सात पर्दे में छिपाकर।



मानव का सच्चा विकास ही यह है कि वह सांसारिक बाधाओं पर विजय प्राप्त करता हुआ आगे बढ़े और दूसरों को बढ़ाये। रुकना या घटना श्रमशीलों का काम नहीं क्योंकि वह रुकने को मौत तथा चलने को ही जीवन मानते हैं।



'हे सागर ! तेरी भाषा क्या है ?'

'अनन्त प्रश्न की भाषा।'

'हे आकाश! तेरे उत्तर की भाषा क्या है?'

'अनन्त मौन की भाषा।'



ईश्वर मनुष्य से कहता है— मैं तुम्हें प्राण देता हूँ। इसी कारण तुम्हें त्रस्त भी करता हूँ। मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, इसी से दण्ड भी देता हूँ।



बल ने वसुधा से कहा— तुम मेरी हो।

वसुधा ने उसे बन्दी बनाकर अपने सिंहासन पर रखा।

प्रेम ने वसुधा से कहा— मैं तेरा हूँ।

वसुधा ने उसे अपने घर में स्वच्छन्दता से आने जाने की आज्ञा दे दी।



जब आशाएँ निष्फल हो जाती हैं, जीवन प्रकाश की अपेक्षा स्वयम् को अन्धकार में गिरता-पड़ता अनुभव करने लगता है, और जब भविष्य का कोई आधार नज़र नहीं आता तब हम भगवान को याद करते हैं। क्यों? जब हमें प्रभु शक्ति पर इतना विश्वास है तो क्यों न हम प्रारम्भ से ही उसी विश्वास पर तथा उसके ही आधार पर अपना काम करें और परिणाम को उसी की इच्छा समझ कर ग्रहण करें?



सुख दुःख से रहित कोई वस्तु नहीं है, क्योंकि वे सर्वत्र दिखाई पड़ते हैं।



श्वान, सूकर और गधे भी नित्य खाते पीते और शरीर का

निर्वाह करते हैं, अतएव मनुष्य की बलिहारी इसी में है कि वह आगे कुछ करे अन्यथा उसमें तथा पशु में अन्तर ही क्या रह जायगा।

❀

जो अपना अपराध छिपाता है, वह उसे दूना ही करता है।

❀

मुझे बताओ, तुम्हारे पास इन घरों में क्या है? और वह क्या है, जिसकी तुम दरवाज़े बन्द रखकर रखवाली करते हो? क्या वहाँ शान्ति है, तुम्हारी शक्ति को प्रकाशित करने वाली प्रशान्त प्रेरणा है? क्या वहाँ स्मृतियाँ, वे चमकती हुई मीनारें हैं, जो मन के शिखरों पर फैली होती हैं? क्या वहाँ सौंदर्य है, जो हृदय को काठ और पत्थर की बनी हुई वस्तुओं से खींच कर पावन पर्वत पर ले जाता है? बताओ, हैं तुम्हारे घर में ये चीज़ें? या वहाँ केवल भोग और भोग की लिप्सा है, जो आहिस्ता-आहिस्ता घर में मेहमान बनकर घुसती है, फिर मेज़बान बन बैठती है और अन्त में मालकिन? हे अनन्त आकाश की सन्तानो! तुम उन मक़बरों में मत रहो, जो मुर्दों ने जीवितों के लिए बनाए हैं।

❀

धनी व्यक्ति परमात्मा को अपनी जेब में रखकर ले जाता है, लेकिन ग़रीब बेचारा उसे दिल में रखता है।

❀

साधक की हँसी में सौन्दर्य, गाम्भीर्य और तेजस्विता होती है, जिसको सुनकर लोगों में विशेषता, आनन्द और स्फूर्ति आती है।

❀

सब पापों के नष्ट होने पर बुद्धि निर्मल हो जाती है, और वही ज्ञान है।



दोष करने की अपेक्षा पर-दोष-दर्शन और दोषों का चिन्तन अधिक पतन करने वाला होता है।



विवेक-बुद्धि, आत्मगौरव, शान्ति, सत्य और नम्रता सहित मानवीय आचरण शिष्ट और सुसंस्कृत कहा जाता है।



गुण रूप को सजाता है, शील कुल की शांति है, तथा सिद्धि विद्या को सुशोभित करती है।



क्रोध पाप तथा नर्क का द्वार है।



भय मनुष्य की अपने मन की छाया है, उसका कोई अस्तित्व नहीं होता।



क्रोध यम है, तृष्णा वैतरणी, विद्या कामधेनु और सन्तोष नन्दन वन।



कोयल की शोभा स्वर, स्त्रियों की शोभा पातिव्रत, पुरुषों की शोभा विद्या और तपस्वियों की शोभा क्षमा है।



सहिष्णुता शिष्टाचार की पृष्ठभूमि है और स्वाधीनता का अर्थ उद्दण्डता नहीं।



दु:ख के घन तम से सुख का सूक्ष्म दीप भी परम आह्लादकारी

होता है और सुख से दुख को प्राप्त हुआ मनुष्य तो जीता हुआ भी मरे के समान है।



घड़ी भर के बाद जो अवश्यम्भावी वियोग होता है उसे देख कर हम लोग अधीर हो जाते हैं। परन्तु इस सराय का काम हमारी ही उपेक्षा करते हुए वैसी ही हलचल के साथ चलता रहता है।



परीक्षा तीन वर्णों से बना हुआ ऐसा शब्द है जिससे ब्रह्मा, विष्णु और महेश देवता भी भयभीत रहते हैं। बड़े बड़े तपस्वियों और साधकों को भी इसने अपने स्थान से हिला दिया है। नारद और विश्वामित्र जैसे अनेक महामुनियों को इसने एक ही बार नहीं अनेक बार पछाड़ कर संसार को अपनी शक्ति का दर्शन दिया है। यह वह शैतान है जिसकी शैतानी से स्वर्ग भी परेशान है, यह वह भूत है जिससे जीवित भी दूर से हाथ जोड़ते हैं और यह वह भयंकर रोग है जो प्रत्येक को दबोच लेता है। संसार पर इसका एकछत्र साम्राज्य स्थापित है। आबाल-वृद्ध-वनिता सभी इसके आगे सिर झुकाकर नाक रगड़ने में ही अपनी कुशल समझते हैं। जिसने इसके सामने सिर उठाया वह निश्चित ही धोखा खा गया। इस झंझा के वेग को वृक्षों जैसा नमन करना ही बुद्धिमानी और दूरदर्शिता कहलाता है और विरोध करना नासमझी। फिर भी न जाने क्यों संसार में यह इतनी प्रिय और आवश्यक समझी गई है कि जीवन को ही परीक्षा मान लिया गया है। जीवन के प्रत्येक अङ्ग में परीक्षा की प्रतिष्ठा करके न जाने मानव ने किस स्वर्णिम स्वप्न का निर्माण किया है। पिता पुत्र के गुणों की परीक्षा लेता है, स्वामी अनुचर की चतुराई की परीक्षा लेता है, मित्र मित्रता की परीक्षा

लेता है, राजा राजभक्ति और देशभक्ति की परीक्षा लेता है और गुरु अपने शिष्यों के ज्ञान की परीक्षा करने पर उन्हें अगली कक्षा के योग्य घोषित करता है। मेरी दृष्टि में यह अन्याय है, सरासर अन्याय। मैं जब विद्यार्थियों की मलिन मुखकान्ति, आरक्त नेत्र और चिन्तारेखाओं से पूर्ण उनके ललाटों को देखता हूँ तब उन पर मुझे विशेष दया आती है। यह करुणा तो उनकी प्रश्नपत्र के लिये व्यथित उत्कंठा देखकर और भी बढ़ जाती है। गुरुजी हैं कि विद्या-भास्कर के समान सारा तेज उसी प्रश्नपत्र में दिखा देना चाहते हैं। वे भूल जाते हैं कि उनकी भी कभी परीक्षा हुई थी, वे भी अनेकों निद्राविहीन रातें व्यतीत कर परीक्षा में सम्मिलित हुये थे और उस परीक्षा में सफलता पाने के लिये बजरंग का न मालूम कितना सिन्दूर मस्तक में लगाकर अनेक मन्नतें मानते थे। वे ही गुरुजी आज निरीक्षक बनकर उन नवमुकुलित कुसुमवत् परीक्षार्थियों का निरीक्षण करते समय अत्यन्त कठोर हो जाते हैं, यह देखकर मेरी बुद्धि आश्चर्य में पड़ जाती है। इसे मैं बदले की भावना या प्रतिहिंसा की भावना ही मानता हूँ।



कवि को तमाशाई बनकर बाहर से उछलकूद करने की आवश्यकता नहीं है, उसे जीवन के रंगमंच का प्रतिभाशाली नायक बनकर अपना कार्य करना पड़ता है। जब तक कवि जीवन-सरिता में अवगाहन न कर बाहर से उसके घाटों की शोभा देखता रहेगा, तब तक उसकी रचना न संगत ही हो सकेगी और न महत्त्वपूर्ण। घाटों की शोभा देखने से उसे इन्द्रिय-सुख भले ही प्राप्त हो, पर वह सुख न मिलेगा जिसे आत्म-प्रसाद या पर-निर्वृत्ति कहते हैं।



आकाश-जाल सब ओर तना ।
रवि तन्तुवाय है आज बना ॥
करता है पद-प्रहार वही ।
मक्खी-सी भिन्ना रही मही ॥

❀

यथार्थवाद यदि हमारी आँखें खोलता है, तो आदर्शवाद हमें उठाकर किसी मनोरम स्थान में पहुँचा देता है। लेकिन जहाँ आदर्शवाद में यह गुण है, वहाँ इस बात की भी शंका है कि हम ऐसे चरित्रों को न चित्रित कर बैठें जो सिद्धान्तों के मूर्तिमात्र हों—जिनमें जीवन न हो। किसी देवता की कामना करना मुश्किल नहीं है, लेकिन उस देवता में प्राण-प्रतिष्ठा करना मुश्किल है।

❀

घुमड़ उठो आषाढ़ उमड़ कर पावन सावन, बरसो।
भाद्र-भद्र, आश्विन के चित्रित हस्ति, स्वातिधन, बरसो॥
सृष्टि-दृष्टि के अंजन रंजन, ताप-विभंजन, बरसो।
व्यग्र उदग्र जगज्जननी के अपि अग्रस्तन, बरसो॥
गत सुकाल के प्रत्यावर्तन, हे शिखिनर्तन, बरसो।
चिन्मय बनें हमारे मृण्मय, पुलकांकुर बन, बरसो॥

❀

स्मृति और अनुमान आदि केवल मनोवेगों के सहायक हैं अर्थात् प्रकारान्तर से वे मनोवेगों के लिये विषय उपस्थित करते हैं। ये कभी तो आप से आप विषयों को मन के सामने लाते हैं, कभी किसी विषय के सामने आने पर ये उससे सम्बन्ध (पूर्वापर या कार्यकारण-सम्बन्ध) रखने वाले और बहुत से विषय उपस्थित करते हैं जो कभी तो सबके सब एक ही मनोवेग के विषय होते हैं और उस

प्रत्यक्ष विषय से उत्पन्न मनोवेग को तीव्र करते हैं, कभी भिन्न भिन्न मनोवेगों के विषय होकर प्रत्यक्ष विषय से उत्पन्न मनोवेग को परिवर्तित वा धीमा करते हैं।



सबने मृदु मारुत का दारुण, झंझा-नर्तन देखा था।
संध्या के उपरान्त तमी का विकृतावर्तन देखा था॥
काल-कीट कृत वयस-कुसुम का क्रम से कर्तन देखा था।
किन्तु किसी ने अकस्मात् कब, यह परिवर्तन देखा था॥



मानव कब दानव से भी दुर्दान्त, पशु से भी बर्बर और पत्थर से भी कठोर, करुणा के लिए निरवकाश हृदय वाला हो जायेगा, नहीं जाना जा सकता। अतीत सुखों के लिए सोच क्यों, अनागत भविष्य के लिए भय क्यों, और वर्तमान को मैं अपने अनुकूल बना ही लूँगा, फिर चिन्ता किस बात की?



सैकत-शय्या पर दुग्ध धवल, तन्वंगी गङ्गा ग्रीष्म विरल
लेटी है श्रान्त, क्लान्त, निश्चल।
तापसबाला गङ्गा निर्मल शशिमुख से दीपित मृदु करतल,
लहरें उर पर कोमल कुन्तल॥
गोरे अंगों पर सिहर सिहर कर लहराता तार तरल सुन्दर,
चंचल अंचल सा नीलाम्बर।
साड़ी सिकुड़न सी जिस पर, शशि की रेशमी विभा से भर
सिमटी है वर्तुल मृदुल लहर॥



आर्य चाणक्य और चन्द्रगुप्त— ये भी यवनों के साथी। जब

आँधी और करका-वृष्टि, अवर्षण और दावाग्नि का प्रकोप हो, तब देश की हरी भरी खेती का रक्षक कौन है ? शून्य व्योम प्रश्न को उत्तर दिये बिना लौटा देता है। ऐसे लोग भी आक्रमणकारियों के चंगुल में फँस रहे हों तब रक्षा की क्या आशा ?



हैं प्यारी औ मधुर सुख औ भोग की लालसायें।
कान्ते, लिप्सा जगत हित की और भी है मनोज्ञा।
इच्छा आत्मा परम-हित की मुक्ति की उत्तमा है।
वांछा होती विशद उससे आत्म-उत्सर्ग की है॥
जो होता है निरत तप में मुक्ति की कामना से।
आत्मार्थी है, न कह सकते हैं उसे आत्म-त्यागी।
जी से प्यारा जगत-हित औ लोक-सेवा जिसे है।
प्यारी, सच्चा अवनि तल में आत्म-त्यागी वही है॥



समस्त आलोक, चैतन्य और प्राणशक्ति प्रभु की दी हुई है। मृत्यु के द्वारा वही इसको लौटा लेता है। जिस वस्तु को मनुष्य दे नहीं सकता, उसे ले लेने की स्पर्धा से बढ़कर दूसरा दम्भ नहीं। मैं फल-मूल खाकर, अंजलि से जलपान कर तृण-शय्या पर आँख बन्द किये सो रहता हूँ।



पौढ़ी हुति पलँगापर मैं
निसि ज्ञान रु ध्यान पिया मन लाये।
लागि गई पलकें पलसों,
पल लागत ही, पल में पिय आये॥

ज्योंहि उठी उनके मिलवै कहं,
जागि परी पिय पास न पाये।
मीरन और तो सोय के खोवत,
मैं सखि प्रीतम जाग गंवाये॥



वैवाहिक जीवन के प्रभात में लालसा अपनी गुलाबी मादकता के साथ उदय होती है और हृदय के सारे अवकाश को अपने माधुर्य की सुनहरी किरणों से रंजित कर देती है। फिर मध्याह्न का प्रखर ताप आता है, क्षण-क्षण भर बगूले उठते हैं और पृथ्वी काँपने लगती है। लालसा का सुनहरा आवरण हट जाता है और वास्तविकता अपने नग्न रूप में सामने आ खड़ी होती है।



खेलत में को काको गोसैयां।
हरि हारे जीते श्रीदामा, बरबस ही कत करत रिसैयां॥
जाति पाँति हमते कछु नाहीं, हौं न बसत तुम्हारी छैयां।
अति अधिकार जनावत यातें अधिक तुम्हारे हैं कछु गैयां॥
रूहठि करैं तासों को खेले रहे पौढि जहँ तहँ सब गोइयाँ।
सूरदास प्रभु खेलोइ चाहत दाँव दयो करि नन्द दोहैयां॥



'स्वावलम्बी की सहायता ईश्वर करता है।' इस कथन की सत्यता अनुभवपूर्ण है। स्वावलम्बन का बीज व्यक्ति में सच्ची तथा वास्तविक उन्नति का मूल है। बहुतों के जीवन में इसका उदाहरण मिलता है। बाह्य-सहायता परिणाम में दुर्बल होती है जबकि स्वयं कार्य करने से कार्य अत्यन्त सुचारु रूप से होता है। दूसरों के सहारे सदा रहने से आत्म-विश्वास, आत्म-निर्भरता, साहस एवं

उद्योग ऐसे गुण नहीं प्राप्त हो सकते, बल्कि उल्टे ही व्यक्ति पराधीनता एवं दुर्बलता का अनुभव करेगा। अतः प्रत्येक व्यक्ति को इस दैवी गुण से लाभ उठाना चाहिये।

❀

आगे चना गुरु मात दिये ते लिये तुम चाबि हमें नहिं दीने।
श्याम कही मुसकाय सुदामा सों चोरि की बानी में हो जु प्रवीने।
गांठरि कांख में चापि रहे तुम खोलत नाहिं सुधारस भीने।
पाछिलि बानि तजी न अजौ तुम तैसे ही भाभी के तंदुल कीने॥

❀

प्रायः लोगों का विचार है कि कल्पना केवल कवि ही की सम्पत्ति है, चित्रकार का उससे विशेष प्रयोजन नहीं है। पर यह बात सत्य की सीमा से परे है। कवि और चित्रकार दोनों ही स्वर्गीय पक्षी की भाँति कल्पना के रंग बिरंगे पंखों पर उड़कर अमर्त्य एवं अपार्थिव सौन्दर्य की खोज में उन्मत्त हो जाते हैं। चित्रकार की कला की पराकाष्ठा अनुकरण करने में नहीं है। यह तो वर्णनात्मक कविता की भांति निकृष्ट कोटि की कला है। शिल्पकार का चातुर्य इसमें नहीं कि वह किसी वस्तु का प्रतिरूप बना दे। उसकी कला आदर्श रूप बनाने में है। चित्रकार और कवि के लिए भी यही बात है।

❀

पद्मावति जो सँवारै लीन्हा।
पूनिउँ राति दैउ ससि कीन्हा॥
करि मज्जन तन कीन्ह नहानू।
पहिरे चीर, गएउ छपि भानू॥
रचि पत्रावलि माँग सँदूरू।
भरे मोति औ मानिक चूरू॥

चन्दन चीर पहरि बहु भाँती।
मेघ घटा जानहुँ बग-पाँती॥

❀

कठिन से कठिन स्थिति में प्रसन्न रहना आत्मा की उच्चता का सूचक है। हमको अपनी आध्यात्मिकता का गौरव है। कठिनाइयां प्रायः बाह्य होती हैं। यदि हम उन पर विजय पा लें तो अच्छा ही है, और विजय न पा सकें तो उनसे दब कर दुखी होना कायरता है। हमको अपनी शक्तियों से कदाचित् भी निराश न होना चाहिए। कठिनाइयों से दुखित होना अपने विपक्षियों की जीत स्वीकार करना है।

❀

ऊधो मनमाने की बात।
दाख छुहारा छाँडि अमृत फल विषकीरा विष खात॥
जो चकोर को दै कपूर तोउ तजि अंगार अघात।
मधुप करत घर कोरे काठ में बन्धत कमल के पात॥
ज्यौं पतंग हित जानि आपनो दीपक सों लपटात।
'सूरदास' जाको मन जासों सोई ताहि सुहात॥

❀

दार्शनिक कहते हैं, जीवन एक बुदबुदा है, भ्रमण करती हुई आत्मा के ठहरने की एक धर्मशाला-मात्र है। वे यह भी कहते हैं कि इस जीवन का संग तथा वियोग क्या है, एक प्रवाह में साथ बहते हुए लकड़ी के टुकड़ों के साथ तथा विलग होने के समान है। परन्तु क्या ये विचार एक संतप्त हृदय को शान्त कर सकते हैं? क्या ये भावनाएँ चिरकाल की विरहाग्नि में जलते हुए हृदय को सान्त्वना प्रदान कर सकती हैं?

❀

बाँक नैन औ अंजन रेखा।
खंजन मनहुँ सरद ऋतु देखा॥
जस जस हेर, फेर चख मोरी।
लरै सरद महँ खंजन जोरी॥
भौंहैं धनुक धनुक पै हारा।
नैनन्ह साधि बान-विष मारा॥
करनफूल कानन्ह अति शोभा।
ससि मुख आइ सूर जनु लोभा॥



भक्ति में किसी ऐसे सान्निध्य की प्रवृत्ति होती है जिसके द्वारा हमारी महत्त्व के अनुकूल गति का प्रसार और प्रतिकूल गति का संकोच होता है। इस प्रकार का सामीप्य-लाभ करके हम अपने ऊपर पहरा बिठा देते हैं— अपने को ऐसे स्वच्छ आदर्श के सामने कर देते हैं जिसमें हमारे कर्मों का प्रतिबिम्ब ठीक ठीक दिखाई पड़ता है।



मैं बालक बहिंयन को छोटो, छीको किस विधि पाया।
ग्वाल बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो॥
तू जननी मन की अति भोरी, इनके कहे पतियायो।
जिय तेरे कछु भेद उपजिहै, जान परायो जायो॥



यदि मैं सम्राट् न होकर किसी विनम्र लता के कोमल किसलयों के झुरमुट में एक अधखिला फूल होता, और संसार की दृष्टि मुझ पर न पड़ती— पवन की किसी लहर को सुरभित करके धीरे से उस थाले में चू पड़ता— तो इतना भीषण चीत्कार इस विश्व में न मचता। भगवान्, असंख्य ठोकरें खाकर लुढ़कते हुए जड़ ग्रहपिण्डों

से भी तो इस चैतन्य मानव की बुरी गत है। धक्के-पर-धक्के खाकर भी यह निर्लज्ज सभा से नहीं निकलना चाहता।

❀

मिलीं गोहने सखी तराईं।
लेइ चाँद सूरज पहँ आई॥
पारस रूप चाँद देखराई।
देखत सूरुज गा मुरछाई॥
सोरह कला दिस्टि ससि कीन्ही।
सहसौ कला सुरुज कै लीन्ही॥
भा रवि अस्त तराईं हँसी।
सूर न रहा चाँद परगसी॥

❀

समय पुरुष और स्त्री की गेंद लेकर दोनों हाथ से खेलता है। पुल्लिंग और स्त्रीलिंग की समष्टि अभिव्यक्ति की कुञ्जी है। पुरुष उछाल दिया जाता है, उत्पेक्षण होता है। स्त्री आकर्षण करती है। यही जड़ प्रकृति का चेतन रहस्य है।

❀

समष्टि में भी व्यष्टि रहता है। व्यक्तियों से ही जाति बनती है। विश्व-प्रेम, सर्वभूत-हित-कामना परम धर्म है; परन्तु इसका अर्थ यह नहीं हो सकता कि अपने पर प्रेम न हो। इस अपने ने क्या अन्याय किया है जो इसका बहिष्कार हो?

❀

मनोनिग्रह मनुष्य की सबसे बड़ी विजय है। अतः मनुष्य का सर्वोपरि कर्त्तव्य यह है कि वह अपने मन को विजय करे। वस्तुतः मनुष्य और ईश्वर में कोई अन्तर नहीं है— केवल मन ही ईश्वरत्व

एवं मनुष्यत्व के बीच व्यवधान-स्वरूप है। मनुष्य के प्रयत्न से जब मन की बागडोर अविनाशी आत्मा के नियंत्रण में आ जाती है तो ईश्वरत्व की किरणें अनायास ही फूट निकलती हैं। मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा ध्येय वास्तव में यही है।



अन्तःकरण के मौन में जितनी शक्ति है उतनी संसार के किसी स्रोत में नहीं। क्योंकि यह मौन ही सृजन की प्रेरणायें देता है। इसके अतिरिक्त एक दूसरे प्रकार का मौन भी होता है जिसे 'मूढ़ मौन' कह सकते हैं। इस मौन में प्रकाश नहीं, अन्धकार है। अन्तःकरण के मौन को प्राप्त करने का केवल ध्यान ही एकमात्र उपाय है और ध्यान का तात्पर्य है वृत्तियों का अन्तरागमन।



बलवान में ही स्वतन्त्र रहने की योग्यता है। निर्बल की स्वतन्त्रता तो मानों पागल के हाथ में डायनामाइट की छड़ी है।



एक दिन सर्वशक्तिमान परमेश्वर के मन में आया कि वह आकाश में अपने नील महल में एक बड़ा भारी भोज दे।

संसार की सारी महान् विशेषताएँ निमंत्रित की गयीं। केवल विशेषताएँ और सद्गुणों की देवियाँ हीं ······ पुरुषों की उन्हें परवाह नहीं थी ········ केवल महिलायें।

बहुत बड़ी संख्या में वे सब वहाँ आ उपस्थित हुईं, छोटी-बड़ी सब। छोटी देवियाँ बड़ी से कहीं अधिक सहृदय और मिलनसार थीं। वे सब प्रसन्न दिखाई दे रहीं थीं, और आपस में मित्रतापूर्वक वार्तालाप कर रहीं थीं, जैसे मानों वे एक दूसरे की निकट सम्बन्धी और मित्र हों।

परन्तु सर्वशक्तिमान को दो सुन्दर देवियाँ ऐसी दिखाई दीं जो एक-दूसरे से अपरिचित सी लग रही थीं।

उन्होंने उनमें से एक देवी से पहिले कुछ बातचीत की और फिर वे उसे दूसरी देवी के पास परिचित कराने के उद्देश्य से ले गये।

"आप उदारता हैं।" उन्होंने पहली देवी की ओर संकेत करके कहा, "और आप हैं कृतज्ञता" दूसरी देवी का उन्होंने परिचय कराया।

दोनों देवियाँ इस परिचय से बिल्कुल चकित-सी रह गईं, क्योंकि जब से इस संसार का निर्माण हुआ है— और इसका निर्माण हुए एक बड़ा लम्बा समय बीत चुका है— यह पहला ही अवसर था जब वे दोनों देवियाँ एक दूसरे से मिली थीं।



सारी रात उसकी राह देखते बीत गयी। अब प्रभात का समय हुआ। कहीं ऐसा न हो कि वह मेरे सो जाने के बाद अचानक ही द्वार पर आजाए। मित्रो! मेरे द्वार के कपाट खुले रखना!

उनके पैरों की आहट से ही यदि मेरी नींद न टूट जाय तो मुझे मत जगाना। मैं प्रभात में पक्षियों के कलरव या उषागमन के उत्सव की किलकारियों से चौंककर नहीं उठना चाहती। मुझे सोने देना। मेरे प्रिय भी अचानक द्वार पर आजाएं तो मुझे चैन की नींद सोने देना। मेरी नींद, मेरी अनमोल नींद, केवल उनका स्पर्श पाकर लुप्त हो जाने की प्रतीक्षा कर रही है। मेरी मुंदी आंखें केवल उनकी मुसकान का स्पर्श पाने को अपनी पलकें उठाएंगी। वह मेरे सामने आएंगे— जैसे कोई स्वप्न अंधेरी नींद से फूट कर आता है।

उसे आने देना, मेरी आँखों के सामने प्रकट होने देना, जैसे

सृष्टि की प्रथम किरण आई थी, मेरी जाग्रत आत्मा का प्रथम रोमांच उसके प्रथम दर्शन में ही हो— यही मेरी कामना है।



कंधे पर हल लिये हुए इन्सान शाम को घर लौट रहा था। भाल पर पसीने की बूंदें छलक रही थीं और क़दम तेज़ी से घर की ओर बढ़ रहे थे। सहसा एक फरिश्ते को सामने देखकर वह रुक गया। फरिश्ते ने ग्लानि के साथ कहा— 'मूर्ख, इतना मोह घर का! तुम कभी स्वर्ग नहीं जा सकते।'

"मोह नहीं, यह प्रेम है, जो स्वर्ग के अमृत से भी ज्यादा मधुर है। मुझे तुम्हारा स्वर्ग नहीं चाहिये, जहाँ परस्पर सुख-दुःख में कोई हँस-रो नहीं सकता।"

"पर यह तो माया है, इसमें भगवान कहाँ?" फरिश्ता इन्सान की मूर्खता पर हँसना चाहता था; किन्तु जैसे ही उसने इन्सान की ओर देखा तो आश्चर्य-चकित रह गया। इन्सान के भाल पर छिटकी पसीने की प्रत्येक बूँद में भगवान विराजमान थे।



कहीं ऐसा न हो कि जीवन की अच्छी चीजें जीवन की सबसे अच्छी चीज़ों को नष्ट कर दें!



जो जहर हलाहल है अमृत भी वही लेकिन
मालूम नहीं तुझको अन्दाज़ ही पीने के।



परमेश्वर ने जब सृष्टि का निर्माण किया तब मानव अपनी दोनों आँखों से भली वस्तुएं देखता, दोनों कानों से भली बातें सुनता,

और दोनों हाथों से भले कार्य करता। इसी लिये शैतान निठल्ला हो गया।

एक दिन वह छद्म-वेश धारण कर मानव के पास पहुँचा और बोला :—

"तुम कैसे मूर्ख हो! क्या एक आंख से दिखाई नहीं देता, एक कान से सुनाई नहीं पड़ता, और एक हाथ से काम नहीं होता, जो देखने में दोनों आंखों का, सुनने में दोनों कानों का और काम करने में दोनों हाथों का उपयोग करते हो? एक से काम चलता हो तो दोनों से काम लेना मूर्खता नहीं तो क्या है?"

मानव ने अपनी भूल स्वीकार की और कहा, "भाई, तुम ठीक कहते हो।"

उस दिन से सभी मानव एक आँख से देखने, एक कान से सुनने और एक हाथ से कार्य करने लगे।

परिणाम यह हुआ कि शैतान को मौक़ा मिल गया और उसने मानव के निठल्ले अंग पर अधिकार जमा लिया। फिर तो मानव की आंखें भले के साथ बुरा देखने लगीं, कान भले के साथ बुरा सुनने लगे और हाथ भले के साथ बुरे काम करने लगे।

और फिर भलाई में से बुराई और बुराई में से भलाई को अलग करने में मानव का सारा जीवन ही व्यतीत होने लगा।



जो बीत गया उस पर गर्व करके समय नष्ट मत करो, वर्तमान को ग्रहण करो, क्योंकि दृढ़ निष्ठा वाले लोग ही अदृश्य और नीरवता से खिसक जाने वाले समय के मस्तक पर अपनी छाप अंकित कर सकते हैं।



नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिये। ऐसा काम ढूँढना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखाई देता है और फिर घटते घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिस से सदा प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उस में बरकत होती है।

(प्रेमचन्द जी का करारा व्यंग)



मैं प्रकृति का पुजारी हूँ और मनुष्य को उसके प्राकृतिक रूप में देखना चाहता हूँ, जो प्रसन्न हो कर हँसता है, दुःखी हो कर रोता है और क्रोध में आकर मार डालता है। जो दुःख और सुख दोनों का दमन करते हैं, जो रोने को कमजोरी और हँसने को हल्कापन समझते हैं, उनसे मेरा कोई मेल नहीं। जीवन मेरे लिये आनन्दमय क्रीड़ा है— सरल, स्वछन्द; जहाँ कुत्सा, ईर्ष्या और जलन के लिये स्थान नहीं। मैं भूत की चिन्ता नहीं करता, भविष्य की परवाह नहीं करता। वर्तमान ही मेरे लिये सब कुछ है। भविष्य की चिन्ता हमें कायर बना देती है; भूत का भार हमारी कमर तोड़ देता है। हम व्यर्थ का भय अपने ऊपर लादकर रूढ़ियों और विश्वासों और इतिहासों के मलबे के नीचे दबे पड़े रहे। ······ जो शक्ति, जो स्फूर्ति मानव धर्म को पूरा करने में लगनी चाहिये थी, सहयोग में, भाई-चारे में, वह पुरानी अदावत का बदला लेने और बाप दादों का ऋण चुकाने की भेंट हो जाती है और जो यह ईश्वर और मोक्ष का चक्कर है इस पर मुझे हँसी आती है। यह मोक्ष और उपासना अहंकार की पराकाष्ठा है जो हमारी मानवता को नष्ट किये जाती है। जहाँ जीवन है, क्रीड़ा है, चहक है, प्रेम है, वहीं ईश्वर है और

जीवन को सुखी बनाना ही उपासना है और मोक्ष है। ज्ञानी कहता है— होठों पर मुस्कराहट न आये, आंखों में आंसू न आयें। मैं कहता हूँ— यदि तुम हँस नहीं सकते और रो नहीं सकते तो तुम मनुष्य नहीं पत्थर हो। वह ज्ञान जो मानवता को पीस डाले ज्ञान नहीं है, कोल्हू है।



जो अपने घर वालों की सेवा न कर सका, वह जाति की सेवा कभी कर ही नहीं सकता। घर सेवा की सीढ़ी का पहला डंडा है। इसे छोड़ कर तुम ऊपर नहीं जा सकते।



प्रेम वह प्याला नहीं है जिससे आदमी छक जाए, उसकी तृष्णा सदैव बनी रहती है।



ईर्ष्या अपनी क्षुद्रताओं की स्वीकृति है।



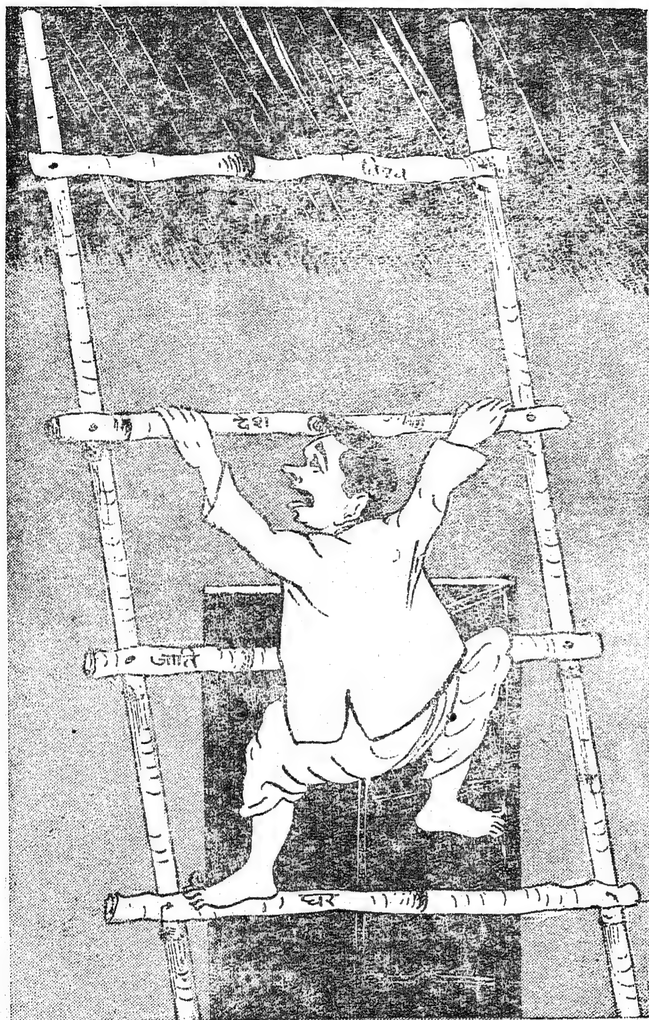
प्रत्येक धर्म के कितने ही वाह्य अनुष्ठान होते हैं। पर वे धर्म नहीं हैं और न धर्म के आवश्यक अङ्ग ही। जिन नियमों से मनुष्य का शाश्वत कल्याण हो सकता है वही धर्म है।



तुम काल-चक्र के रक्त-सने
दशनों को कर से पकड़ सुदृढ़,
मानव को दानव के मुँह से
ला रहे खींच बाहर बढ़ बढ़।



जो कथाएँ हृदय का बाँध तोड़कर दूसरों को अपना परिचय


देश
जाति
घर



देने के लिए वह निकलती हैं वे प्रायः करुणा होती हैं और करुणा की भाषा शब्दहीन होकर भी बोलने में समर्थ है।



हम शैशव के मीठे विचार,
हम यौवन की मीठी खुमार,
हम जीवन के विक्रम अपार।



मर्द की जबान और गाड़ी का पहिया चलता ही फिरता है। आज और बातें हैं, कल स्वार्थान्धता के वश हुजूरों की मरज़ी के मुआफ़िक़ दूसरी बातों के होने में तनिक विलम्ब की सम्भावना नहीं है।



माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माहिं।
मनुवां तो चहुँ दिस फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं॥



मनुष्य को स्वयं पर गर्व है। वह स्वयं को जगदीश की अत्युत्तम तथा सर्वश्रेष्ठ कृति समझता है। वह अपने व्यक्तित्व को चिरस्थायी बनाना चाहता है। चिरकाल से मनुष्य यही प्रयत्न कर रहा है कि किस प्रकार वह अप्राप्य अमृत को प्राप्त करे, जिसे पीकर वह अमर हो सके।



माला फेरत जुग गया, मिटा न मन का फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर॥



प्रभात का समय था। जीवन की रश्मियां आकाश से बरसती-

हुई प्राणिमात्र में नवीन उमङ्गों का संचार कर रही थीं। बारह घंटों के लगातार संग्राम के अनन्तर प्रकाश ने अन्धकार पर विजय प्राप्त की थी। इस आनन्द में बाग़ के फूल झूम रहे थे— पक्षीगण मधुर संगीत में मस्त थे। प्रकाश का राज्य था और सर्वत्र आनन्द की वर्षा हो रही थी।



शोभित कर नवनीत लिये।
घुटुरुन चलत रेनु तन मंडित मुख दधिलेप किए॥
चारु कपोल, लोल लोचन, गौरोचन तिलक दिये।
लट लटकनि मनो मत्त मधुपगन मादक मदहि पिये॥
कठुला कंठ, वज्र केहरि-नख राजत रुचिर हिये।
धन्य सूर एको पल या सुख का शत कल्प जिये॥



सच्ची मित्रता में उत्तम से उत्तम वैद्य की सी निपुणता और परख होती है। अच्छी से अच्छी माता का सा धैर्य और कोमलता होती है। ऐसी ही मित्रता करने का प्रयत्न प्रत्येक युवा पुरुष को करना चाहिए।



कठिनाइयों में चित्त को स्थिर रखना धैर्य कहलाता है। मनुष्य का जीवन कण्टकाकीर्ण है। मनुष्य जीवन में कठिनाइयाँ ही कठिनाइयाँ हैं, किन्तु उनका सामना ज्ञानी लोग ज्ञान से करते हैं, एवं मूर्ख लोग रोकर करते हैं। कठिन से कठिन स्थिति में प्रसन्न रहना आत्मा की उच्चता का सूचक है। हमको अपनी आध्यात्मिकता का गौरव होना चाहिए।



कितना मादक है जीवन कभी सोचा है तुमने क्या? नेत्र

खोलकर देखो प्रकृति अनमोल रत्न लिये तुम्हारा अभिनन्दन करने को खड़ी है। रात्रि को जब आकाश पर अगणित तारे मुस्काकर चाँद से आँखें मटकाकर बातें करते हैं, उस समय तुम्हारा मन-मयूर नाच नहीं उठता क्या ? सावन में मेघों की छटा, वसन्त में कुसुमों की शोभा मस्त नहीं बना देती क्या ? आशा की देवी तुम्हारे द्वार पर खड़ी तुम्हें पुकार रही है मानव ! मोह-निद्रा को त्याग कर आँखें खोल ! जीवन का रस लेकर संसार को स्वर्ग बना !



पानी केरा बुद्बुदा, अस मानुष की जात।
देखत ही छिप जायगा, ज्यों तारा परभात ॥



क्षपा-तमस्कांड का हटाने वाला यह चन्द्रमा ऐसा मालूम होता है मानो आकाश-महासरोवर में श्वेत कमल खिल रहा है, जिसमें बीच बीच जो कलंक की कालिमा है, सो मानो भौंरे गूँज रहे हैं, अथवा सौंदर्य की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी के स्नान करने की यह बावड़ी है ; या कामदेव की कामिनी रति का यह चूना पोता धवल गृह है।



विकास की प्रौढ़ावस्था में यद्यपि आख्यायिका के आकार का प्रश्न गौण अथवा अनावश्यक हो जाता है तो भी प्राथमिक अवस्था में आकार के आधार पर ही उसकी कला उन्नति करने में समर्थ हुई है। उपन्यास और आख्यायिका दोनों ही काल्पनिक सृष्टि हैं। दोनों को यथार्थ की अनुरूपता प्राप्त करना परमावश्यक होता है। दोनों में घटना और पात्रों की ऐसी योजना अनिवार्य रूप से होनी चाहिए जिससे वह काल्पनिक रचना पूर्ण रूप से सजीव हो उठे।

साहित्यिक कृति में सजीवता और वास्तविकता का अभाव उसके अस्तित्व पर ही कुठाराघात करता है। अतः यथार्थता का आभास उसमें सदैव मिलना चाहिए।

❀

सुविचार की कृपाण बनाओ, विश्वास, उदारता, नैतिक भावनाओं का दुर्ग, गुणों की सेना और कवच रहे धैर्य का .... उद्योग का भाला, ध्यान धनुष और अनासक्ति तुम्हारे लिये बाण बने।

❀

चार दिनों के ठीक बाद ही रूप छोड़ देता है साथ,
भाग खड़ी होती सुन्दरता चपल छुड़ाकर अपना हाथ।
घटता बढ़ता चांद, फूल भी खिलकर कुम्हला जाते हैं,
गिरने के पहिले ये पत्ते भी पीले हो जाते हैं।

❀

प्रकृति के धर्म से ऊपर उठ जाने का अर्थ होगा आर्य! जीवन के बन्धनों से छूट जाना। दूसरे शब्दों में जिसे मृत्यु कहेंगे। मृतक को भूख, प्यास, पीड़ा और राग का अनुभव नहीं होता और जब देह को इन अनुभवों से मुक्ति मिलती है उसके बाद ही उसकी दुर्गन्ध भी निकलने लगती है।

❀

मेरे मन में यह उठा भाव,
यदि आज सुखों का हुआ अंत।
तो यह पतझड़ भी कभी अन्त
पायेगा, आयेगा बसंत॥

❀

मन्दिर के बनवाने वाले अपने कर्त्तव्यों का बोझ और जीवन का दायित्व मन्दिर पर डाल कर हलके हो जाते हैं और उन्नति तथा विकास की प्रगति को क्षीण कर देते हैं। पहले के ही मन्दिर क्या कम हैं कर्त्तव्य का स्मरण दिलाने के लिये ? यदि आप लोगों को अपना कर्त्तव्य भुलाना है, पथभ्रष्ट होना है और मेरी हँसी को सदा के लिये नष्ट कर देना हैं तो बनाइये मूर्ति वाला मन्दिर।



सखि, इन नयनन ते घन हारे।
बिनही ऋतु बरसत निसिबासर सदा मलिन दोउ तारे॥
उरध स्वास समीर तेज्ञ अति सुख अनेक द्रुम डारे।
दसन सदन करि बसै बचन-खग दुःख पावस के मारे॥
सुमिरि सुमिरि गरजत जल छाड़त आँसु सलिल के धारे।
बूड़त ब्रजहिं सूर को राखै बिनु गिरधर वर प्यारे॥



साहित्य के अन्तर्गत वह सारा वाङ्मय लिया जा सकता है जिसमें अर्थबोध के अतिरिक्त भावोन्मेष अथवा चमत्कारपूर्ण अनुरंजन हो तथा जिसमें ऐसे वाङ्मय की विचारात्मक समीक्षा या व्याख्या हो।



केसव ! कहि न जाय का कहिए।
देखत तव रचना विचित्र अति समुझि मनहि मन रहिए॥
सून्य भीति पर चित्र, रंग नहिं, तनु बिनु लिखा चितेरे।
धोये मिटइ न, मरण भीति, दुख पाइय इह तनु हेरे॥
रविकर नीर बसै अति दारुण मकर रूप तेहि माँहि।
बदनहीन सों ग्रसै चराचर पान करन जे जाहिं॥

कोउ कह सत्य, झूठ कह कोउ, जुगल प्रबल करि मानै।
तुलसिदास परिहरै तीनि भ्रम सो आपनु पहिचानै॥

❀

जो मनुष्य आगे बढ़ने के लिए तैयार नहीं है वह पाप करता है। अतः उन्नति करो, नहीं तो कुचले जाओगे, पिस जाओगे और नष्ट हो जाओगे। वे ही जातियाँ नष्ट होती हैं जो आगे नहीं चलतीं।

❀

अजौं तरयौना हि रह्यौ, श्रुति सेवत इक अंग।
नाक-बास बेसरि लह्यौ, बसि मुकुतन के संग॥
खेलन सिखये अलि भलैं, चतुर अहेरी मार।
काननचारी नैन मृग, नागर नरनु शिकार॥

❀

बातचीत में यथासम्भव कटाक्ष, आक्षेप, व्यंग, उपालंभ और अश्लीलता कदापि न आनी चाहिए। अहंमन्यता से किसी को कटु वचन तथा ऐसी कोई अप्रिय बात न कहें जिससे बाद में आपको पछताना पड़े। सदा अपने ही बारे में बातचीत करना और अपना ही उदाहरण बार बार देकर अपनी ही बातें बताने की चेष्टा न करें। बातचीत में आत्म-प्रशंसा की झलक न आने पावे।

❀

बूझत स्याम, कौन तू गोरी?
कहाँ रहती काकी है बेटी, देखी नाहिं कहूँ ब्रज खोरी॥
काहे को हम ब्रज तन आवति खेलति रहति आपनी पोरी।
स्रवननि सुनति रहति नँदढोटा करत रहत दधि माखन चोरी॥
तुम्हरो कहा चोरि हम लैहैं खेलन चलो सङ्ग मिलि जोरी।
सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि बातनि भुरइ राधिका भोरी॥



हँसी में दुनिया आपका साथ देती है, रोने में केवल गीला रुमाल साथ देता है।



लखियत कालिंदी अति कारी।
कहियो पथिक जाय हरिसौं ज्यों भई विरह-जुर जारी॥
मनु पलिका पै परी धरनि धँसि तरँग तलफ तनु भारी।
तट बारू उपचार चूर मनो स्वेद प्रवाह पनारी॥
बिगलित कच कुस कास पुलिन मनो पंकज कज्जल सारी।
भ्रमर मनौ मति भ्रमति चहूँ दिसि फिरति है अंग दुखारी॥
निसि दिन चकई ब्याज बकत मुख किन मानस अनुहारी।
'सूरदास' प्रभु जो जमुना गति सो गति भई हमारी॥



"हीरा सबसे कठोर पदार्थ क्यों माना जाता है?"
"क्योंकि वह महिलाओं पर भी छाप डालने में समर्थ होता है।"



स्वतन्त्रता और उत्तरदायित्व जुड़वां बालकों के समान हैं, यदि उन्हें अलग किया जाय तो दोनों की मृत्यु हो जाती है।



रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ मांगन जाहिं।
उनसे पहिले वे मरे, जिन मुख निकसत नाहिं॥
रहिमन रहिला की भली, जो परसै मन लाय।
परसत मन मैला करे, सो मैदा जरि जाय॥
नाद रीझ तन देत मृग, नर धन हेत समेत।
ते 'रहीम' पशु ते अधिक, रीझेहु कछू न देत॥

जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह ।
'रहिमन' मछरी नीर को, तऊ न छाँड़त छोह ॥



ऐसा कभी सुनने में नहीं आया कि बिजली की बत्ती का खम्भा आत्म-सुरक्षा के प्रयत्न के अतिरिक्त कभी किसी मोटर से जा टकराया हो ।



रावरे दोष न पाँयन को, पगधूरि को भूरि प्रभाउ महा है ।
पाहन तें बन-बाहन काठ को, कोमल है, जल खाइ रहा है ॥
पावन पायँ पखारि कै नाव, चढ़ाइहौं आयसु होत कहा है ।
तुलसी सुनि केवट के बर-बैन, हँसे प्रभु जानकी ओर हहाहै ॥



स्वतन्त्रता वह वस्तु है जो आप दूसरों को दिये बिना स्वयम् भी नहीं प्राप्त कर सकते ।

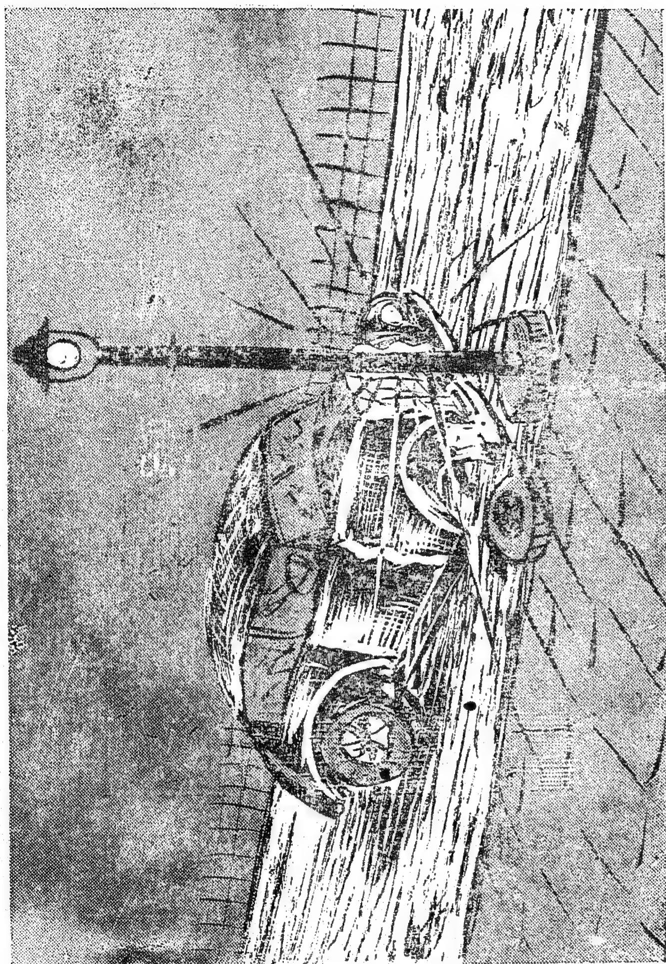


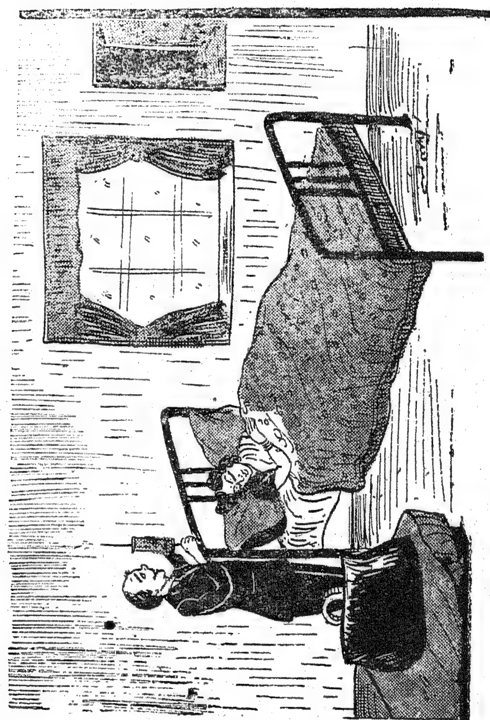
आकर जगत में न जाने तू कहाँ से शिशु !
सब के गले में प्रेम-पाश-सा है डालता ।
हरता सभी का मन मंद मुसकान द्वारा,
मोद-मग्न हो के हाथ पैर है उछालता ।
बोलना न आता तुझे चल सकता भी नहीं,
रोकर सदैव सब काम है निकालता ।
पर पाकशासन भी तेरे अनुशासन को,
पालता है हर्ष से कभी है नहीं टालता ॥



प्रेम और चुगली दोनों से चाय का जायका बढ़ जाता है ।







मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी ।
किती बार मोहिं दूध पियत भइ, यह अजहूँ है छोटी ।।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यों, ह्वै है लांबी मोटी ।
काढ़त, गुहत, नहावत, ओंछत, नागिन सी भुईं लोटी ।।
काचो दूध पियावत पचि पचि, देत न माखन रोटी ।
'सूर' श्याम चिर जीवो दोउ भैया, हरि हलधर की जोटी ।।



प्रश्न— "किस बात को गुप्त रखना मनुष्य के लिये सबसे कठिन होता है ?"

उत्तर— "अपने बारे में अपनी राय को ।"



प्रश्न— "बड़ा नगर किसे कहते हैं ?"

उत्तर— "उस स्थान को जहाँ कोई भी व्यक्ति हमारी मुसीबतों से परिचित न हो ।"



"स्त्री के सुन्दर होने का एक दोष यह भी है कि डाक्टर स्त्री को शीघ्र ही रोग-मुक्त करने का प्रयत्न नहीं करता ।"



दूसरों का उपहास करने की शक्ति और सामर्थ्य हम सब में है परन्तु क्या हमें इसका अधिकार भी है ?



कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है । सम्राट्, यदि इतना भी न कर सके तो क्या ! सब क्षणिक सुखों का अन्त है । जिसमें सुखों का अन्त न हो, इसलिये सुख करना ही न चाहिये ।



तपस्या बड़ी वस्तु है। परन्तु सुनता हूँ कि तपस्या करने वाले भय और अहंकार के कारण आत्म-दमन में लीन हो जाते हैं और इस आत्म-दमन को परम पद समझ कर दूसरों को आतंकित करने लगते हैं। जब ऐसे लोगों को इस लोक में गौरव नहीं मिल पाता है तब उस लोक में उतने अधिक गौरव पाने की आशा पर उनको अचम्भा होने लगता है और पागल से हो जाते हैं।



जीवन भर के श्रम-बिन्दुओं की नदी बहाकर एक कंकड़ की तौल के स्वर्ण को पाया तो क्या पाया ? यह देखो, सूर्य की अरुण किरणें समुद्र की लहरों पर जो स्वर्ण-कण बिछा रही हैं, इनका संग्रह कितना सहज है। उतना ही रसायन से स्वर्ण का उत्पन्न करना। अपने यहाँ के पर्वतों और नदियों की रेत में स्वर्ण है, परिश्रमी जन उनसे स्वर्ण बनाते रहते हैं। तुम सब जो परिश्रम करते हो वह और भी अधिक मूल्यवान स्वर्ण का जनक है। लौकिक स्वर्ण के उत्पादन की क्रिया यही है। इससे भी बढ़कर एक प्रकार का स्वर्ण और है। उसका नाम है आत्म-तोष !



संसार सीमाबद्ध है, परन्तु कल्पना तो असीम है। हमारी आकांक्षायें उसी कल्पना-लोक में पहुँच कर तृप्ति लाभ कर सकती हैं। सत्य के निष्ठुर आघात पर कल्पना मधुर प्रलेप लगा देती है। कल्पना के द्वारा हम किस लोक में भ्रमण नहीं करते ? किस भयानक स्थिति का अनुभव नहीं करते ? किस प्रेम की मधुरिमा से पूर्ण जीवन का अनुभव नहीं करते ? इसीलिये कथाओं से मनोरंजन होता है।



आज हमारे सिर-धरों का ही सिर नहीं फिर गया है, आगे चलने वाले भी आग लगा रहे हैं। भगवा पहनने वाले भी भांग खाये बैठे हैं। जिनको वीर होने का दावा है, वे भाइयों की मूँछें उखाड़ कर मूँछ मरोड़ रहे हैं, दूसरों के घर मूस कर अपना घर भर रहे हैं, औरों के लहू से हाथ रंग कर अपना हाथ गरम कर रहे हैं, सगों का पेट काट कर अपना पेट पाल रहे हैं और बेबसों के घर जलाकर अपने घर घी के दीये बाल रहे हैं। पूँजीवालों का पेट दिन दिन मोटा हो रहा है, पर किसी सटे पेट वाले को देखते ही उनकी आँख पर पट्टी बँध जाती है। संडे-मुसण्डे डण्डे के बल माल भले ही चाब लें, पर भूख से जिनकी आँखें नाच रही हैं, उनको वे कानी कौड़ी भी देने के रवादार नहीं।



हमको इस प्रकार रहना है कि हमारे पूर्वज संस्कृति का जो प्रकाश हमारे लिये छोड़ गये हैं उसका लोप न होने पाये, हमारे पीछे आने वालों तक पहुँच जाय। इसलिये हमारे कर्त्तव्य की डोर पितरों से लेकर वंशजों तक पहुँचती है। इस विस्तृत कर्तव्य-राशि को धर्म कहते हैं।



पवित्रता की माप है मलिनता, सुख का आलोचक है दुःख, पुण्य की कसौटी है पाप! विजया ! आकाश के सुन्दर नक्षत्र आँखों से केवल देखे ही जाते हैं; वे कुसुम-कोमल हैं कि वज्र-कठोर— कौन कह सकता है? आकाश में खेलती हुई कोकिल की करुणामयी तान का कोई रूप है या नहीं, उसे देख नहीं पाते। शतदल और पारिजात का सौरभ बिठा रखने की वस्तु नहीं। परन्तु संसार में ही नक्षत्र से उज्ज्वल— किन्तु कोमल— स्वर्गीय संगीत की प्रतिमा

तथा स्थायी कीर्ति-सौरभ वाले प्राणी देखे जाते हैं। उन्हीं से स्वर्ग का अनुमान कर लिया जाता है।

❀

"मोह मुझको तो नहीं, हाँ तुमको अवश्य हो गया है। तुम चाहती हो, मेरा सत्य ग़रीबी की चक्की में पिस-पिस कर चाहे जितनी सिसकियाँ भर-भर कर रोये, नाना प्रकार की दुर्बलताओं, विकृतियों और प्रतिक्रियाओं का शिकार बन-बन कर अधःपतन के गह्वर गर्त में चाहे सदा के लिये गिर कर समाप्त ही क्यों न हो जाय, लेकिन मेरे अञ्चल के छोर कभी न छोड़े!—मेरी आँखों से ओट कभी न हो! मैं पूछता हूँ, यह मोह नहीं तो और क्या है?"

❀

आँसुओं में डूबे, भूख-प्यास, निद्रा और निःश्वासों के अन्तराल में पले, कोमल-कोमल भोले कलेजों को, मिथ्या कथनों, भ्रमात्मक वचनों, मायावी प्रलोभनों, कभी न पूर्ण होने वाले आश्वासनों और वासनात्मक नखों से नोच नोच कर खाने की क्रिया को— मैं पूछती हूँ आप किस मुँह से मानवी कहना चाहते हैं?

❀

वत्स, सूर्य की इस तेजस्विता का कारण है उसकी सातों रंगीन किरणों का इस प्रकार सम्मिश्रण कि उनका पृथकत्व दृष्टिगोचर नहीं होता। भारत के भी नरपतिगण तथा गणतन्त्र यदि एक हो जांय तो इसके तेज के सम्मुख यवन! आह! एक यवन ही क्या यदि संसार के समस्त राष्ट्र भी इस पर आक्रमण करें तो उनकी वही दशा होगी जो चमकते हुये दीप पर पतंगों की, जो प्रज्वलित दव पर रिमझिम बरसने वाली बूँदों की, जो जाग्रत ज्वालामुखी पर ओलों की।



शक्ति से सुकर्म और कुकर्म दोनों ही हो सकते हैं। बिजली एक शक्ति है। उससे आज संसार की तरह तरह की सेवायें हो रही हैं, मगर वही बिजली असावधानी या दुरुपयोग से प्राणियों का संहार कर देती है।



माली आवत देख के, कलियाँ करी पुकार।
फूली फूली चुन लिये, काल्हि हमारी बार॥



शिक्षा को भी बड़े बड़े मक़बरों में क़ैद कर दिया गया है। जितनी बड़ी इमारत, उतनी ही बड़ी यूनिवर्सिटी। जितना अधिक पत्थर, चूना और लोहा इकट्ठा किया गया हो उतना ही बड़ा कालेज, विश्वविद्यालय, विद्यापीठ।



पाहन पूजै हरि मिले, तो मैं पूजों पहार।
ताते ये चक्की भली, पीस खाय संसार॥



तलवार रणस्थली में दिन भर गीत गुनँगुनाती रही-- और हँसिया हरे भरे खेतों में। एक का गीत मृत्यु का भैरव राग था दूसरे का संगीत जीवन को जीवन देनेवाला मृदु हास।



जो अवस्था, प्रतिष्ठा, विद्या, अनुभवशीलता, जाति अथवा पदवी में अपने से श्रेष्ठ हों, उनके सम्मुख बहुत संभाल के बातचीत करनी चाहिये। नम्रता, स्नेह, आदर से भरी हुई बातें मधुर और गम्भीर स्वर से मुख पर लानी चाहियें।



मनुष्य-जीवन का प्रभात, जिसमें सब प्रकार की शक्तियों के विकास की सम्भावना होती है, विद्यार्थी जीवन में व्यतीत होता है। जो लोग इस विद्यार्थी जीवन में हमारे पथप्रदर्शक हैं, उनका परम उत्तरदायित्व है कि यह काल केवल ज्ञान-संग्रह में ही न चला जावे। बाल्यावस्था लौटकर नहीं आती। भावी चरित्र निर्माण करने का यही सुअवसर है।



मनुज जीवन में जय के लिये, प्रथम ही दृढ़ पौरुष चाहिये।
विजय तो पुरुषार्थ बिना कहाँ, कठिन है चिर जीवन भी यहाँ।
भय नहीं भव सिन्धु तरो उठो, पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो ॥



नम्रता भी सज्जनता की एक अच्छी कसौटी है। अपने से छोटों और बराबर वालों के आदर करने का गुण सच्चे सज्जन के स्वभाव में कूट कूट कर भरा रहता है। वह स्वयं कष्ट उठा लेता है परन्तु दूसरों का मन दुखाकर पाप का भागी नहीं बनना चाहता। वह उन मनुष्यों के दोषों को, असफलताओं को और अपराधों को क्षमा कर देता है, जिनको जीवन में उसके बराबर सुविधाएं नहीं मिली हैं। वह अपने पशुओं पर भी दयाभाव रखता है।



शील त्याग नर वृथा, धर्म का अभिलाषी है।
अपना अन्तःकरण, सत्य इसका साखी है॥
कपट, क्रोध, अभिमान, न हिय से जिनके छूटा।
पुण्य उन्होंने कौन, जगत् में आकर लूटा॥



तुम न जाने उसे कहाँ खोज रहे हो? अरे भाई, यहाँ वह कहाँ

मिलेगा ? इन मन्दिरों में वह राम नहीं मिलेगा। इस मसजिद में अल्लाह का दीदार मुश्किल है। इन गिरजों में कहाँ परमात्मा का वास है ? इन तीर्थों में वह मालिक रमने का नहीं। गाने बजाने से वह रीझने का नहीं। अरे, इन सब चटक-मटक में वह कहाँ ? वह तो दुखिया की आह में मिलेगा। ग़रीबों की भूख में मिलेगा। दीनों के दुःख में मिलेगा। सो वहाँ तुम खोजने जाते नहीं, यहाँ व्यर्थ ही फिरते हो !



विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परन्तु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिये;
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
यही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे;
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।



मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि मैं लम्बा नहीं हूँ। उसकी बड़ी कृपा है कि उसने मुझे ठिगने क़द का ही रहने दिया है। जब कभी मैं अपने लम्बे मित्रों की दुर्दशा का ध्यान करता हूँ तो मेरे हृदय में सहानुभूति के भावों की बाढ़ आ जाती है। यह सम्भव नहीं कि उनकी सब असुविधाओं का जो उन्हें उठानी पड़ती हैं, पूर्ण रीति से वर्णन किया जा सके। प्रथमतः उन बेचारों को अपने कपड़ों पर बहुत रुपये ख़र्च करने पड़ते हैं। उन लोगों को रात्रि में विश्राम करने के लिये विशेष खाट की आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि साधारण खाट पर तो उनका आधा शरीर बाहर लटका रहता है। यदि उन्हें रेल के तीसरे दर्जे में यात्रा करनी पड़े तो रात

भर उन्हें टांगें समेट कर गठरी की भांति लेटकर संतोष करना पड़ेगा। पुनः बस में यात्रा करते हुए, यदि सामान्य ऊँचाई के पुरुष को स्थानाभाव के कारण खड़ा रहना पड़े तो कोई बड़ी बात न होगी। पर यदि मनुष्य थोड़ा भी लम्बा हुआ, तो उसे बड़ी असुविधा भोगनी पड़ेगी, क्योंकि यात्रा भर उसे अपने आप को प्रश्नबोधक चिह्न के समान मरोड़े रहना पड़ेगा। और वह दूसरे यात्रियों के सम्मुख एक हास्यास्पद दृश्य उपस्थित करेगा।



जीवन की समस्याएँ इतनी जटिल हैं कि मनुष्य द्वारा निर्मित नीति-शास्त्र से ये सुलझाई नहीं जा सकतीं। इसलिए मनस्तत्व का विश्लेषण कथा-साहित्य में होने लगा। भावों के घात-प्रतिघात से, घटनाओं के उत्थान-पतन से और परिस्थितियों के संघर्ष से मनुष्य के अन्तर्जगत् में जो एक अपूर्ण व्यापार होता रहता है, उसकी विवेचना कथा साहित्य का ध्येय हो गया। बहिर्जगत् से हम लोग एकदम अन्तर्जगत् में आ गये और तब मनुष्य की सभी मानसिक स्थितियों की आलोचना होने लगी।



राजा, मैं तुम्हें प्यार नहीं करती। मैं तो दर्प से दीप्त तुम्हारी महत्त्वमयी पुरुष-मूर्ति की पुजारिन थी, जिसमें पृथ्वी पर अपने पैरों से खड़े रहने की दृढ़ता थी। इस स्वार्थ-मलिन कलुष से भरी मूर्ति से मेरा परिचय नहीं। अपने तेज की अग्नि में जो सब कुछ भस्म कर सकता हो, उस दृढ़ता का, आकाश के नक्षत्र कुछ बना-बिगाड़ नहीं सकते।



जिन स्त्रियों को धर्म-बन्धन में बाँधकर, उनकी सम्मति के बिना आप उनका सब अधिकार छीन लेते हैं, तब क्या धर्म के पास कोई

प्रतिकार— कोई संरक्षण नहीं रख छोड़ते, जिससे वे स्त्रियाँ अपनी आपत्ति का अवलम्ब मांग सकें? क्या भविष्य के सहयोग की कोरी कल्पना से उन्हें आप सन्तुष्ट रहने की आज्ञा देकर विश्राम ले लेते हैं ?



भौतिकता पश्चिमी सभ्यता का मूल तत्त्व है। वहाँ किसी काम की प्रेरणा, आर्थिक लाभ के आधार पर होती है। ज़िन्दगी की ज़रूरतें ज्यादा हैं; इसलिये जीवन-संग्राम भी अधिक भीषण है। माता पिता भोग के दास होकर बच्चों को जल्द से जल्द कुछ कमाने पर मजबूर करते हैं।



एक बार मैं समस्त मानव-समाज को महासागर की असंख्य तरंगों की तरह एक ही भावोच्छ्वास से आंदोलित-उद्वेलित, एक ही नृत्य-लय में उठते-गिरते, और एक ही मानव-प्रेम के राग से मुखरित उल्लसित देख पाती !



यदि यह विश्व इन्द्रजाल ही है, तो इस इन्द्रजाली की अनन्त इच्छा को पूर्ण करने का साधन—यह मधुर मोह चिरजीवी हो और अभिलाषा से मचलने वाले भूखे हृदय को आहार मिले।



वह व्यक्ति जो ऐसी चीज़ ख़रीदता है जिसकी उसे आवश्यकता नहीं है, बहुधा आवश्यकता अनुभव करेगा जिसे वह ख़रीद नहीं सकेगा।



चितां प्रज्वलितां दृष्ट्वा वैद्यो विस्मयमागतः ।
नाहं गतो न मे भ्राता कस्येदं हस्तकौशलम् ॥

(जलती चिता देखकर वैद्य को विस्मय हुआ— 'न मैं गया न मेरा भाई, यह किसके हाथ की सफाई है ?')

❀

मनुष्यों के अन्तःकरण में सदा दो परस्पर-विरोधी प्रवृत्तियों के बीच युद्ध छिड़ा रहता है । यह बात नहीं कि सदा धर्म और अधर्म अथवा पाप और पुण्य में ही युद्ध होता है, कभी-कभी सत्प्रवृत्तियाँ भी एक दूसरे का विरोध करने लगती हैं ।

❀

यही वर्ग है जो अक्सर महापुरुषों को जन्म देता है । यही वर्ग है जो बड़ी बड़ी आशाओं और आकांक्षाओं को लेकर जन्म लेता है परन्तु साधन के अभाव में घुटी हुई तमन्नाओं का मजार बन कर रह जाता है । यही है संघर्षों की क्रीड़ाभूमि और यहीं पर आदमी समझ से सम्पर्क स्थापित करता है ।

❀

उपन्यासकार को अपनी सामग्री आले पर रक्खी हुई पुस्तकों से नहीं, उन मनुष्यों के जीवन से लेनी चाहिये जो उसे नित्य ही चारों ओर मिलते रहते हैं ।

❀

शासन की पहुँच प्रवृत्ति व निवृत्ति की बाहरी अवस्था तक ही होती है । उनके मूल या मर्म तक उसकी गति नहीं होती । भीतरी या सच्ची प्रवृत्ति को जागरित रखने वाली शक्ति कविता है जो धर्म-क्षेत्र में भक्ति-भावना को जगाती रहती है । भक्ति धर्म की रसात्मक अनुभूति है । अपने मंगल और लोक के मंगल का संगम उसी के भीतर दिखाई पड़ता है । इस संगम के लिये प्रकृति के क्षेत्र

के बीच मनुष्य को अपने हृदय के प्रसार का अभ्यास करना चाहिये। जिस प्रकार ज्ञान नर-सत्ता के प्रसार के लिये है, उसी प्रकार हृदय भी।



मानव और अमृत बनने का उपाय है कि तुम घोर परिश्रम करते हुये थोड़ी-थोड़ी प्रगति करने वाले बनो। एकदम छलांग मारने का प्रयत्न न करके क्रमशः उन्नत होते जाओ।



धीर और कर्मवीर महान् हृदय वाला मनुष्य हिमालय की तरह होता है। उच्चतम चोटी एवरेस्ट की भाँति उसके हृदय का उच्च विचार संसार के अन्य सभी छोटे-बड़ों को निर्विकार भाव से देखता है। उसके सिर पर मँडराने वाले काले बादल उसे तनिक भी डरा नहीं पाते। उससे निःसृत हो अनेकानेक सरितायें संसार में सुख-संचार करती हैं। उसकी तराई में कितने ही गर्जन हों, चोटी पर सूची-पात शान्ति विराजती है। वह अनुभवी मानव-सम्राट् श्वेत-शिखर से अनुभव की गम्भीरता की सूचना देता निर्विकार भाव से मुस्कुराता रहता है। इस विशालता को पहुँचकर हृदय बर्फ की तरह कठोर होकर भी सरस और शीतल हो जाता है।



मनुष्य जब तक ज्ञानालोक के समक्ष रहता है उसकी कलुषतायें उसमें छिपी रहती हैं और दुनियाँ की नजरों में उसका छोटा, पर स्पष्ट रूप रहता है, पर ज्यों-ज्यों वह प्रकाश से दूर चलता जाता है, उसकी कलुषतायें उससे निकल कर उसकी पीठ की ओर फैलती जाती हैं और दुनियाँ के सामने उसकी छाया-मूर्ति प्रकाश से उसकी दूरी के अनिश्चित अधिक अनुपात में बड़ी और अस्पष्ट होती जाती है।



ग़रीबी अस्मत की परीक्षा लेने के लिये आती है।



स्वार्थ निर्मल-परमोज्ज्वल-उन्मुक्त हृदय-भूमि पर वह दीवार स्थापित कर देता है जो विनाश कर देता क्षण में।



काव्य वही— जो कि अनुभूति-अभिव्यक्ति की चौखट में यथा-समय एक ही क्षण में आ जाए, छा जाए, कुछ पा जाए, कुछ गा जाए।



त्रिपुरारि किसी को कभी भी सरस्वती-उपासना का वरदान कदापि न दें और यदि दें ही तो सर्वप्रथम उपासक को साथ ही साथ अपना चरित्र बल सुरक्षित रखने की निर्मल-परमोज्ज्वल क्षमता भी अवश्य ही प्रदान करें।



मिलन पर आस्था की दीवार जमती भी है, उखड़ती भी।



भग्न हृदय को उच्च साहित्य-संगीत-कलाएँ ही नवजीवन प्रदान करती हैं।



सुधा-पान तो करते सब ही,
गरल-पान केवल शंकर ही !



तृप्ति से अतृप्ति सचमुच पुष्ट ही है।



ज्ञान त्यागी ही का उपयोगी सिद्ध होता है, रागी का नहीं।

❀

वेदना ही कूल होती मूल का, सखि !

❀

जिनकी भाषा स्थिर नहीं होती, अन्त तक उनका चरित्र भी स्थिर नहीं है।

❀

उपेक्षित होकर कुछ भी पाना न महत्त्वकारी ही है और न चमत्कारी ही।

❀

जो दौलत के आशिक़ होते,
उन्हें मनुज से मोह न रहता !

❀

सैद्धान्तिक को अपनी राह में रोड़ा बनकर आने वाले की पीठ पर कोड़ा लगाना ही पड़ता है।

❀

पाने से खोना उत्तम है।

❀

पौरुष कभी तटस्थ न रहता,
करता वह संग्राम सदा ही।

❀

अखण्ड मानवता को प्रकाश में लाना ही साहित्य का उद्देश्य है, समग्र मानवता की अभिव्यक्ति ही साहित्य का प्राण है। मानव प्रवाह अविकल रूपेण प्रवाहित होता जाता है, उसमें स्थिरता नहीं है, परन्तु मानव के समस्त जीवन की समष्टि यदि कहीं स्थिर रूप ग्रहण करती है तो वह साहित्य में करती है। इसीलिये साहित्य का इतना आदर है। साहित्य सार्वजनीन और सर्वकालीन मनुष्यत्व का

अक्षय भण्डार है।



कौन कहता है तुम अकेले हो ? समस्त संसार तुम्हारे साथ है। स्वानुभूति को जाग्रत करो। यदि भविष्यत् से डरते हो कि तुम्हारा पतन ही समीप है, तो तुम उस अनिवार्य स्रोत से लड़ जाओ। तुम्हारे प्रचण्ड और विश्वास-पूर्ण पदाघात से विन्ध्य के समान कोई शैल उठ खड़ा होगा, जो उस विघ्न स्रोत को लौटा देगा। राम और कृष्ण के समान क्या तुम भी अवतार नहीं हो सकते ? समझ लो, जो अपने कर्मों को ईश्वर का कर्म समझकर करता है, वही ईश्वर का अवतार है।



साधारण के बीच में यथास्थान असाधारण की योजना करना सहृदय और कला-कुशल कवि का ही काम है। साधारण, असाधारण, अनेक वस्तुओं के मेल से एक विस्तृत और पूर्ण चित्र संघटित करने वाले ही कवि कहे जाने के अधिकारी हैं। साधारण के बीच में ही असाधारण की सत्ता है। अतः केवल वस्तु के असाधारणत्व या व्यंजन प्रणाली के असाधारणत्व में ही काव्य समझ बैठना अच्छी समझदारी नहीं।



ऐसे चरित्र व्यवहार-कुशल नहीं होते, उनकी सरलता उन्हें सांसारिक विषयों में धोखा देती है, लेकिन काइयेंपन से ऊबे हुए प्राणियों को ऐसे सरल, ऐसे व्यवहारिक ज्ञान-विहीन चरित्रों के दर्शन से एक विशेष आनन्द होता है।



रुद्र का शृङ्गीनाद, भैरवी का ताण्डव-नृत्य और शस्त्रों का वाद्य मिलकर भैरव संगीत की सृष्टि होती है। जीवन के अन्तिम दृश्य

को जानते हुए, अपनी आँखों से देखना, जीवन-रहस्य के चरम-सौन्दर्य की नग्न और भयानक वास्तविकता का अनुभव केवल सच्चे वीर-हृदय को होता है। ध्वंसमयी महामाया प्रकृति का वह निरन्तर संगीत है। .... अत्याचार के श्मशान में ही मंगल का, शिव का, सत्य सुन्दर संगीत का समारम्भ होता है।



जीवन में काम करना श्रम से रोटी का उपार्जन करना और शिव का नाम लेना, यही गौरव है। इसी में जीवन की सार्थकता है। भीख माँग कर खाना, छल, कपट, पाखण्ड से अज्ञानियों की श्रद्धा का संग्रह करते रहना यही सबसे बड़ा पाप है। पूर्व जन्म ने सबके लिये काम को प्रधान कर रखा है। पूर्व जन्म के सब दुःख और कष्ट श्रम की गायत्री से कट जाते हैं।



संकल्प और भावना जीवन-तखड़ी के दो पलड़े हैं। जिसको अधिक भार से लाद दीजिये वही नीचे चला जायगा। संकल्प कर्त्तव्य है और भावना कला। दोनों के समान समन्वय की आवश्यकता है। न तो अभी कला का अंश पूरा हुआ है और न कर्त्तव्य का।



भयानक समस्या है। मूर्खों ने स्वार्थ के लिये साम्राज्य के गौरव का सर्वनाश करने का निश्चय कर लिया है। सच है वीरता जब भागती है, तब उसके पैरों से राजनीतिक छल-छन्द की धूल उड़ती है।



अमात्य, तुम गौरव किसे कहते हो? वह है कहीं? रोग-

जर्जर शरीर पर अलंकारों की सजावट, मलिनता और कलुष के ढेर पर वाहरी कुंकुम केसर का लेप गौरव नहीं बढ़ाता।



कलाकार मानव मूर्तियों में भाव का प्रवेश नहीं करता, बल्कि भावों की मानव-मूर्तियों को पार्थिव दृश्यों में उपस्थित करता है। जिन दृश्यों को मनुष्य प्रायः अपने जीवन में देखता है उनकी प्रतिकृति उसका कार्य नहीं है, बल्कि एक नई सृष्टि रचना उसका कार्य है। उसे एक दूसरा विधाता ही समझिये।



बात का तत्त्व समझना हरएक का काम नहीं है और दूसरों की समझ पर आधिपत्य जमाने योग्य बात घड़ सकना ऐसों वैसों का साथ नहीं है। बड़े बड़े विज्ञवरों तथा महा-महा कवीश्वरों के जीवन बात ही के समझने और समझाने में व्यतीत हो जाते हैं।



समय-सागर में एक दिन सब संसार अवश्य मग्न हो जायगा। कालवश शशि सूर्य भी नष्ट हो जायेंगे। आकाश में तारे भी कुछ काल पीछे दृष्टि न आवेंगे। केवल कीर्ति-कमल संसार-सरोवर में रहे वा न रहे, और सब तो एक दिन तप्त तवे की बूंद बने बैठे हैं।



शिष्टाचार संसार का बहुधा ऊपरी व्यवहार है। परन्तु सदाचार हृदय की सात्विक वृत्ति से उत्पन्न होता है। शिष्टाचार का आधार लोगों का पारस्परिक संतोष और सुभीता है पर सदाचार का अवलम्बन धर्म पर है।



पुस्तकों के हम सब बड़े ऋणी हैं। वे अध्यापक हम को बिना

दण्ड लकुट प्रहार के, विना कुटिल शब्द कहे या क्रोध किये और बिना द्रव्य लिये हुए ही शिक्षा दे सकते हैं। यदि आप इनके सन्निकट जाइये तो वे सोते न मिलेंगे, यदि आप जिज्ञासु हैं और इनसे प्रश्न करते हैं तो वे आपसे कुछ परोक्ष न रखेंगे, यदि आप इनके रूप को यथार्थ न समझिये तो वे भुनभुनायेंगे नहीं, यदि आप अज्ञानी हैं तो वे आपकी मूर्खता पर हँसेंगे नहीं। इसलिये बुद्धि तथा ज्ञान से पूर्ण पुस्तकालय इस लोक की समस्त सम्पत्ति से बहुमूल्य है और किसी वस्तु की तुलना उससे नहीं की जा सकती। सच तो यह है— यदि कोई सत्य, आनन्द, धर्म व विज्ञान को जानना चाहता है तो उसे निश्चय ही पुस्तकों से प्रेम करना चाहिये।



परिष्कार के विना जैसे बहुमूल्य हीरा भी व्यर्थ होता है वैसे ही शील के बिना ज्ञान।



पावस देखि रहीम मन, कोयल साधी मौन।
अब दादुर वक्ता भये, हम कंह पूछत कौन॥



दुनिया देखती है कि अमुक आदमी ने जीवन में कितनी सफलता पाई, कितना पद और कितनी प्रतिष्ठा, पर कोई यह नहीं देखता कि उसने साधना कितनी की, वह तपा कितना और उसने अपनी इयत्ता का कितना परिहार किया, जब कि देखा यही जाना चाहिये।



जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग॥



समय पर काम न करने वाला मनुष्य अपने तथा दूसरों, दोनों के कष्ट का कारण होता है। ऐसा मनुष्य अपनी चीजें उचित स्थान पर कभी न रखेगा, न जो करना है उसे उचित समय पर करेगा। वह सदा जल्दी में रहता है और अन्त में अपना समय और सुयश दोनों खो बैठता है। एक कहावत है जिस में कहा है, 'समय उड़ा जाता है और कभी लौटाया नहीं जा सकता।' यह बिल्कुल सत्य है। खोई हुई वस्तु फिर पाई जा सकती है, परन्तु खोया हुआ समय फिर हाथ नहीं आ सकता। समय रुपया पैसा या किसी और चीज़ से अधिक मूल्यवान् है। वास्तव में समय स्वयं जीवन है और समय पर काम न करने वाला मनुष्य सदा समय का, जो कि उसकी सबसे मूल्यवान् सम्पत्ति है, नाश करता रहता है।



एक दार्शनिक का कथन है— "मुझे न तो अमीरी चाहिये और न ग़रीबी। हमारी आमदनी हमारे जूतों की तरह होनी चाहिये। यदि जूता छोटा होता है तो वह काट लेता है और यदि बड़ा होता है तो हम ठोकर खा जाते हैं।"



एक महात्मा कहते थे— जुए से बचो ! क्योंकि—

इससे समय ख़राब होता है।
इज़्ज़त ख़राब होती है।
तन्दुरुस्ती ख़राब होती है।
मिज़ाज ख़राब होता है।
ख़ानदान ख़राब होता है।

ईमान ख़राब होता है।
जहान ख़राब होता है।



जिसे सन्देह है उसे कहीं भी ठिकाना नहीं। उसका नाश निश्चित है। वह रास्ते चलता हुआ भी नहीं चलता क्योंकि वह जानता ही नहीं कि मैं कहाँ हूँ।



जो बाहर से खूब साफ है और अन्दर से मैला है, वह नरक के दरवाज़े की चाभी हाथ में लिये हुए है।



संसार में सबसे निर्धन वह है जिसके पास केवल धन है।



जब तुम श्रम करते हो तो तुम एक बन्शी होते हो, जिसके अन्तर से निकल कर क्षणों की काना-फूसी संगीत बन जाती है।



मित्र क्या ऐसी वस्तु है जिसे तुम समय की हत्या करने के लिये खोजते हो? सदैव समय को सजीव करने के लिये उसे खोजो।



एक मनुष्य की दर्शन-शक्ति दूसरे को अपने पंख नहीं दे सकती।



किसी न किसी यज्ञ के बिना राष्ट्र खड़ा नहीं रह सकता।



स्वयं जीना व्यक्ति का अधिकार है किन्तु समाज को जीवन देना उसका कर्त्तव्य है।



सामाजिक जीवन की पहली शर्त है त्याग, और त्याग की पहली शर्त है कर्त्तव्य अनुभव। समाज के बिना एक व्यक्ति कोई अस्तित्व नहीं रखता।



विचार के लिये इकट्ठा होना ही संगठन कहलाता है।



चरित्र आदतों का समूह है।



चरित्र दो चीजों से बनता है— एक आपकी विचार धारा से, दूसरे आपके समय बिताने के ढंग से।



एक बड़ी मछली छोटी मछली को निगलने चली। तब छोटी मछली चिल्लाई— 'यह तो बड़ा अत्याचार है।' बड़ी मछली ने कहा— "अच्छा, तू ही मुझे निगल जा।' छोटी मछली ने बहुत प्रयत्न किया, किन्तु वह उसे नहीं निगल पाई। तब निराश होकर बोली— 'अच्छा, तू ही मुझे निगल जा।'



एक माँ और उसकी बेटी सोते-सोते स्वप्न में बोल रही हैं। माँ कहती है— 'तूने मेरे सौन्दर्य और स्वास्थ्य को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला है। तू मर जा।' बालिका कहती है— 'तू ने मेरे सारे गुणों को अपने अवगुणों से ढक लिया है। तू मर जा।' इतने में दोनों जाग उठती हैं और एक दूसरे के गले से लिपट जाती हैं।



एक बार छतरी ने मस्तक से कहा—'तुम स्वच्छन्द रूप से घूमा करते हो। तुम्हारी सारी धूप और वर्षा मुझे सहन करनी पड़ती है।

मैं यह सहन नहीं कर सकती। तुम्हीं बताओ कि यदि तुम मेरे स्थान पर होते, तो क्या करते ? मस्तक ने नम्रतापूर्वक कहा—'मस्तक ही की विभूति से इस वसुन्धरा की शोभा है। मैं इसे अपना अहोभाग्य समझूँगा यदि ऐसे मस्तक की रक्षा का भार मुझे प्राप्त हो।'



नारी जाति की निन्दा सुनते-सुनते ईश्वर भी इतना तंग आ जाता है कि वह नारी जाति को ही मिटा देना चाहता है। किन्तु इसके पहले वह संसार के सब विद्वानों का मतामत सुन लेना चाहता है। इसलिये वह सब विद्वानों को आमन्त्रित करता है। स्वर्ग से अरस्तू और अफलातून, शेक्सपीयर, और सुकरात सभी की आत्मायें एक के बाद एक स्त्री जाति के विरुद्ध अपना अपना मत प्रकट करती हैं। अन्त में कांटों का मुकुट और रक्तरंजित घावों से भूषित ईसा मसीह आते हैं और एक ही वाक्य में सब का मुंह बन्द कर देते हैं। वे उनसे पूछते हैं— 'आप लोगों की माता थी या नहीं ?'



सत्य वचन मेरी सब ओर से रक्षा करता है।



दुष्ट मन किये हुये उपकार को भी नष्ट कर देता है।



यह पृथ्वी जन की धात्री है। जन की भाषायें अनेक और उनके धर्म अनेक हैं। इस अनेकता में जीवन का एक वरदान छिपा है, यदि हम उसको बुद्धिपूर्वक समझ सकें।



यही सत्य से भरा वेदज्ञान है कि जिस लाभ से हमारा सम्बन्ध हो, वह स्वाभिमानी व्यक्ति के मार्ग से हमारे पास तक पहुँचे, भिखमंगे या लुटेरे के मार्ग से नहीं।



श्रद्धा के बल पर मनुष्य कोई विशिष्ट कार्य नहीं कर सकता, पर श्रद्धा के बिना कोई कार्य होना सम्भव भी नहीं।



जिस को संसार में सफल होना है, उसे अपनी कल्पना को कृति में अवतरित करना चाहिये, विचार को आचार में परिणत करना चाहिये। व्यवहार ही सच्चे अर्थों में काव्य अथवा दर्शन की वास्तविक कसौटी है।



पुरानी इमारतों के टूट जाने पर फिर उनका उसी अपने पुराने रूप में निर्माण करना मृत को पुनर्जीवित करना है। उनकी सुदूर प्राचीनता का मूल्य उनके खण्डहरों में है।



दुख एक प्रकार का छूत का रोग है। हम अगर लटका हुआ मुंह लेकर किसी से मिलें तो उसका उल्लास कम हो जाता है।



मूर्ख अपने आप को अपनी झूठी प्रशंसा से खुश करते हैं, बुद्धिमान बेवकूफों को उनकी झूठी प्रशंसा से खुश रखते हैं।



हमें उन ग़रीब अमीरों पर तरस आना चाहिये जो आलीशान पुस्तकहीन भवनों में बंजर जीवन व्यतीत करते हैं। हमें ग़रीबों को बधाई देनी चाहिये कि हमारे युग में किताबें इतनी सस्ती हो गई हैं

कि कोई भी आदमी अपने निजी पुस्तकालय में हर वर्ष सौ किताबें और बढ़ा सकता है, उतने ही खर्चे में जितना वह प्रति वर्ष तमाखू और शराब पर करता है। क्लर्कों, मजदूरों और कारीगरों में जो कि कुछ नहीं से कुछ बनने के लिये संघर्ष कर रहे हैं, उठने वाली सबसे पहली आकांक्षा अपने एक पुस्तकालय बनाने की और उसमें निरन्तर बढ़त करते रहने की होती है। एक छोटा पुस्तकालय जो हर साल बढ़ता जा रहा हो, किसी नौजवान के इतिहास का सबसे अधिक सम्माननीय अंश है। पुस्तकें खरीदना हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है। पुस्तकालय रखना फिजूल की चीज़ नहीं है, यह जीवन की आवश्यकताओं में से एक है।



जिस प्रकार प्रत्येक मनुष्य अज्ञान के कारण अपने जगत् और दुःख का निर्माण स्वयं कर लेता है, उसी प्रकार वह ज्ञान के द्वारा स्वयं संसार-वैराग्य, क्लेशों का अन्त, निर्वाण भी प्राप्त कर लेता है। जो लोग सुबुद्धि, दूरदर्शी और विचारशील हैं, जो नियमों पर उचित विचार करते हैं और विषय-सुखों की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखते, निर्वाण की प्राप्ति में उन लोगों को कुछ भी बाधा नहीं होती।



मार्क्स का यह कहना है कि जब साम्यवाद पूरी तरह सफल हो जायगा तो शासक-तन्त्र का कुछ काम नहीं रह जायगा, वह अपने आप सूख जायगा। अराजकवादी का अर्थ ही यह है कि हर एक आदमी जो चाहे कर सकता है। मैं मानता हूँ कि शासक-तन्त्र तो रहेगा ही मगर वह शासक-तन्त्र ऋषियों की हुकूमत होगा। प्राचीन काल में तो लोग ऋषियों को मानते ही थे। आधुनिक

काल में ऋषि का अर्थ उस व्यक्ति से है जो सबसे अधिक सुशिक्षित, सेवाभावी, सेवा की योग्यता रखने वाला हो। ऐसा पुरुष अपने आप सत्ता लेकर नहीं बैठ जायगा। मगर लोग स्वयं समझ लेंगे कि उसके बिना काम नहीं चलेगा और उसे सत्ता सौंप देंगे।



यह स्वाभाविक है कि लेखक को जीने के लिये जीविका का भी अर्जन करना होता है। लेकिन उसके जीवन और लेखन का एकमात्र ध्येय जीविकोपार्जन ही नहीं हो जाना चाहिये। .... लेखक अपनी कृतियों को किसी प्रकार भी साधन मान कर नहीं चलता। वे तो अपने आप में उसके लिये साध्य हैं, और उसके अपने लिये और दूसरों के लिये उतनी कम मात्रा में साधन हैं कि वह अपनी कृतियों के वास्ते अपने अस्तित्व का भी बलिदान करने के लिये तैयार रहता है। .... जो लेखक भौतिक लाभ के लिये लेखन को अपवित्र करता है वह अपनी आन्तरिक गुलामी के लिये दण्डनीय है। बाहरी गुलामी के रूप में सेंसर तो वैसे ही विद्यमान है।



सब से बड़ा काम जो कला कर सकती है, वह यह है कि हमारे सामने शरीफ इन्सान की सही तसवीर पेश करे।



कला मुझे उसी अंश तक स्वीकार्य है जहाँ तक वह मंगलकारी हो।



अपूर्ण, अनिश्चित या जीर्ण शीर्ण परम्पराओं का अनुकरण मनुष्य क्यों करता है?

इसलिये कि वह नये की दिक़्क़त से बचे, पर यह तो साफ तौर पर एक ख़तरे की दूसरे खतरे से अदल बदल है।



जो लोग हमारी बातों को दोहराते हैं और हमारे कामों की नक़ल करते हैं, वे सब से बड़े खुशामदी हैं।



एक दिन प्रभात वेला में एक चक्षुहीन बाला कमल-पत्र में पुष्प-हार रख कर मेरे पास लाई।

मैंने वह हार गले में डाल लिया और आंखों में आंसू भर अन्धकार में खड़ी बालिका से कहा, 'तू भी अपने पुष्पहार के समान ही है बाले। यह भी अपने रूप से अनजान है और तू भी अपने सौंदर्य सुवास से अनजान।'



यदि शरद आगया है, तो बसन्त भी दूर नहीं है।



तीन तभी एक बात को गुप्त रख सकते हैं जब उनमें से दो मर चुके हों।



विश्व में केवल एक मन्दिर है और वह है मानव-देह। इससे अधिक पवित्र कोई वस्तु नहीं।



अपने बारे में स्वयं लिखना मुश्किल भी है और दिलचस्प भी, क्योंकि अपनी बुराई लिखना खुद हमें बुरा मालूम होता है और अगर अपनी तारीफ करें तो पाठकों को उसे सुनना नागवार होगा।



इतिहासकार या जीव-विज्ञान-शास्त्री के अभाव में अनेक जातियों, धर्मों, भाषाओं और सभ्यताओं के अवशेष भी शेष नहीं रहे— ठीक उसी प्रकार कला के क्षेत्र में भी सही आलोचना और मूल्यांकन के अभाव में कितने ही जीवन और कृतियाँ अनजानी ही पड़ी रह जाती हैं।



साहित्य में सुनीति-दुर्नीति की आलोचना से पत्रिकाओं में कितनी ही कठोर बातें खड़ी हो गई हैं और आज अचानक 'रस' की आलोचना में कटु रस ही प्रधान हो गया है। देवता के मंदिर में सेवकों की जगह 'सेवायतों' की संख्या बढ़ते रहने से देवी के भोग की मात्रा बढ़ने के बजाय घटती ही रहती है।



मनुष्य के अन्तर्मन में एक देवता छिपा होता है— वह विश्व की देवत्व भावना में निरन्तर रूप से लवलीन है। सत्साहित्य का यही प्रयोजन है कि वह उस मन के देवता को सफलता से अभिव्यक्त कर सके और अमूर्त देवता को मूर्त बना सके।



विश्वास के सुदृढ़ मंच के पाये दर्प की दीमक से खाये जाते हैं।



अल्लाह शबे हिज्र* दोबारा न दिखाये।
पहरों तो मुझे याद तेरा नाम न आया॥



संसार में कूटनीति ही सब से बड़ी नीति है। जहां कोई अस्त्र

* वियोग की रात।

काम नहीं करता, जहां बल-विक्रम की पहुँच नहीं, जहां साम, दाम, दण्ड नीतियों की समाप्ति है; वहां भेद और कूटनीति ही फल देती है। यह विश्वास के आसन पर बैठ कर, छल की पोशाक पहनकर, प्रेम और दिखावे का मुकुट पहने हुए बलियों पर शासन करती है। जहाँ मौन व विवेक की पहुंच नहीं, उन दुर्गम शिखरों पर इसका राज्य है।



बाग़बाँ ने आग दी जब आशियाने* को मेरे।
जिन पै तकिया था वही पत्ते हवा देने लगे॥



मैंने एक सम्भ्रान्त महिला को जब देखा तो एक वर्ष पूर्व की उनकी आकृति आंखों में नाच उठी। मैंने अत्यन्त जिज्ञासु होकर पूछा, "देवि, तुम्हारा वह अनिन्द्य सौन्दर्य और लावण्य क्या हुआ ?"

देवी ने अत्यन्त स्वाभाविक मुद्रा से कहा, "वह सौंदर्य कितना बोझिल था ? जब मुझ से संभल न सका तो मैंने उसमें से थोड़ासा भाग एक दूसरे प्राणी को दे दिया।" और उनके नेत्र उस ओर उठ गये जहाँ पालने में एक सुकुमार शिशु किलकता हुआ हवा में अपने पैर फेंक रहा था। मैंने देखा कि उल्लास से पुलकित नेत्रों में आज भी वही छवि नाच रही है।



मैं नहीं चाहता चिर-सुख, चाहता नहीं अविरत-दुख;
सुख-दुख की खेल मिचौनी, खोले जीवन अपना मुख।
सुख-दुःख के मधुर मिलन से, यह जीवन हो परिपूरन;
फिर घन में ओझल हो शशि, फिर शशि से ओझल हो घन।

*घोंसला, झोंपड़ा।



इसकी लोक-हितकारिणी शक्ति को स्वीकार करने में किसी को आगा-पीछा नहीं हो सकता। सामाजिक महत्त्व के लिये आवश्यक है कि या तो आकर्षित करो या आकर्षित हो। जैसे इस आकर्षण-विधान के बिना अणुओं द्वारा व्यक्त पिण्डों का आविर्भाव नहीं हो सकता, वैसे ही मानव जीवन की विशद अभिव्यक्ति भी नहीं हो सकती।



बे तुम्हारे मैं जी गई अब तक।
तुमको क्या खुद मुझे यकीन नहीं॥



मुझमें पुरुष की अपेक्षा प्रकृति की अभिव्यक्ति की मात्रा अधिक है, इसलिये मैं स्त्री हूं। तुझ में प्रकृति की अपेक्षा पुरुष की अभिव्यक्ति अधिक है इसलिए तू पुरुष है। यह लोक की प्रज्ञप्ति-प्रज्ञा है, वास्तव सत्य नहीं। ऐसी स्त्री प्रकृति नहीं है, प्रकृति की अपेक्षाकृत निकटस्थ प्रतिनिधि है और ऐसा पुरुष प्रकृति का दूरस्थ प्रतिनिधि है।



कफस में मुझसे रूदादे* चमन कहते न डर हमदमां†।
गिरी है जिस पै कल बिजली वो मेरा आशियां क्यों हो॥



शब्दों से कर्म अधिक बोलते हैं।



* बात, हाल।
† साथी, चिड़िया।

दिल ही तो है न संगो खिश्त* दर्द से भर न आये क्यों।
रोयेंगे हम हज़ार बार, कोई हमें सताये क्यों॥



यदि बीता कल एक स्वप्न था तो हमें आशा करनी चाहिये कि आने वाला कल एक मनःसृष्टि लायगा।



क्या ढूंढती है बाग में मेरे तू ऐ खिज़ां† ।
तू जानती है सबके चमन में बहार है॥



हम अपना भाग्य स्वयं निर्माण करते हैं और उसे नियति कहते हैं।



जिन्दगानी की हक़ीक़त से नहीं हम वाक़िफ़।
मौत का नाम जो सुनते हैं तो मर जाते हैं॥



जब तुम स्वर्ग में पहुँचोगे तो बहुत सम्भव है कि तुम वहाँ पर कई ऐसे प्राणी देखोगे जिनकी उपस्थिति से तुम्हें धक्का पहुँचेगा। लेकिन तुम बिल्कुल शान्त रहना, यहाँ तक कि घूरना भी नहीं, क्योंकि निस्सन्देह कई व्यक्तियों को तुम्हारी उपस्थिति धक्का पहुँचायगी।



थमते थमते थमेंगे आँसू।
रोना है यह हँसी नहीं है॥



* पत्थर का टुकड़ा।
† पतझड़।

पुरुष पहले आया या स्त्री ? धर्मशास्त्र हमें यह बताते हैं कि पुरुष पहले आया और उसका एकाकीपन दूर करने के लिये स्त्री उत्पन्न की गई जो विश्वकर्मा की अन्तिम और सुन्दरतम कृति है। इसमें कोई शक नहीं कि स्त्री पुरुष के ऊपर उन्नति है। स्त्री को स्पष्ट कटानों तथा कोमल परिष्कृति के साथ जलधारा-सम देह मिली है।



मेरे आशियाने के थे चार तिनके।
चमन लुट गया, आँधी आते आते ।।



नारियां घर की अपेक्षा बाहर अपने को अधिक अनुरूप बनाने का प्रयत्न करती हैं।



ख़ारोख़स* जमा करें, नाम नशेमन† रख दें।
जिसको मंजूर हो गुलशन को बियाबां करना ।।



उनके पैर मत छुओ जो अपने को पीर व गुरू कहते हैं और भीख मांगते फिरते हैं। जो अपने श्रम का फल दूसरों के साथ बांट कर खाते हैं वे ही जीवन् का सच्चा मर्म समझे हैं और गुरू होने के उपयुक्त हैं।



दिल को जा दादये‡ बहार किया।
यों ख़िज़ां को गले का हार किया ।।



* तिनके।
† घोंसला।
‡ अर्पण।

मुझे एक स्त्री के अतिरिक्त कोई नहीं मिली जिसे सोना पसन्द न हो— और उसे हीरे पसन्द थे।

❀

जिगर के दाग जब सीने प हमरंगे चिरागां हों।
यही अहदे गुलामी में गुलामों की है दीवाली॥

❀

शादी खतरनाक चीज है लेकिन एकाकी वृद्धावस्था उससे भी अधिक।

❀

तरीक़े अहले दुनिया है शिला शिकवा जमाने का,
नहीं है जख्म खा कर आह करना शाने दुरवेशी।
अपनी दुनिया आप पैदा कर अगर ज़िन्दों में है।

❀

मगर हसरत है जवानी के उस निखार पर जो बहार के दिन आँखों से आँसू बनकर बह चला।

❀

दिल का धुआं उठकर आँखों के आँसू हो गया।

❀

इस संसार में हरेक को मौत का सामना कभी न कभी करना ही पड़ता है। लेकिन संघर्षों से लड़ते हुये मरने के बराबर और कौन मौत ज्यादा बहादुरी की हो सकती है? वह मनुष्य जो अपने पूर्वजों की संस्कृति और अपने आदर्शों के देवता के लिये मरता है वही सच्चा शहीद है।

❀

शाम से कुछ बुझा सा रहता है।
दिल हुआ है चिराग़ मुफ़लिस का॥



एक सात वर्ष की लड़की से पूछा गया कि अभिमान और अहंकार में क्या अन्तर है। उसने कुछ सोचकर कहा कि अभिमान के अर्थ हैं, 'तुम मुझे क्या समझते हो?' और अहंकार के, 'मैं तुम्हें कुछ नहीं समझता।'



महफ़िले यार से उठने को उठे तो लेकिन,
दर्द की तरह उठे, गिर पड़े आँसू की तरह ॥



जो व्यक्ति कलाकारिता के स्वप्न देखता है, फिर भी सोचता है कि उसे दूसरा कोई कलाकार बना देगा, तो उसकी कला निश्चय ही अति सामान्य स्तर को प्राप्त कर रह जायगी। आपको सफलता अपने बूते पर प्राप्त होगी। चलो, आगे बढ़ो, क्षेत्र में कूद पड़ो। चीं चीं मत करो। मुझ से या किसी से मत पूछो कि हम तुम्हारी चीज़ को कैसी समझते हैं। अपने मन में एक विश्वास बना लो कि तुम्हारी रचना अन्य किसी भी लेखक के टक्कर की है। उसे श्रेष्ठतम बनाने में इतने तल्लीन हो जाओ कि दूसरे की रचना से तुलना करने का अवसर ही नहीं मिले, ऐसा विचार ही तुम्हारे दिमाग़ में न आने पाये।



इन्तहाये लागरी* से जब नज़र आया न मैं।
हँस के वो कहने लगे बिस्तर को झाड़ा चाहिये ॥



लक्ष्मी कमल पर निवास करती हैं, शिव हिमालय पर तथा

* विरहावस्था।

विष्णु क्षीर सागर में, सो केवल खटमल के भय के कारण।

❀

बन्द हो जाती हैं सैयारों* की आंखें खौफ से।
फेंकता हूँ जब मैं दिल से आहे आतिशबार को॥

❀

स्पष्ट बोले शब्द के अर्थ को पशु भी समझ लेता है। आदेश सुन घोड़े तथा हाथी भी चल देते हैं। पण्डित आदमी तो बिना कहे हुए ही समझ जाता है। बुद्धि का फल यही है कि दूसरे के इशारे को भी जान ले।

❀

तारे तो ये नहीं मेरी आहों से रात की,
सूराख पड़ गये हैं तमाम आस्मान में॥

❀

मनुष्य अपने ही कर्मों से नीचे उतरता या ऊपर चढ़ता चला जाता है, जैसे कुआं खोदने वाला नीचे उतरता जाता है और क़िले की दीवार बनाने वाला ऊपर चढ़ता जाता है।

❀

समुन्दर कर दिया नाम उसका नाहक़ सबने कह कह कर।
हुये थे जमा कुछ आँसू मेरी आंखों से बह बह कर॥

❀

प्राणी को ख़तरे में आनन्द आता है। लेकिन मृत्यु में नहीं। हम ख़तरे का वरण करते है, लेकिन अन्त में असली आनन्द उससे निकल भागने में ही आता है।

❀

* नक्षत्रों।

न करता ज़ब्ता मैं नाला तो फिर ऐसा धुवाँ होता ।
कि नीचे आसमां के यक नया और आसमां होता ॥

❀

मनुष्य का दिल स्पंज के समान होता है जो सब प्रकार का पानी सोख लेता है।

❀

मुझ ज़ुल्फ के मारे को न जंज़ीर पहनाओ ।
काफ़ी है मेरी क़ैद को यक मकड़ी का जाला ॥

❀

मैं पति होने वालों की सूची पर हूँ । तुम इनके केवल वास्तविक पति हो, लेकिन मैं अगला पति हूँ। तुम निराशा हो, मैं उत्कण्ठा हूँ ।

❀

क्या नज़ाकत है कि आरिज़* उनके नीले पड़ गये ।
हमने तो बोसा लिया था ख्वाब में तस्वीर का ॥

❀

तुम्हारी पड़ौसी की पत्नी तुम्हारी अपनी पत्नी से सर्वदा अधिक सुन्दर होती है ।

❀

शब† को किसी के ख्वाब में आया न हो कहीं ।
दुखते हैं आज उस बुते नाज़ुक बदन के पांव ॥

❀

* गाल ।

† रात ।

जहाँ गोलियाँ भी निष्फल होती हैं, वहाँ नारियां सफल होती हैं।



दोस्तों से इस क़दर सद्मे उठाये जान पर।
दिल से दुश्मन की अदावत का गिला जाता रहा॥



आनन्दमय आश्चर्य जीवन के लिये उतने ही आवश्यक हैं जितने कविता के लिये।



कुरूप वास्तविकताओं के ऊपर एक गुलाबी परदा चित्रित करने के लिये जीवन एक तीखा समर है।



मृत्यु से घृणा करना साहस का काम है, लेकिन जहाँ जीवन मृत्यु से भी अधिक भयानक हो वहाँ जीने की हिम्मत करना सबसे बड़ा साहस का काम है।



निन्दक नियरे राखिये, आंगन कुटी छवाय।
बिन साबुन, पानी बिना, निर्मल करे सुभाय॥



यह बात नहीं कि मनुष्य के अन्य विचार नहीं उठते। सोचते समय प्रत्येक शेखचिल्ली से प्रतियोगिता करता है। लेकिन पेट भरने की समस्या इतनी टेढ़ी है कि उसे इन कामनाओं को पूरी करने का अवसर नहीं मिलता।



मनुष्य के पास जितना अधिक पैसा होता चला जाता है उतनी

वह मनुष्यता खोता रहता है।

❀

ईश्वर मनुष्य के साथ कैसी आँखमिचौनी खेलता रहता है!

❀

निराशा के भाव पर विजय पाने के लिये तथा भविष्य में एक नई आशा पाने के लिये विश्वास का होना आवश्यक है।

❀

निर्धन होना सौभाग्य है, भगवान् का प्यारा होना है; धनी होना अभिशाप है— यह प्रत्येक धर्म बताता है क्योंकि वह अमीरों का गुलाम होता है, उनके हाथ में ग़रीबों को लूटने के लिये एक खिलौना होता है।

❀

फरिश्ते बेचारे जब पृथ्वी पर आते हैं तो उन्हें पंख कटवाने पड़ते हैं।

❀

सर्वदा ठीक राह पर चलो, यह कुछ को कृतज्ञ करेगा और शेष के आश्चर्य-चकित कर देगा।

❀

दुनिया एक दर्पण है जिसमें जैसी शक्ल बनाकर तुम देखोगे वैसा ही तुम्हें सारा संसार नज़र आयगा।

❀

वह जीवन को दर्शन बनाने का प्रयत्न करता है लेकिन जीवन उसकी खिल्ली उड़ाता है।

❀

एक मनुष्य का लक्ष्य उसकी पहुँच से बाहर होना चाहिये,
नहीं तो स्वर्ग किस का नाम है?



स्त्री और पुरुष में पुरुष पहले आकर्षित होता है पर अशुद्ध भाव से।



अधिक सन्तान उत्पन्न करना समाज के प्रति गहन अपराध है।



कोई दुर्घटना हो जाने पर पहले की गई सहानुभूतियों से दिल भर आता है। लेकिन फिर सहानुभूति के शब्दों को सुनते सुनते मनुष्य ऐसा कटु हो जाता है कि वह सहानुभूति करने वालों को अपना मूर्ख बनाने वाला समझता है और उनकी बातों पर उपेक्षा से हँस देता है।



दुनिया में जिन्दगी के एक पहलू से किसी आदमी का चरित्र, गुण आदि जांचना पागलपन है।



साथ में रखे बरतन खड़कते हैं। प्राणी अपने सबसे प्रिय साथी से ही सबसे अधिक लड़ता है।



सितारों के झुण्ड आकाश के साहित्य हैं। प्रसिद्ध पर्वत और महान् नदियाँ पृथ्वी के साहित्य हैं। .... हवा चलती है और मेघ अपने रंग बदलते हैं, तब हमारे सामने एक ब्रोकेड का नमूना होता है। पाला आता है और पत्तियाँ गिरती हैं, तब पतझड़ का रंग ढंग हमें पता चलता है। ये तो हमारे निर्माता, उस महान् कलाकार, की तूलिका के कुछ सरल तथा स्वच्छन्द वार हैं।



जीवन ही हारने का दूसरा नाम है। यदि मनुष्य जीतता रहे तो वह अपने जीवन में कुछ न कर सके।

❀

मनुष्य स्वयम् को नहीं समझ पाता, वह दूसरों को क्या समझेगा ?

❀

मेरा दीपक दोनों सिरों से जल रहा है,
वह पूरी रात्रि नहीं जल पायगा।
फिर भी, ओह ! मेरे शत्रुओ और मित्रो !
यह कितना सुन्दर प्रकाश दे रहा है !

❀

मैं अपने देशवासियों से कहना चाहता हूँ कि गुलामी दुनिया का सबसे घिनौना पाप है। कभी न भूलो कि अत्याचार करने से अत्याचार सहना बड़ा पाप है। मत भूलो कि मनुष्य का जीवन इसी लिये है कि अत्याचार के विरुद्ध लड़े।

❀

मक़तबे इश्क़ का दस्तूर निराला देखा।
उसको छुट्टी न मिली जिसने सबक़ याद किया।

❀

प्रत्येक श्वास से कुछ न कुछ निर्माण करने का नाम ही जीवन है।

❀

कहते हैं कि जीवन बुदबुदा है, अथवा बहता दरिया, अथवा ढलता सूरज, या सुहाना सपना, या आंधी का झोंका। किन्तु मैं कहता हूँ कि जीवन इनमें से कुछ भी नहीं। मानवता से परिचय करना ही जीवन है।



आत्मा की पहचान ही जीवन की पहचान है।



जिस प्रकार दो मेघों के संयोग का परिणाम बिजली का उत्पन्न होना होता है; ठीक इसी प्रकार दो प्रेमों के संयोग से जीवन का निर्माण है।



अपने दुष्कर्मों का हिसाब लगा कर देखो तो सही कि जीवन-निर्माण में कितनी देर है ?



केवल शृङ्गार करने से ही नहीं वरन् कुछ न कुछ सोचते रहने एवं ठोस कल्पना करने से जीवन में रंगीनी आती है।



केवल किसी का मुसकराना लोग सुखी जीवन का परिचायक समझते हैं। तनिक उस मुसकराहट के पर्दे के पीछे तो झांको। क्योंकि सुन्दर वस्त्रों में सीने के घाव छिपे रहते हैं।



धरती को नापो, तोलो और उसका मूल्यांकन करो। जितना नाप, जितना तोल और जितना मूल्य धरती का होगा, वही नाप, तोल एवं मूल्य जीवन का है।



एक नींबू, एक अंगूर, एक आँवला, एक कच्चा आम लो। इनमें से जो सब से अधिक खट्टा निकलेगा वही इस युग का जीवन है।



कलाकार कभी नहीं मरता। अपनी कला कृतियों के माध्यम से

वह चिरंजीवी रहता है।



नरक के दुःख को मनुष्य सब से बड़ा दुःख भले ही कहे ; किन्तु मेरी दृष्टि में तो दरिद्रता से बढ़कर दुःख न तो कभी पहले हुआ है और न आगे ही कभी होगा।



दरिद्रता और मरण इन दोनों में से मुझे मरण पसन्द है, दरिद्रता नहीं; क्योंकि मरण में तो थोड़ा ही क्लेश होता है किन्तु दरिद्रता के दुःखों का तो कभी अन्त ही नहीं आता।



बाघ और मदमाते हाथियों से भरा जंगल अच्छा है ; पेड़ पर रह कर पत्ते, फल और जल से पेट भर लेना बुरा नहीं ; घास पर सोना तथा वृक्ष की छाल पहनना भी ठीक है ; पर अपने कुटुम्बियों में निर्धन होकर रहना अच्छा नहीं।



जिस कवि (कालिदास) ने यह कहा कि चन्द्रमा के अनेक गुणों में उसका एक दोष, कलंक, छिप जाता है उसने दरिद्रता को नहीं देखा जो करोड़ों गुणों पर पानी फेर देती है।



अन्य दोष भले ही गुणों में छिप जायें, पर दरिद्रता एक ऐसा दोष है जो करोड़ों गुणों के बीच में भी नहीं छिपता; बल्कि उन गुणों को ही छिपा देता है।



वही पहले की इन्द्रियां हैं, इनमें ज़रा भी विकलता नहीं हुई, वही नाम है, वही अकुण्ठित बुद्धि है और वचन भी वही हैं, किन्तु

आश्चर्य है कि पैसे की गर्मी निकलते ही मनुष्य क्षण भर में और का और हो जाता है।





लक्ष्मी, मेरे उलाहने को क्षमा करना— तेरी पूजा करने वाला अन्धा हो जाता है, तभी तो कमल के पत्ते के समान विशाल नैन वाले नारायण सर्प के फन की सेज पर सोते हैं।



गाढ़ अन्धकार होने पर लाये गये दीपक के समान दुःख भोगने के बाद प्राप्त हुआ सुख अच्छा प्रतीत होता है, किन्तु जो मनुष्य सुख की अवस्था से दरिद्रता में पहुँचता है वह जीवित होता हुआ भी मरे के समान है।



हमारे नरक की निचाई स्वर्ग की ऊँचाई पर निर्भर है।



दुखों के बाद सुख अच्छा लगता है जैसे धूप से तपे को तरु की छाया अधिक शीतल लगती है।



विद्या पढ़ने से पहले मनुष्य में बुद्धि आवश्यक है। अन्धे को दर्पण दिखाने से क्या लाभ ?



मौन रहे तो मूर्ख, बात करने में तेज़ तो बकवादी और पागल, क्षमाशील है तो भीरु, न सहन करने वाला हो तो अकुलीन, पास पास चलता है तो धृष्ट, दूर चलता है तो बूदम— सेवा धर्म बड़ा गहन है! योगी भी इसे नहीं समझ सकते।



तूफान मुलायम घास का कुछ नहीं बिगाड़ता क्योंकि वह झुक जाती है लेकिन उन्नतभाल खड़े वृक्ष को उखाड़ फेंकता है। महान् महान् से ही पराक्रम करता है नीच से नहीं।



नदी अपना जल स्वयं नहीं पीती, वृक्ष अपना फल स्वयं नहीं खाते, सूर्य अपने स्वार्थ के लिये नहीं दिन भर तपता। सज्जनों का जीवन ही परोपकार के लिये होता है।



लक्ष्मी चचंला क्यों न हो आख़िर बूढ़े पुरुष नारायण की युवती स्त्री है।



कार्य आरम्भ करने के पश्चात् उसमें कोई दोष दीखने पर उसे

छोड़ देना नहीं चाहिये। सब कार्यों का प्रारम्भ दोष से आवृत्त रहता है। अग्नि पूरी तरह जलने से पहले धुआं देती है।



प्रसिद्धि छाया के समान है। यदि उसके पीछे लगो तो वह आगे भागती जायगी लेकिन उससे मुंह फेर लो तो वह पीछे लग जायगी।



अकस्मात् जीवन-कानन में, एक राका-रजनी की छाया में छिपकर, मधुर वसन्त घुस आता है। सौन्दर्य का कोकिल 'कौन ?' कह कर सब को रोकने टोकने लगता है, पुकारने लगता है। फिर उसी में प्रेम का मुकुल लग जाता है, आँसू-भरी स्मृतियां मकरन्द-सी उस में छिपी रहती हैं।



तुम धुएँ के भारी समूह की ओर चातक के समान भाग रहे हो।



सज्जन ही साधू के गुणों को फैलाते हैं जैसे पवन पुष्पों की सुगन्धि को।



वो कौन हैं जिन्हें तोबा
को मिल गई फुरसत।
हमें गुनाह भी करने को
जिन्दगी कम है॥



चन्द्र से अमृत— इसमें क्या आश्चर्य है ?

❀

किस पर मरते हो मुझसे पूछते हैं।
मुझको फ़िक्रे जवाब ने मारा।।

❀

आज का कबूतर कल के मोर से अच्छा।

❀

यदि यह स्वप्न है तो भगवान् मुझे इस नींद से कभी न जगाये। और यदि यह पागलपन है तो मैं हमेशा पागल रहूँ।

❀

अधिक बोलने वाला ही बन्धन को प्राप्त होता है जैसे तोता और मैना। चुप रहने वाले बगुले को कोई नहीं बांधता।

❀

उनको चाहें, उनके चाहने वालों को भी चाहें, सो हमसे न होगा। भई उनसे कहो कि हमारा दिल वापिस कर दें।

❀

तारों के जीवन से पता लगता है कि 'आदान-प्रदान' से ही एक दूसरे का काम चलता है।

❀

अपनी सहायता खुद करने वाले लक्ष्य पर पहुँच गये लेकिन तक़दीर पर भरोसा रखने वाले तक़दीर का गिला कर रहे हैं।

❀

उन्हें है अक़्ल जो मोहताजे ग़ैर है हरदम।
मुझे है इश्क़ कि जो खुद है मुद्आ मेरा॥



संसार में अयोग्य कोई नहीं है, केवल योजक मिलना दुर्लभ है।



खल की मैत्री पूर्वार्ध की घटती छाया है तथा सज्जन की मैत्री परार्ध की बढ़ती छाया है।



मन से परितुष्ट होना चाहिये, फिर कौन निर्धन और कौन धनी!



सज्जन जलती लकड़ी के समान होता है जिसे कितना ही नीचे झुका दो फिर भी शिखा ऊपर को ही जायगी।



महापुरुष के संसर्ग में आकर बड़ा लाभ होता है। कमल के पत्ते पर पड़ा पानी मोती के समान चमकता है।



करों से बचने को लोग मरना चाहते थे, लेकिन अब मृत्यु-कर के भय से मर भी नहीं सकते।



करगस सम दुर्जन वचन
रहे सन्त जन टारि।
बिजुरी परे समुद्र में
कहा सकैगी जारि॥



दुष्ट की मैत्री और शत्रुता दोनों ही दुखदायक हैं। अंगारा गरम जलाता है तो ठण्डा काला करता है।



नदी छिछली होने के कारण भागी फिरती है। गम्भीर समुद्र स्थिर और स्थायी रहता है।



बरसात को देखते ही कोकिल मौन हो जाती है— अब दादुर वक्ता भये हैं तो हमें कौन पूछेगा।



अमृत में अमरता नहीं है लेकिन चखने वाले में है; तभी जो उसे ढूँढते हैं, उसे खोये रहते हैं।



वह स्वार्थी व्यक्ति है जो किसी योग्य युवती को विवाह-विच्छेद के सुख से वंचित रखता है।



विवाह वह प्रणय-कथा है जिसके प्रथम परिच्छेद में ही नायक का अन्त हो जाता है।



स्त्री के एक अङ्ग को भाग्य से ही कभी अवकाश मिलता है और वह है उसकी जिह्वा।



मनुष्य का भूषण सौन्दर्य, सौन्दर्य का भूषण गुण, गुणों का भूषण ज्ञान और ज्ञान का भूषण पत्नी को प्रसन्न रखने की कला है।



सफल होना भी क्या मनोरंजक अनुभव है! रोज़ नये नये रिश्तेदार मिलते हैं।



आज हम पिछले साल के कपड़े पहनते हैं, इस साल के टैक्स देते हैं और आने वाले साल के वेतन पर गुज़र करते हैं।



दुनिया में एक ही ऐसी वस्तु है, जो बुलाने पर कभी भी अवश्य आ जाती है— मुसीबत।



हम अच्छी आदतें उनसे ही सीखते हैं जिनमें वह आदतें नहीं होतीं।



प्रायः वही लोग हमें सबसे अधिक कष्ट देते हैं जो हमारे पास यह कहते हुए आते हैं— "आशा है मैं आपको कष्ट नहीं दे रहा हूँ।"



एक बड़ी कठिनाई यह भी है कि कठिनाई आने पर हम कठिन काम बन्द कर देते हैं।



सस्ती आजकल केवल एक ही चीज़ हो रही है— राजनीति।



कूटनीतिज्ञ जब कुछ नहीं कहता, तब उसके कुछ अर्थ होते हैं और जब कुछ कहता है तो उसके कुछ अर्थ नहीं होते।



कपड़े पुरुष को तो बना देते हैं, पर स्त्रियों के विषय में यह प्रकट कर देते हैं कि वह कैसी बनी है।



अपनी पत्नी के सहयोग के बिना बहुत कम लोग संसार में सफलता प्राप्त कर सके हैं।



जीवन में सुखी होने का रहस्य— किसी एक कार्य में सदैव तीर की भांति बिंधे रहना।



मौन— तिरस्कार की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति।



बुद्धिमत्ता— एक विशेष गुण, जो उन व्यक्तियों में अधिक मात्रा में होता है जो हमारी बातें ध्यानपूर्वक सुनकर उनसे सहमति प्रकट करते हैं।



उस व्यक्ति के विकास की कोई आशा नहीं, जिसने स्वयं को ही अपना चरम आदर्श मान लिया हो।



मित्र की व्याख्या (एक छोटी लड़की के शब्दों में)— एक ऐसा व्यक्ति जो आपको भली-भांति जानते हुए भी आपको चाहता है।



सुन्दर जीवन से बढ़कर कोई सजीव कलाकृति नहीं।



बातें करते समय आप वही दुहराते हैं जो आप जानते हैं, पर सुनते समय आप कुछ नई बातें सीखते हैं।



घोड़ा निस्सन्देह आदमी से ऊँचे दर्जे का प्राणी है। दस घोड़ों की दौड़ देखने आधे लाख से अधिक आदमी जमा हो जाते हैं। पर आदमियों की दौड़ देखने के लिये आज तक कहीं एक भी घोड़ा नहीं आया।





टीम टाम की ही दुनिया में क़द्र होती है। बेचारे जटाजूट-धारी नंगे भोले बाबा शंकर को सागर ने गरल दिया तथा पिताम्बर-धारी भड़कीले विष्णु को अपनी पुत्री लक्ष्मी।



अन्तस्स्वर— एक विचित्र स्वर जो प्रत्येक स्त्री को हमेशा यह बताता रहता है कि वह ठीक है चाहे वह ठीक हो अथवा नहीं।



बुढ़ापा कब आता है ? आयु मस्तिष्क का गुण है। यदि आप अपने सपनों को पीछे छोड़ आये हैं, यदि आपकी आशायें सो गई हैं, यदि आप भविष्य के प्रति लालायित नहीं हैं, यदि आपकी महत्त्वाकांक्षाएँ ठण्डी पड़ गई हैं तो जान लीजिये कि आप बूढ़े हो गये हैं।



आशावादी किसे कहते हैं ?

आशावादी उस व्यक्ति को कहते हैं जो अपने व्यवसाय में निराशावादी व्यक्ति को साझेदार बनाता है।



पड़ौसी की क्या विशेषताएं होती हैं ?

पड़ौसी हमारी बातों को हमसे अधिक जानता है।



उबलते हुए पानी में से भाप क्यों निकलती है ?

ताकि माता जी पिताजी के नाम आने वाले पत्रों को खोलकर पढ़ सकें।



वैवाहिक जीवन कैसे सुखी हो सकता है ?

पति यदि अपने दोनों कान बन्द कर लें और पत्नियाँ अपनी आँखें, तो वैवाहिक जीवन सुख से व्यतीत हो सकता है।



एक दिन सौभाग्य ने एक व्यक्ति का द्वार खटखटाया, परन्तु उस व्यक्ति ने वह आवाज़ नहीं सुनी ; वह पड़ौसी के यहाँ बैठा अपने दुर्भाग्य की कहानी सुना रहा था।



सुकरात ने अपने वैवाहिक जीवन की कटुता के आधार पर कहा है, "विवाह अवश्य करो। यदि पत्नी अच्छी मिली तो तुम्हारा जीवन सुखी हो जायगा ; यदि पत्नी बुरी मिली तो तुम दार्शनिक बन जाओगे— और यह हर आदमी के लिये अच्छा है।"



संसार में कोई भी मनुष्य इतना धनाढ्य अथवा महान् नहीं कि मुस्कान के बिना काम चला सके और न कोई इतना निर्धन है कि मुस्कान से सम्पन्न न बनाया जा सके।



जो लोग इतने थके हुए हैं कि कभी मुस्करा नहीं पाते उन्हें अपनी एक मुस्कान प्रदान कीजिए, क्योंकि जो मुस्करा नहीं सकता उसे ही उसकी सबसे अधिक आवश्यकता है।



पुरुष के पास किसी चीज़ के ख़रीदने का एक ही कारण होता है पर स्त्रियों के पास आठ कारण हो सकते हैं : (१) क्योंकि उसके पति ने उसे वह वस्तु ख़रीदने को मना कर दिया है। (२) क्योंकि उससे उसका सौन्दर्य बढ़ेगा। (३) क्योंकि किसी पड़ोसिन की उस वस्तु को ख़रीदने की सामर्थ्य नहीं है। (४) क्योंकि उसका काफी विज्ञापन हुआ है। (५) क्योंकि वह किसी के पास नहीं है। (६) क्योंकि वह सबके पास है। (७) क्योंकि वह सर्वथा नई वस्तु है। (८) क्योंकि ....



आत्म-विश्वास और आत्म-ज्ञान के संयुक्त बल का सामना संसार की कोई शक्ति नहीं कर सकती।



कादम्ब, कांचन, कामिनी— ये तीन 'क' मनुष्य को पागल बनाते हैं।



किसी धर्म को इसलिए अंगीकार मत करो कि वह सबसे प्राचीन है। सबसे प्राचीन होना उसके सच्चे होने का प्रमाण नहीं है। कभी कभी पुराने से पुराने घरों को गिराना उचित होता है और पुराने वस्त्र अवश्य बदलने पड़ते हैं। यदि कोई नया से नया मार्ग या रीति विवेक की कसौटी पर खरी उतरे, तो वह उस ताज़े गुलाब के फूल के सदृश उत्तम है, जिस पर चमकती हुई ओस के कण शोभायमान हो रहे हैं।



जो आदमी बिना जाँच पड़ताल किये किसी धर्म को अंगीकार कर लेता है, वह उस बैल के समान है जो अपने कन्धे पर जुआ रखवा लेता है।



क़ानून और व्यवस्था का सदा यही काम रहा है कि जिन मुट्ठी भर लोगों के हाथ में सत्ता है, उनके उद्देश्य पूरे होते रहें और उनकी जेबों पर आँच न आने पाये।



धन अगर सारी दुनिया का विलास न मोल लेना चाहे, तो वह धन ही कैसा ?



भाषा का निर्माण इसलिए हुआ था कि लोग एक दूसरे से मीठी बातें कह सकें।



तलाक़ के माने सिर्फ यही है कि लोकतंत्र दो व्यक्तियों के बीच में सफल नहीं हो सका।



कितने खेद की बात है कि लोग अपनी समस्याएं आपस में बदल नहीं सकते। हर एक आदमी दूसरे की समस्या को सुलझाने की तरकीब जानता है, लेकिन अपनी नहीं।



जिन लोगों के हाथों में ताक़त होती है— जैसे बादशाह, राजनीतिज्ञ, सिपहसालार और इसी तरह के दूसरे लोग— उनका अख़बार वाले इतना ज्यादा विज्ञापन करते हैं और उनकी तारीफ का कुछ ऐसा पुल बाँध देते हैं कि आप लोगों को वे विचार और कार्य में असाधारण और देव-सरीखे जान पड़ते हैं। उनके चारों ओर एक तरह का प्रकाश का घेरा लोगों को दिखाई पड़ने लगता है और अपने अज्ञान या नावाकफियत के कारण हम उनमें बहुत से ऐसे गुणों की कल्पना कर लेते हैं जिनका उनमें नाम-निशान भी नहीं होता। घनिष्ठ परिचय में आने या नजदीक से देखने के बाद वे बहुत मामूली आदमी निकलते हैं।



प्रेम प्रकृति द्वारा दिया गया एक चित्रफलक है, जिस पर कल्पना ने कशीदाकारी की है।



लोभी और दानी दोनों को निर्धनता की चिन्ता है। लोभी जोड़ता है कि कभी निर्धन न हो जाऊँ और दानी जल्दी जल्दी दान देता है कि कहीं निर्धन हो गया तो फिर कैसे दान दूँगा।



दुखी होने का भेद यही है कि आपके पास यह सोचने के लिये अवकाश हो कि आप सुखी हैं या नहीं।



भक्ति हमेशा ज्ञान से ही मिलती है। आजकल के ड्यूटी के पाबन्द, स्वार्थ की खातिर दौड़ धूप करने वाले सभ्य गुलाम को कर्मकाण्ड पाप और दुख से नहीं बचा सकता।



आप वास्तविकताओं को नहीं बदल सकते, किन्तु उनके प्रति आपका दृष्टिकोण अवश्य बदल सकता है।



जीवित रहने की तीव्र उत्कंठा और जीवन से असंतोष ही का नाम संसार है।



सुख-प्राप्ति का भेद यह नहीं है कि आपको जो अच्छा लगे वह कर सकें, बल्कि यह कि जो आप कर सकें वह अच्छा हो।



सज्जन वही है जो उन व्यक्तियों का भी सम्मान करता है जो उसके किसी काम नहीं आ सकते।



सबसे सुखी पत्नी वह नहीं है जो सबसे अच्छे पुरुष से विवाह करती है, बल्कि वह जो अपने पति को सबसे अच्छा बना लेती है।



अपने बच्चों को केवल उतनी ही बात बताइए जितनी आप चाहते हैं कि आपके पड़ोसी जान सकें।



स्त्रियों के सम्बन्ध में सबसे विचित्र बात पुरुष है।



पक्षपातपूर्ण विचार उन लोगों की सम्मति हैं जो हमसे बिल्कुल सहमत नहीं होते।



पुलिसमैन की उपस्थिति सभ्यता और संस्कृति का चिह्न है।



अपना नाम ऊपर करने की खातिर मनुष्य बड़े से बड़ा जोखिम उठाने, धन खर्च करने, हर प्रकार का कष्ट सहने और यहाँ तक कि मरने के लिये भी तैयार हो जायगा।



जब आदमी के बुरे दिन हों, तब उसे अत्यधिक उपदेश देने की अपेक्षा उसकी थोड़ी सी सहायता कर देना अधिक अच्छा है।



संसार सोचने वाले के लिए कामेडी है और भावुकों के लिए ट्रेजेडी।



दुश्मनी में आकर किया गया काम सुन्दर, और गर्व की भावना में किया गया काम महान् नहीं हो सकता।



युद्ध एक ऐसा पेशा है जिसमें मनुष्य सम्मानपूर्वक नहीं रह सकता ; यह एक ऐसी नौकरी है जिसमें लाभ कमाने के लिए सैनिक को छली, लुटेरा और क्रूर बनना पड़ता है ।



क्रांतियाँ की नहीं जातीं, स्वयं होती हैं। क्रांति की उपज उतनी ही प्राकृतिक है जितनी किसी वृक्ष की। क्रांति भूत में से आती है— उसकी जड़ें बहुत पीछे तक जमी होती हैं ।



किसी कड़े क़ानून को रद्द कराने का सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि उस पर सख़्ती से अमल किया जाय।



भगवान की छत्रछाया में इस राष्ट्र में स्वतंत्रता का पुनर्जन्म होगा। जनता के लिये, जनता द्वारा चलाई गई, जनता की सरकार इस धरती पर से नहीं मिटेगी।



क़ानून की शरण में जाना एक बिल्ली के लिए गाय खोने के बराबर है ।



बुद्धिमान लोगों का ज्ञान, उनकी घड़ियों की तरह, दिखावे के लिए नहीं होता, बल्कि अपने काम के लिये होता है ।



हमारे जीवन की सुन्दरतम आवश्यकता किसी वस्तु को प्रेम करना है।



अनेक आदमी छोटे छोटे काम सफलतापूर्वक कर सकते हैं, अगर महत्त्वाकांक्षाएँ उन्हें परेशान न करें।



जल्दी में ली गई कसमें, चाहें पूरी की जायें या तोड़ दी जायें, अपराध की ओर ले जाती हैं।



मृत्यु तो मित्र है। क्षणभंगुर शरीर के लिये मोह कैसा? चीनी मिट्टी के बरतनों से भी हम कमज़ोर हैं: मृत्यु का भय अपने दिलों से निकाल देना चाहिये और देह के रहते हुए उसे सेवा में घिस देना चाहिये।



मैं उनसे ईर्ष्या नहीं करता जिन्हें मुझ से अधिक ज्ञान है, लेकिन उन पर करुणा आती है जिन्हें मुझ से कम ज्ञान है।



आने वाला हर दिन अपने से पिछले दिन का शिक्षक है।



वीरता प्रदर्शित करने का समय तब तक समाप्त नहीं हो सकता, जब तक संसार में कहीं भी अन्याय है।



दूरदर्शी पुरुष आने वाली आपत्ति का पहले से ही निराकरण कर देता है।



पाप कर्म जो भी करे बुरा है, लेकिन विद्वान करे तो बहुत बुरा है। दुराचारी मूर्ख असंयमी विद्वान से अच्छा है, क्योंकि वह तो अन्धा होने के कारण मार्ग से बिचल गया, मगर वह आँखें होते हुए भी कुएँ में गिरा।



सजावट के सामान में किताबें सबसे सुन्दर हैं— चाहे वे रखी रहें और उन्हें खोलकर एक शब्द भी न पढ़ा जाये।



निर्धनता मनुष्य की बुद्धि को भ्रष्ट कर देती है और अतीव दुखदायी कोड़े के समान दुख देती है।



लोकप्रिय व्यक्ति शीघ्र ही सत्ता से भी अधिक शक्तिशाली बन जाता है।



अगर कोई आदमी अपने को कीड़ा बना ले, तो पददलित होने पर उसे शिकायत नहीं करनी चाहिये।



ज्योतिषियों के कहने पर विश्वास मत रखो, उनका कहना सच हो तो भी उसे समझने से कोई लाभ नहीं, हानि स्पष्ट है।



अगर तुम्हें वफादार और दिलपसन्द नौकर की जरूरत है तो अपने सेवक स्वयं बनो।



तुम अपने दरवाज़े से गन्दगी साफ कर दो। सारा नगर अपने आप स्वच्छ हो जायगा।



धन मूर्ख व्यक्ति का परदा है, जो उसकी कमियाँ संसार की नज़रों से छिपाये है।





पहले बालक के जन्म पर पति-पत्नी खुशियाँ मनाते हैं। दूसरे के जन्म पर सन्तोष प्रकट करते हैं, तीसरे के समय विचार करते हैं, चौथे के समय चिन्ता में पड़ जाते हैं, पाँचवे के समय प्रतिज्ञा करते हैं और छटे के समय या तो संन्यास लेने की बात सोचते हैं या आत्महत्या करने की।



शक्ति शारीरिक क्षमता से उत्पन्न नहीं होती, वह अजेय संकल्प से उत्पन्न होती है।



ग़रीबी सज्जनता की परीक्षा और दोस्ती की कसौटी है।



वही व्यक्ति जीने की कला को भूल गया है, जो नये मित्र नहीं बना सकता।



बेवकूफ जो काम अन्त में करते हैं, बुद्धिमान वह पहले ही कर लेते हैं।



हमारे इस जीवन में प्रेम के प्रथम अनुभव से पवित्र और कोई वस्तु नहीं है।



दूसरों को छोटा समझना आसान है, अपने को छोटा समझना कठिन।



युद्ध का गुणगान करने वाली कोई भी पुस्तक उतनी ही समाज-विरोधी है, और मेरे दृष्टिकोण से उतनी ही अश्लील भी, जितनी कि अनुचित प्रेम का गुण गाने वाली पुस्तक।



गर्व की भावना से देवता दानव बन जाते हैं, और विनय से मानव देवता।



सबसे भयानक झूठ वह है जो कहा नहीं जाता, बल्कि बरता जाता है।



सच और झूठ में सिर्फ चार अंगुल का अन्तर है।



चाँदनी रात ने हर शय में नशा घोल दिया।
चाँदनी मस्त फिज़ां मस्त हवायें बदमस्त ॥



क़ौम के ग़म में डिनर खाते हैं हुक्काम के साथ।
रंज लीडर को बहुत है मगर आराम के साथ ॥



पतंग तो एक पल में जल कर ख़ाक हो गया पर बेचारी लौ तो रात भर जल कर शोक मनाती रही।



'तुमने मूंछें क्यों बढ़ा रखी हैं ?'

'बात यह है कि चूमते समय होठों के रस के स्थान पर मुझे पाउडर का आनन्द आता है। सो ये झाड़ने के लिये हैं।'



रूमी दरवाज़ा इस गफअत व शान का है, गुज़रगाह एक जहान का है; अगर उस पर चढ़ जाये, तो बाये फ़लक़ (horizon) पस्त मालूम हो, फरिश्तों का मशवरा कान में आये।



जहाँ बाज़ू सिमटते हैं वहीं सय्याद होता है।



मेरी मैग्डलीन और ईसा— किसी की हिम्मत नहीं पड़ी कि दिल के चोर को फरामोश करके नज़र के सामने वाले चोर पर हाथ उठाये।



वही पानी की बूँद जो तपे हुए लोहे पर पड़कर लुप्त हो जाती है, नलिनी के पत्ते पर मोती के समान चमकती है और समुद्र में सीपी के पेट में पड़कर सचमुच मोती हो जाती है। एक व्यक्ति जैसा सहवास करता है, उसी से अधम, मध्यम और उत्तम गुण उत्पन्न होते हैं।



हे बादल, गर्मी से व्याकुल चिरपिपासित चातक के बच्चे के मुख में पानी डाल दे। क्षण भर में वायु चल पड़ी तो कहाँ तू होगा, कहाँ पानी होगा, कहाँ चातक होगा।



जो भौंरा काठ फोड़ कर घर बनाता है, कोमल कमल के किसलय में बन्द हो जाता है।



पन्द्रह की युवती ही चन्द्रमा के समान षोडश कलाओं से पूर्ण हो जाती है।



भूगोल के रंगमंच पर ही इतिहास का अभिनय होता है।



इस अणु बम तथा उद्जन बम के ज़माने में सबसे सुरक्षित स्थान शत्रु का आलिंगनात्मक सान्निध्य है।



'भाप क्या है ?'

'भाप ······· भाप भाप ही है' वैज्ञानिक बोला।

'भाप का मतलब है औरतों का उबल कर वाक्य-बाण उगलना' सीधे आदमी ने कहा।



उदये सविता रक्तः रक्तश्चास्तमनेऽपि च।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता॥



आत्मिक विकास का पौदा सांसारिक विषय वासना की ज़मीन पर नहीं उगता।



विरोध और वाद-विवाद के शत शत आवर्तनों में ही मनुष्य मनुष्य बनता है।



जिस राष्ट्र का भूतकाल उज्ज्वल नहीं रहा उसका भविष्य भी उज्ज्वल न होगा।



जड़ और आत्मा के सम्बन्ध का नाम सुन्दरता है।



महान् आत्मा का जन्म और मृत्यु दोनों ही बड़े महत्त्वशाली होते हैं।



उच्च आदर्श के लिये प्राण समर्पण करना शहीद होना है।



मानव विकास का पहला क़दम है अपना पाप स्वयं प्रकट कर उसका प्रायश्चित्त करना।



विपरीत स्वभाव वाले लोगों में एकता स्थापित करने के लिये दुर्भाग्य सबसे मज़बूत मसाला है।



सच्ची शिक्षा का उद्देश्य केवल कर्त्तव्य पालन नहीं, कर्त्तव्य पालन में आनन्द का अनुभव करना है। केवल मेहनती होना आवश्यक नहीं, मेहनत से प्रेम होना चाहिये।



भय असत्य का जन्मदाता है।



दुनिया में एक भी मनुष्य भूखा रहे और मैं अजीर्ण की औषधि करूँ! दुनिया के लोग वस्त्रों से व्यथित फिरें और मैं सुन्दर सुन्दर वस्त्रों से सन्दूकें भरूँ! यही मानव जीवन का सबसे काला कलंक है।



भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के अन्तराल में क्षुधा और साधन-हीनता हर समय चुटकियां लिया करती हैं।



चरखे का परित्याग कर हमने दरिद्रता का आह्वान किया; चक्की की उपासना छोड़कर हम व्याधि-ग्रस्त हो गये; अब चूल्हे का भी बहिष्कार करना अनाचार को बुलाना है।



दुःख से सुख उत्पन्न होता है।



अपनी गलतियों को समझने का सबसे अच्छा उपाय यह है कि हम समालोचक बनें।



अगर तुम्हारी आँखें किसी सुन्दर नारी की ओर जाती हैं तो समझ लो कि उनमें हलाहल भरा है जो तुम्हें नष्ट कर देगा।



परमेश्वर की इच्छा है कि तुम पवित्र बनो और आदर के साथ उसकी प्रार्थना करनी सीखो। अगर कोई तुम्हारे बांये गाल पर चांटा मारे तो तुम दाँया गाल भी उसके सामने कर दो। अगर कोई तुम्हारा कोट छीन ले तो तुम उसे अपना लबादा भी दे दो।



प्रेम में डूब कर जैसे तुम एक मन से परमात्मा की प्रार्थना करते हो वैसे ही तुम अपने कर्त्तव्य के पालन में भी लग जाओ और उसे पूरा करो, नहीं तो तुम्हारी सारी प्रार्थना और पूजा व्यर्थ है।



वह वीर नहीं जिसने किसी को हरा कर उसके शरीर को चकनाचूर कर डाला। धन्य है वह वीर जिसने जिसको हराया उसके मन को भी जीत लिया।



दिन भर बुरी बातों और बुरे कर्मों से बचकर रहना रात भर के भगवद्भजन से बढ़कर है।



स्कूल हमें विश्वविद्यालयों की परीक्षा के लिये तैयार करते हैं, सांसारिक परीक्षाओं के लिये नहीं।



जीवन के विविध क्षेत्रों में उन्नति करना ही सभ्यता है।



बातचीत प्रिय हो पर व्यर्थ न हो, चुहल की हो पर बनावट की बू न हो, स्वच्छन्द हो पर अश्लील न हो, अनोखी हो पर असत्य न हो।



जिस अग्नि से मनोमुग्धकारी सुन्दर लपटें निकलती हैं उसमें जला डालने की भी शक्ति है।



मुँह पर पड़ा उसी के जिसने आकाश पर थूका।



सत् स्नेह के अन्तराल में पुनर्जन्म का रहस्य छिपा रहता है।



अव्यक्त रोष के आवरण में प्रतिहिंसा नग्न नृत्य करती है।



स्त्री जाति अखिलेश की सौन्दर्य कल्पना का चमत्कार है।



आँखें कुशल चित्रकार हैं। इनका चित्रपट हृदय और रंग स्नेह है। सब कुछ प्रस्तुत होने पर ये कैमरे को भी बेकार कर देती हैं।



सम्पदा से विपदा का जन्म होता है।



आँख की भाषा आँख वाले ही समझते हैं।



खड़े पर ही संसार उंगली उठाता है पड़े पर नहीं।



बहाव के अनुकूल नाव खे ले जाना सरल है किन्तु प्रतिकूल खे कर पार लगाना बिरले ही कुशल नाविक का काम है।



मीठे वचनों में कुछ नहीं लगता पर उनका मूल्य बहुत बढ़ा चढ़ा है।



वेद भी यदि विस्मृत हो जाँय तो फिर याद कर लिये जाते हैं, पर सदाचार से मनुष्य यदि एक बार भी स्खलित हो जाय तो वह सदा के लिये अपने स्थान से भ्रष्ट हो जाता है।



यदि आप अपनी आत्मा के बल और विश्वास को लेकर कार्य पर अग्रसर होंगे तो निश्चय रखिये नदी भी आपको मार्ग देगी, पहाड़ भी आपको सर-आँखों पर उठा लेगा।



स्वार्थी केवल रस-पिपासु ही होते हैं, सच्चे प्रेम-परीक्षक नहीं। उन्हें शुद्ध प्रेम कसौटी पर नहीं चढ़ना पड़ता।



भलाई का बीज बोकर बुराई की खेती काटना कितना दुखदायी है !



सच्चे प्रेमी जीवन-संग्राम की भयानक विपत्तियों के समय नहीं बदलते।



सच्चा दार्शनिक वही है जो पराई स्त्रियों को सगी माँ बहन के बराबर समझता है।



महात्मा वही है जिसे किसी प्रकार की इच्छा नहीं है।



नेकनामी बड़ी कठिनता से प्राप्त होती है और बदनामी क्षण भर में मशहूर हो जाती है।



यदि तुम पत्थर हो तो पारस पत्थर बनो, यदि वृक्ष हो तो लाजवन्ती का पौदा बनो, यदि पुरुष हो तो अपने हृदय को निःस्वार्थ प्रेम का सागर बनाओ।



महापुरुष वही है जो अपने दोषों को दूर करने में अपना गौरव समझे। भूल किस से नहीं होती ? मनुष्य तो भूलों का घर है। परन्तु मनुष्य की इच्छा मनुष्य ही बने रहने की नहीं रहती, वह मनुष्य से देवता भी बनना चाहता है। इसलिये उसे भूलों से बचने के लिये सदैव कोशिश करनी चाहिये।





हे वैद्यराज, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। तुम यमराज से भी बढ़कर हो। यमराज तो केवल शरीर ही लेता है लेकिन तुम शरीर के साथ साथ धन भी लेते हो।



काँच के मन्दिर में बैठकर दूसरों पर पत्थर फेंकना अच्छा नहीं।



तुम्हें देखते ही जिसके मुँह पर मुस्कान न दौड़ जाय, आँखों में स्नेह न खेलने लग जाय, वहाँ कभी न जाओ चाहे कंचन की वृष्टि ही क्यों न होती हो।



अपने सुख के लिये दूसरे को कष्ट देना महान् पाप है।



काम करो। दुनिया में बिना काम किये यश नहीं मिलता।



कोई भी बात अच्छी तरह समझ बूझ कर करो। जब तक तुम्हारे मुँह से बात नहीं निकली तब तक वह तुम्हारे वश में है। मुँह से निकल जाने पर तुम उसके वश में हो गये।



सदा सच्ची बात पर डटे रहना ही सबसे बड़ा पुण्य है।



बुद्धिमान आदमी मूर्ख आदमी से भी बहुत कुछ सीख लेता है पर मूर्ख बुद्धिमान से कुछ नहीं सीखता।



विद्या एक ऐसा धन है जो दान देने पर बढ़ता है।



आदमी को हमेशा शान्त रहना चाहिये और क्षमाशील होना चाहिये।



बुद्धिमान कभी घमण्डी नहीं होते।



दूसरों का भला करने वाले का ही भला होता है।



दुश्मन को प्यार करो, जो कसूर करे उसको माफ करो और अपने लिये कुछ भी न चाहो।

❀

किसी को दुख न देना, तुम्हारे खिलाफ अगर कोई कुछ काम करे तो उसका बदला न लेना और उसकी किसी से भी शिकायत न करना— यही सच्ची सहनशीलता है।

❀

अच्छे काम करने की आदत के बराबर कोई धन नहीं है। यह ऐसा धन है जिसे न तो चोर चुरा सकता है और न ही दुश्मन छीन सकता है।

❀

तुम्हारे लिये जो काँटे बोवे तुम उसके लिये फूल लगाओ, इसी में बड़प्पन है।

❀

रात्रि के सहस्रों नेत्र होते हैं और दिन का केवल एक। लेकिन छिपते सूर्य के साथ सारे चमकीले विश्व का प्रकाश मिट जाता है। मस्तिष्क के सहस्रों नेत्र होते हैं और हृदय का केवल एक। लेकिन प्रेम के होते ही सम्पूर्ण जीवन का प्रकाश खो जाता है।

❀

कम से कम मौजूदा रूप में संगठित मजहब के दृश्यों ने मुझे भयभीत कर दिया है। मैंने उसकी कई बार निन्दा की है और उसको जड़मूल तक मिटा देने तक की इच्छा की है। मुझे तो लगभग हमेशा यही मालूम हुआ कि अन्धविश्वास, प्रगति-विरोधी जड़ (प्रमाणरहित) सिद्धान्त, कठमुल्लापन, अन्धश्रद्धा और शोषण नीति (अन्याय पर आधारित) तथा स्थापित स्वार्थों के संरक्षण का नाम ही धर्म है।

❀

बेशक मुझे अपने अनुयायियों के लिये जिस बात का सबसे बड़ा डर है, वह है विलास और महत्त्वाकांक्षा। विलास इन्सान को सत्य से हटा देता है, तो महत्त्वाकांक्षा में पड़ कर वह परलोक को भूल जाता है।

❀

सच्ची तपश्चर्या के बल से अकेला आदमी भी सारे संसार को कंपा सकता है, मगर इसके लिये उस मनुष्य में अखण्ड श्रद्धा होनी चाहिये।

❀

जो लोग इतिहास के मज़मून बनते हैं, उन्हें उसके लिखने की फ़ुरसत नहीं होती।

❀

इतिहास दर्शाता है कि चन्द व्यक्तियों की कामनाओं ने लोगों पर कैसे कैसे दुःख ढाये।

❀

जो अपने शरीर को लज़ीज़ दावतें देता है और अपनी आत्मा को आध्यात्मिक आहार के बिना भूखों मारता है वह उस व्यक्ति के समान है जो अपने ग़ुलाम को दावतें देता है और अपनी घर-वाली को भूखों मारता है।

❀

जो बहुत प्यार करता है, वह बहुत मारता है।

❀

प्रेम और अंडे ताज़े ही स्वादिष्ट होते हैं।

❀

प्रेम दृष्टि छीनता है, विवाह पुनः प्रदान करता है।

❀

बिना ईर्षा के कहीं प्रेम नहीं होता।



स्त्रियाँ पुरुष से बुद्धिमान होती हैं, क्योंकि वे जानती कम हैं, पर समझती अधिक।



सुशील नारी का सौन्दर्य दूरस्थित ज्वाला के या पहुँच से बाहर तेज़ तलवार के समान है। जो उसके अति निकट नहीं जाते, उन्हें वह न जलाती है और न घायल करती है।



सबसे सुखी पत्नी वह नहीं जो सबसे अच्छे पुरुष से विवाह करती है, बल्कि वह जो पति को सबसे अच्छा बना लेती है।



स्त्रियों की आँखों में क़ानून से भी अधिक शक्ति होती है और किसी भी तर्क से अधिक उनके आँसू प्रभावशाली होते हैं।



ईश्वर के बाद सबसे अधिक ऋणी हम नारी के हैं। पहले तो स्वयं अपने जीवन के लिये और फिर इस जीवन को जीने योग्य बनाने के लिये।



स्त्री— युवक की प्रेमिका, प्रौढ़ की मित्र और वृद्ध की नर्स है।



स्त्री वादा नहीं करती, पर पुरुष के लिये अपना सब कुछ निछावर कर देती है। पुरुष बहुत वादे करते हैं पर समय आने पर मुकर जाते हैं।



प्रेम जब आत्म-समर्पण का रूप लेता है तभी ब्याह है, उसके पहले ऐयाशी।



सच्चा प्रेम संयोग में भी वियोग की मधुर वेदना का अनुभव कराता है।



गाली का उत्तर प्रेम है, अगर कोई गाली दे तो उसका उत्तर प्रेम से देना चाहिये।



भूल करना बुरी बात है, इसलिये उसकी शर्म होती है। भूल की क्षमायाचना करना अच्छा काम है, उसमें शर्म कैसी? क्षमा-याचना का मतलब है, फिर से भूल न करने का निश्चय करना।



पवित्रता जीवन की अमूल्य सम्पत्ति है। इस पर जीवन की सफलता निर्भर है। प्राण के बिना जो मूल्य शरीर का है, वही मूल्य पवित्रता के बिना जीवन का है।



अपनी सहानुभूति और प्रेम का दान देकर मेरी आत्मा को दुर्बल और पराधीन मत करो। उपेक्षा और दुख की निर्मम आज़ादी में मुझे अकेला छोड़ दो। मैं तो जीवन की भयंकरतम निराशा के तूफानों को वीरतापूर्वक झेलते हुए अपने उद्देश्य को प्राप्त करना चाहता हूँ।



हमारे वस्त्र हमारे रूप का सौन्दर्य तो छिपा लेते हैं, किन्तु कुरूपता को नहीं छिपा सकते।



यदि दृढ़ मित्रता चाहते हो तो मित्र से बहस करना, उधार लेना देना, और उसकी स्त्री से बातचीत करना छोड़ दो। यही तीन बातें बिगाड़ पैदा करती हैं।

❀

संसार के दुखियों में पहला दुःखी निर्धन है। उससे ज्यादा दुःखी वह है जिसे किसी का ऋण चुकाना हो। इन दोनों से अधिक दुःखी है सदा रोगी पुरुष। सबसे दुःखी वह है जिसकी पत्नी दुष्टा हो।

❀

सफल जीवन उसका है जो गुणी है और उसका भी जो धर्मात्मा है। धर्म और गुण दोनों से रहित पुरुष का जीवन तो निष्फल ही है।

❀

उल्लू को दिन में नहीं दिखाई पड़ता। कौए को रात में नहीं सूझता। किन्तु काम वासना से सताया पुरुष तो अजीब अन्धा होता है, उसे दिन और रात दोनों में नहीं सूझता।

❀

ब्राह्मण, ज्योतिषी, वेश्याएँ, कुत्ते और मुर्गे, अपनी जाति के अन्य व्यक्ति को देखकर गुर्राते हैं। इसका कारण आज तक न जाना जा सका।

❀

झगड़ा, खुजली, जुआ, शराब, दूसरे की स्त्रियों से प्रेम करने की आदत, भूख, मैथुन और नींद— जितना ही उनका सेवन किया जाय उतने ही और बढ़ते हैं।

❀

जवानी, रुपया-पैसा, शासन-शक्ति और बेवकूफी, इनमें से कोई

भी एक अनर्थ करने के लिये पर्याप्त है। जहाँ ये चारों मिल बैठें वहाँ के अनर्थ का तो कहना ही क्या ?



धन के कमाने में दुःख, विपत्ति पड़ने पर उसकी रक्षा की चिन्ता और बहुत हो जाने पर उसका अत्यन्त मोह तथा विषयासक्ति— सभी कुछ तो दुःख का कारण है। धन से सुख कभी नहीं मिलता।



हाथ का भूषण दान, कण्ठ का भूषण सत्य, आँख की शोभा स्वाध्याय हुआ करती है। बाहरी आभूषण किस काम के ?



जो धर्म दूसरों पर क्रूरता करना सिखाता हो उसे त्याग दो, बिना पढ़े लिखे गुरु को भी छोड़ दो, सदा गुस्से में भरी रहने वाली स्त्री से वास्ता न रखो, स्नेह न करने वाले सम्बन्धियों का भी साथ छोड़ दो।



स्वतन्त्रता और जीवन के लिये योग्य वही है जो उन पर प्रतिदिन विजय प्राप्त करता रहे।



निःस्वार्थ कर्म परमात्मा को भी ऋणी बना देता है और परमात्मा उस ऋण को ब्याज सहित देने पर बाध्य होता है।



आदर्श नागरिकों में तीन गुण होने आवश्यक हैं— बुद्धि-चमत्कार, आत्म-संयम और सहानुभूति।



हे विश्व ! मेरी मृत्यु के बाद अपनी शून्यता में मेरे लिये केवल एक शब्द को स्थान दे और वह शब्द हो— "मैंने जीवन भर प्यार किया है।"



समुद्रमन्थन से देवों को अमूल्य रत्न मिले तो भी संतोष नहीं माना; उसके बाद भयंकर विष निकला उससे डरे नहीं; जब तक अमृत न निकल आया रुके नहीं। धीर पुरुष, चाहे जितने प्रलोभन या भय के प्रसंग आवे, निश्चित कार्य सिद्ध किये बिना चैन से नहीं बैठते !



ज़मीन पर सोना पड़े या पलंग पर सोना मिल जाये, शाक-भाजी खानी पड़े या स्वादिष्ट भोजन मिल जाये, फटा पुराना कपड़ा मिले या दिव्य वस्त्र मिले, मनस्वी लोग कार्य सफल करने के लिये न दुःख को गिनते हैं न सुख को।



महान् है वह आदमी जो अपने मिट्टी के बर्तन का ऐसे आनन्द से उपभोग करता है मानो वह थाल हो, और वह आदमी भी कम महान् नहीं है जिसे अपना थाल मिट्टी के बर्तन से अधिक नहीं है।



मैं यह नहीं चाहता कि मेरे घर के चारों ओर दीवारें खड़ी कर दी जायें।

मैं तो यह चाहता हूँ कि दुनिया के सब देशों की संस्कृतियों की वायु पूरी आज़ादी के साथ मेरे घर के चारों ओर बहे।

हमारा उद्देश्य केवल प्राचीन संस्कृतियों के आधार पर रहना या उन्हीं को दुहराना नहीं है, बल्कि हमारा लक्ष्य तो एक नवीन

संस्कृति का निर्माण है, जिसका आधार तो भूतकाल की परम्परा होगी, पर जो अर्वाचीन काल के अनुभवों से अपने को पुष्ट करेगी।

भारत में जो संस्कृतियां भिन्न-भिन्न देशों से आई हैं, जिन्होंने भारतीय जीवन को प्रभावित किया है और जो स्वयं इस भूमि की भावनाओं से प्रभावित हुई हैं, उन सबका संकलन स्वभावतः स्वदेशी ढंग का होगा।



दूसरे गाँव को जाते समय जैसे रास्ते में यात्री कहीं किसी घर में ठहर जाया करता है और सवेरे उठकर उस घर को छोड़ कर आगे बढ़ जाता है, उसी प्रकार मनुष्य भी अपने माता-पिता, घर और धन के साथ कुछ दिन बिताकर चल देता है। इसीलिए सत्पुरुष उनके मोह में नहीं पड़ा करते।



सुख और दुख का घर मनुष्य का अपना शरीर ही है। शरीर से मनुष्य जो काम करता है आत्मा उसी का फल भोगता है।



ओछे विचार वालों के साथ उठने बैठने से मनुष्य स्वयं भी ओछे विचार वाला बन जाता है। मध्य श्रेणी वालों के साथ रहने से मध्य श्रेणी का और उत्तम पुरुषों के साथ रहने से श्रेष्ठ विचार वाला बनता है।



मनुष्य के पास जब पैसा जमा हो जाता है तो वह क्रोधी और लोभी हो जाता है और अपने आपे में नहीं रहता। उसकी नज़र टेढ़ी हो जाती है, जीभ सूख कर ऐंठ जाती है, किसी से सीधे मुँह

बात नहीं करता। पाप करने का उसका स्वभाव बन जाता है और भौंहें सदा तनी रहती हैं।



वह जो अपने देश को प्यार नहीं करता, संसार में कुछ भी नहीं कर सकता।





"प्रकृति स्त्रीलिंग हैं या पुल्लिग ?" यह एक प्रश्न पूछा गया है।

प्रकृति स्त्रीलिंग है। और कारण भी यदि प्रश्नकर्त्ता जानना चाहे तो यह है कि स्त्री की भांति उसकी ठीक आयु किसी को भी ज्ञात नहीं।



जो सोच नहीं सकता, वह मूर्ख है। जो सोचना नहीं चाहता,

वह अन्धविश्वासी है। जिसे सोचने का साहस नहीं, वह गुलाम है।



मनुष्य दो घड़ी भी शुभ कर्म करते हुए ही जिये, परन्तु लोक-परलोक-विरोधी कर्म के साथ कल्प भी जीने की इच्छा न करे।



दूर की बड़ी बात को भी देखो, समझो; केवल निकट की, आँख के आगे की, साधारण बात पर ही ध्यान मत दो। सिद्धान्त को भी देखो, केवल तात्कालिक हानि लाभ को विशेष महत्त्व मत दो। धर्म के अनुसार चलो, अधर्म के अनुसार नहीं। सत्य बोलो, मिथ्या नहीं। दूसरे शब्दों में स्वार्थ के ऊपर कर्त्तव्य को स्थान दो।



संसार में सहस्रों शोक के स्थान हैं और सैकड़ों भय के हैं, परन्तु ये प्रतिदिन मूर्ख को प्राप्त होते हैं, पंडित को नहीं।



ब्रह्मानन्द की इच्छा करने वाले को इष्ट अनिष्ट की चिन्ता नहीं करनी चाहिये, क्योंकि वह तो शोक-रहित और आनन्दमय हुआ करता है। विवेकशील होने के कारण वह किसी का बुरा नहीं सोचता और उसका बुरा भी कोई नहीं करता। न वह किसी से डरता है और न दूसरे ही उससे भय मानते हैं।



घूमता हुआ चक्र, यात्रा करके ज्ञान प्रचार करने वाला विप्र तथा राज्य का लगातार दौरा करने वाला राजा सदा आदर पाता

है। पर घर के बाहर चक्कर लगाने वाली स्त्री का सत्यानाश हो जाता है।



आत्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है और अपनी इच्छानुसार कर्म करता है। इसका फल भी उसे ही भोगना पड़ता है। अपने कर्मों के कारण ही वह आवागमन के चक्र में घूमता रहता है और स्वयं ही यत्न करके उससे मुक्ति भी पा लेता है।



कामनाओं के समान रोग कोई नहीं, न मोह के समान कोई शत्रु ही है। क्रोध के बराबर कोई आग नहीं, न ज्ञान से बढ़कर कोई सुख है।



कवियों की दृष्टि बड़ी सूक्ष्म होती है। वे भूत, भविष्य, वर्तमान, सभी कुछ अनुमान से देख लेते हैं। कौए सर्वभक्षी होते हैं और शराबी बुरी से बुरी और गुप्त से भी गुप्त बात कह डालते हैं। जिद में पड़ कर अथवा मन में आने पर स्त्रियाँ चाहे जो कुछ कर डालती हैं।



उस देश में न रहे, जहाँ न आदर है, न आजीविका, न बन्धु और न नये ज्ञान की आशा।



कुलीन कन्या कुरूप भी हो तो विवाह कर लो; सुन्दर किन्तु नीच संस्कारों वाली स्त्री से कभी विवाह न करो।



जिसका पुत्र आज्ञाकारी हो, पत्नी अनुरूप हो और मन में

धन की तृष्णा न हो वह इस जीवन में ही स्वर्ग पा लेता है।



मुँह सामने मीठी बातें और पीठ पीछे छुरी चलाने वाले मित्र को दूधमुँहे विषभरे घड़े की तरह छोड़ दें।



मन में धरे काम को तब तक वाणी से प्रकट न करो जब तक काम पूरा न हो जाय।



हे दारिद्र्य, मेरे शरीर में तो तू मित्र बनकर रह रहा है; लेकिन जब मेरी यह देह नष्ट हो जायेगी, तब तू कहाँ जायगा—मैं इसी सोच में पड़ा हूँ।



आज का दिन घूमने में खो दो— कल भी वही बात होगी, और फिर अधिक सुस्ती आवेगी।



हमें कला चाहिये, विलास नहीं; हम विज्ञान की उपासना करते हैं, लेकिन मानव का नाश नहीं चाहते।



मैंने अपनी आत्मा को पांच बार धिक्कारा है—

१. जब उसने ऊँचा ओहदा पाने के लिये खुशामदों और काग़ज़ी सिफारिशों का आश्रय लिया।

२. जब उससे यह कहा गया कि सरल और कठिन में से एक को चुन ले, तो उसने सरल को चुना।

३. जब उसने पाप किया और यह सोच कर सन्तोष पा लिया कि दूसरे भी तो ऐसा करते हैं।

४. जब उसने एक व्यक्ति की कुरूपता से घृणा की और यह न जाना कि कुरूप स्वयं उसका मन है।

५. जब उसने पराई निन्दा के ब्याज से अपनी प्रशंसा सुनी और यह न समझा कि वह शैतान बोल रहा है।

❀

कहा जाता है कि ताड़न के बिना विद्या नहीं आ सकती। यदि ऐसा होता तो तालीम के महकमे की क्या आवश्यकता थी, पुलिस के महकमे से काम चल सकता था।

❀

आत्मा की अमरता के समान विवाह को भी समझना चाहिये।

❀

अपने से धनी प्राणी से विवाह करना अपनी स्वतन्त्रता को खो देना है।

❀

किसी ने ठीक ही कहा है कि उस दुख से बढ़ कर कोई दूसरा दुःख नहीं है जो अपने को व्यक्त न कर सके।

❀

ग़रीबी तभी अपमानजनक होती है जब उसका कारण काहिली, शराब, फिजूलख़र्ची और मूर्खता हो।

❀

अज्ञान से घमण्ड बढ़ता है। जो अपने को सबसे अधिक ज्ञानी समझते हैं वे सबसे अधिक मूर्ख होते हैं।

❀

अगर कोई सुखी होना चाहे तो उसकी इच्छा बड़ी आसानी से

पूरी हो सकती है लेकिन हम दूसरों से अधिक सुखी होना चाहते हैं और इसी में कठिनाई होती है, क्योंकि हम दूसरों को वास्तव से अधिक सुखी समझते हैं।



अपना धर्म समझ कर मनुष्य जो कर्म करे उसकी निन्दा नहीं करनी चाहिये। जिस धर्म को तुम अपना कर्त्तव्य समझते हो उसका पालन करो।



सूर्य पिता है। चन्द्र माँ है। सब तारे बच्चे हैं। सूर्य सवेरा होते ही आफिस में अपना काम करने चला जाता है। माँ घर के अन्दर होती है। पिता सन्ध्या समय घर लौटता है। वह विश्राम करता है। माँ अपने सब बच्चों को लेकर आकाश में घूमने निकल जाती है जिससे वे पिता की नींद में बाधक न बनें। तारे खेलते और चमकते हैं। वे कितने सुन्दर होते हैं!



मैं जिस काम को हाथ में लेता हूँ उसमें सुई की तरह गड़ जाता हूँ।



हर काम को करने के पहले यह निश्चय करो कि वह काम उचित है या नहीं। यदि वह करने योग्य है, तो दृढ़ता से उसमें लग जाओ और जब एक बार लग जाओ तो फिर कैसा ही संकट क्यों न आये उसे अधूरा मत छोड़ो।



हे अर्जुन! पहले के मोक्ष चाहने वालों ने कर्म किये, इसलिये तुम भी कर्म करो।



यदि तुम संसार में महान् पुरुष बनना चाहते हो तो अपने प्रत्येक पल का उचित उपयोग करो।

❀

समय मेरी जायदाद है और यह ऐसी जायदाद है कि इसमें बिना जोते बोये तो कुछ पैदा नहीं होता, परन्तु इसको सुधार लेने से परिश्रमी कार्यकर्त्ता का भी परिश्रम निष्फल हो जाता है।

❀

सुख धन से बहुत कम प्राप्त होता है, परन्तु स्वास्थ्य से सबसे अधिक।

❀

मैं ऐसे प्रसन्न स्वभाव को, जो सदैव प्रत्येक वस्तु को अच्छे दृष्टिकोण से देखने का आदी है, प्राप्त करना अधिक पसन्द करूंगा बनिस्बत इसके कि मैं दस हज़ार रुपये वार्षिक आय की जायदाद का स्वामी बन जाऊँ।

❀

प्रसन्नता प्रत्यक्ष और शीघ्रतम लाभ है। वह अन्य सिक्कों की तरह केवल बैंक का सिक्का नहीं है वरन् प्रत्यक्ष सिक्का है। यह सत्य है कि धन प्रसन्नता का सबसे छोटा साधन है और स्वास्थ्य सबसे अधिक।

❀

सभ्यता का सर्वोत्तम साक्षी वह घर है जिसमें हम रहते हैं।

❀

जिस प्रकार सब बड़ी और छोटी नदियाँ समुद्र में जाकर विश्राम पाती हैं, इसी प्रकार सब आश्रमों के आदमी गृहस्थों में रक्षा पाते हैं। जिस प्रकार सब बच्चे अपनी माता की रक्षा करने

से ही रक्षित होते हैं, उसी प्रकार सब भिक्षुक भी गृहस्थों की रक्षा-दान से ही जीते रहते हैं।

❀

व्यवसाय के लिये तीन बातों की आवश्यकता है— ज्ञान, स्वभाव और समय।

❀

धनोपार्जन की उधेड़बुन में अपने सदाचार, सत्यता और सुशीलता को न खो बैठो। अपनी आत्मा को बेच कर धन जुटाना मोती फेंक कर सीप बटोरना है।

❀

यदि ईश्वर और शासक का भय न हो, तो भी पाप नहीं करना चाहिये, यही सच्चा सदाचरण है।

❀

संसार में सद्स्वभाव से असंख्य लाभ होते हैं और अच्छा स्वभाव संसर्ग, विद्या, अनुभवों के प्रभाव से प्रभावित होता है। सुशिक्षा से ही धर्माचरण की सृष्टि होती है।

❀

मनुष्य प्रतिदिन पाप करते करते यह भूल जाता है कि वह पाप कर रहा है।

❀

पाप है क्या वस्तु ? धनियों ने अपनी पाप की कमाई ग़रीबों से बचाने के लिये पाप पुण्य का अन्तर उत्पन्न कर दिया है।

❀

मुझे ऋतु की बदली बड़ी अच्छी लगती है। स्वप्न देखने की आदत है। गर्मियों में भी शरीर कमरे के अन्दर सर्द हवा के बीच

लिहाफ में दुबकने की कल्पना करता रहता है और जाड़ों में हर समय चन्द्रमा और तारों के शामियाने का ध्यान लगा रहता है।



जो जितना दुःखी होता है, उतना ही अधिक हँसता है।



भावुक मनुष्य इस संसार में हमेशा ही फेल रहेगा। वह हर बात में हारेगा। और हार भावुक मनुष्य के लिये विष का प्याला होती है। एक व्यवहारिक आदमी हार हार से ही जीत ग्रहण करने की शिक्षा पाता है।



दो व्यक्तित्व की थ्योरी बिल्कुल सही है। हर विषय पर मनुष्य के दो टुकड़े हो जाते हैं जो आपस में लड़ने लगते हैं। मनुष्य उसमें से अन्तरात्मा की ध्वनि यदि छाँट ले तो वह बड़ा आदमी हो जाय।



मेरी अल्पबुद्धि के अनुसार तो भंगी पर जो मैल चढ़ता है वह शारीरिक है और वह तुरन्त दूर हो सकता है। किन्तु जिन पर असत्य और पाखंड का मैल चढ़ गया है वह इतना सूक्ष्म है कि दूर करना बड़ा कठिन है। किसी को अस्पृश्य गिन सकते हैं तो वे हैं असत्य और पाखंड से भरे हुए लोग।



आदमी गूदे की अपेक्षा छिलके पर अधिक झगड़ते हैं।



परामर्श लीजिये, दीजिये मत। परामर्श देने वाले संसार में भरे पड़े हैं, कमी सिर्फ लेने वालों की है।



सूर्य के उगने पर उसकी महिमा समाप्त हो जायगी, यह जानता हुआ भी प्रभात का चन्द्रमा शान्त मुख से कहता है— "अस्त-सिन्धु के किनारे खड़ा प्रतीक्षा कर रहा हूँ कि सूर्य के उदित होने पर उन्हें प्रणाम तो करता जाऊँ।"



संसार में स्त्रियों से बढ़ कर कोई पापी नहीं है। प्रज्वलित अग्नि, मय दानव की माया, छुरे की धार, विष, सांप और मौत— इस सबके साथ स्त्रियों की तुलना की जा सकती है।



जिस तरह खौलते पानी में अपना प्रतिबिम्ब दिखाई नहीं दे सकता, उसी तरह क्रोधी मनुष्य यह नहीं समझ सकता कि उसकी भलाई किस में है।



कुकर्म करते समय मीठे और सुखदायी लगते हैं लेकिन फल भोगते समय दुखदायी।



दूसरे तुम्हारे बारे में क्या सोचते हैं' इसकी अपेक्षा 'अपने बारे में तुम्हारे विचार' बहुत महत्त्व की चीज़ है।



भूल करना मनुष्य का स्वभाव है। की हुई भूल को मान लेना और इस तरह आचरण करना कि वह भूल दोबारा न होने पाय, पौरुष है।



बदनामी से छूटने का शर्तिया और शीघ्र इलाज अपने को सुधार लेना है।



अगर हम जीवन पथ पर फूल नहीं बिखेर सकते, तो कम से कम हम उस पर मुस्कानें तो बिखेर सकते हैं।



मैं देखता हूँ, कालिज में किसी लड़की को कोई देखता है तो उसका दायाँ हाथ वक्ष के ऊपर साड़ी का पल्ला ठीक करता कन्धे पर साड़ी को ऊपर खिसकाता चला जाता है और वापिस आने से



पहले आँचल को एक झटके से पहले से भी नीचे कर देता है। चाल में लचक आ जाती है। आँखें नीचे झुक कर तिरछी सैन में परिवर्तित हो जाती हैं। यह उनकी लज्जा का प्रदर्शन मात्र है या मेरे विचार से दृष्टि अपने वक्षस्थल की ओर आमन्त्रित करना है।



यह बात कुछ महत्त्व नहीं रखती कि आदमी मरता कैसे है बल्कि यह महत्त्व रखती है कि वह जीता किस तरह है।



यदि यूरोप के तमाम ताज इस शर्त पर मुझे पेश किये जायँ कि मैं अपनी किताबें पढ़ना छोड़ दूँ, तो मैं ताजों को ठुकरा कर दूर फेंक दूँगा और किताबों का साथ नहीं छोड़ूंगा।



यह जान कर भी कि ठीक क्या है, उसे न करना साहस की कमी है।



कुछ ही लोग हैं जो अपनी बुराई सह सकते हैं। हर आदमी अधिकतर अपनी प्रशंसा में ही आनन्द पाता है— और यह उन कमज़ोरियों में से है जो सारी मानव जाति में हैं।



किसी राष्ट्र का बड़प्पन उसके भौतिक साधनों में नहीं, बल्कि उसके निश्चय, विश्वास, बुद्धि और नैतिकता में होता है।



शिक्षा का रहस्य विद्यार्थी का आदर करने में है।



हम हमेशा भविष्य की ओर देखते रहते हैं, वर्तमान से हमें संतोष नहीं होता।



दुनिया में दुनिया की तरह रहना आसान है, एकांत में अपनी तरह रहना आसान है। लेकिन महान् व्यक्ति वह है जो दुनिया में रह कर भी एकान्त की मधुरता और स्वतंत्रता को क़ायम रखे।



धैर्य रखना कठिन है पर इसका फल मीठा होता है।



सजावट के सामान में किताबें सबसे सुन्दर हैं— चाहें वे रखी रहें और उन्हें खोल कर एक शब्द भी न पढ़ा जाये।



निर्धनता मनुष्य की बुद्धि को भ्रष्ट कर देती है और अतीव दुखदायी कोड़े के समान दुख देती है।



लोकप्रिय व्यक्ति शीघ्र ही सत्ता से भी अधिक शक्तिशाली बन जाता है।



यदि कोई आदमी अपने को कीड़ा बना ले तो पददलित होने पर उसे शिकायत नहीं करनी चाहिये।



ज्योतिषियों के कहने पर विश्वास मत रखो। उनका कहना सच हो तो भी उसे समझने से कोई लाभ नहीं, हानि स्पष्ट है।



यदि तुम्हें वफादार और दिलपसन्द नौकर की जरूरत है तो स्वयं अपने सेवक बनो।



तुम अपने दरवाजे से गन्दगी साफ कर दो, सारा नगर अपने आप स्वच्छ हो जायगा।



अजीब दुनिया है! न बोलो तो लोगों को सन्देह होता है कि आप अज्ञानी हो या कि आप कम-ज्ञानी तो हो ही। और जरा ज्यादा बोलो तो लोगों का सन्देह दूर हो जाता है।



सफल मनुष्य—

अपनी भूलों को भुला देता है पर यह याद रखता है कि वे किस कारण हुईं।

पहले सोचने वाला बनकर सन्तुष्ट नहीं होता प्रत्युत पहला करने वाला होता है।

आज के ध्येय को कल की मृगतृष्णा में कभी नहीं बदलता।



भगवान् ने रात्रि को इसलिये अन्धेरी बनाया जिससे अपने सपनों में हम सब सुन्दर लगें।



सूर्य के छिपने पर जो आँसू बहाता है वह अपनी दृष्टि से तारों को भी खो देता है।



धर्म में साम्प्रदायिकता, कटुता, आपसी वैमनस्य, कुढ़न और संकीर्णता को स्थान नहीं। ये तो वे दोष हैं जो धर्म को लांछित करने वाले हैं। धर्म के सही स्वरूप को लोग समझें। सत्य, अहिंसा, मैत्री, बन्धुता, सहिष्णुता, उदार भावना, असंकीर्ण मनोवृत्ति— धर्म के लक्षण हैं। जहाँ भी इनका व्याघात हुआ, वह धर्म नहीं, धर्म के नाम पर अधर्म का पोषण है। हम धर्म में समाये हुए विकारों को तिलांजलि देकर उसके सत्य स्वरूप को जीवन में डालें।



आज व्यक्ति आत्म-विश्वास खो चुका है, उसकी निष्ठा डगमगा चुकी है। जब भी उसके सामने यह सवाल उठता है कि

अहिंसा, सत्य और ईमानदारी से कार्य किया जाये तो वह तत्क्षण अनुभव करने लगता है कि आज के युग में यह कैसे सम्भव है। अहिंसा, सत्य एवं ईमानदारी से कैसे काम चल सकता है जब कि हिंसा, असत्य और बेईमानी से जन-जन का जीवन भरा हुआ है। ऐसा सोचना आत्मदुर्बलता है। यदि वह चाहे और तदनुरूप लगन से प्रयास करे तो महान् से महान् कार्य कर सकता है। अतः इस आत्म-दौर्बल्यमयी हीन भावना को छोड़कर व्यक्ति को चाहिये कि वह आत्मबल और साहस के सहारे देश में चारित्र्य-जागृति की एक दुर्धर्ष क्रान्ति पैदा कर दे।



संसार में पवित्र मैं केवल एक ही बात को मानता हूँ और वह है इंसान का अपनी उन्नति के प्रति असन्तोष, तथा जहाँ कहीं भी वह है, उससे उठने की, तथा जो कुछ भी है उससे श्रेष्ठ बनने की उसकी आकांक्षा तथा उस दिशा में उसका प्रयास। एक इन्सान को दूसरे के प्रति शत्रुता तथा द्रोह अथवा लालच और ईर्षा आदि को उखाड़-फेंकने की प्रवृत्ति को मैं श्रद्धा की भावना से देखता हूँ और श्रम को मैं महत्त्व देता हूँ।



खुशामदी आदमी इसलिये आप की खुशामद करता है, क्योंकि वह आप को अयोग्य समझता है। किन्तु एक आप हैं कि उसके मुँह से अपनी प्रशंसा सुन कर फूले नहीं समाते।



जो गुणी तथा कर्त्तव्य-परायण होते हैं, वे अपनी जिम्मेदारियों की बात समझते हैं, किन्तु जो गुणहीन हैं, वे सदा अपने अधिकारों की बात रटा करते हैं।



मनुष्य की सत्य-निष्ठा और न्याय-निष्ठा इतनी उत्कट होनी चाहिये कि वह अपने या अपने परिवार के सुख-दुःख या बलाबल का विचार किये बिना अपना कर्त्तव्य-पालन करने के लिए उद्यत हो जाय।



मैं चाहता हूँ कि भारत यह समझ ले कि उसके पास एक ऐसी आत्मा है जो कभी नष्ट नहीं होती, जो सभी प्रकार की दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त करके ऊपर उठ सकती है और जो सारे संसार के एक साथ मिले हुए शारीरिक बल का प्रतिरोध करने में सम्पूर्ण रूप से समर्थ है।



आत्म-सुख की इच्छा रखने वाला पुरुष किसी का अनिष्ट चिन्तन न करे। यदि कुछ सोचना ही है तो मुक्ति के उपाय का चिन्तन करे और किसी बात का नहीं।



इस जगत में जो मनुष्य समस्त प्राणियों को अभयदान देता है, वह सारे यज्ञों का अनुष्ठान कर चुकता है और बदले में उसे अभयत्व प्राप्त होता है।



ईश्वर की सृष्टि में सबसे दुःखी व्यक्ति वह है जिसका साहस तो बढ़ा चढ़ा हो, परन्तु जिसकी शक्ति उसके लक्ष्य से न्यून हो।



घोड़ा, शस्त्र, शास्त्र, वीणा, वाणी, पुरुष, स्त्री जिस प्रकार के

व्यक्ति के हाथ में पड़ते हैं वैसे ही योग्य अयोग्य या अच्छे बुरे हो जाते हैं।



मनुष्य जैसे मनुष्यों की संगति में रहता है, जैसे मनुष्य की सेवा करता है तथा जैसा बनना चाहता है, वैसा ही हो जाता है।



संशयशील व्यक्ति के साथ कभी न रहें, सदाचारी पुरुषों का तो आधे क्षण का भी संग प्रशंसनीय है।



सज्जन असज्जनों के साथ नहीं रहते, हंस श्मशान में नहीं रहता।



जिस प्रकार अंजलि में रखा हुआ पुष्प दोनों हाथों को समान रूप से सुगंधित करता है, उसी प्रकार सज्जन मित्र शत्रु दोनों के प्रति कृपालु ही रहते हैं।



ढोल बजा बजाकर प्रति दिन प्रति रात्रि कलह करने वाली स्त्री भगवान करे किसी के न आये। सुशीला गृहिणी को तो कड़वी बात कहने की जरूरत ही नहीं पड़ती क्योंकि लज्जाशीला कुलवधू के भ्रूकुटिभंग मात्र से विश्व भर व्याकुल हो उठता है।



नीतिकार सज्जनों की उपासना करनी चाहिए चाहे वे उपदेश न भी करते हों; क्योंकि जो उनके निजी वार्तालाप हैं, वे ही सदुपदेश हो जाते हैं।



सत्संग द्वारा गुणवान् के आश्रय से निर्गुणी भी गुणी बन जाता है।



विद्वानों की संगति से शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त होता है, शास्त्रीय ज्ञान से विनय, शिष्टाचार, सौजन्य; और विनय से लोग अनुराग करते हैं। लोकानुराग प्राप्त होने से फिर क्या नहीं हो सकता?



सत्संगति बुद्धि की जड़ता नष्ट करती है, वाणी को सत्य से सींचती है, मान बढ़ाती है, पाप मिटाती है, चित्त को प्रसन्नता देती है, संसार में यश फैलाती है, सभी कुछ तो करती है।



दुःखी होने का भेद यही है कि आपके पास यह सोचने के लिये अवकाश हो कि आप दुखी हैं अथवा नहीं।



दूसरे के काम में दोष निकालना सहज है— पर उसके सुधार की ठीक ठीक रीति बताना कठिन है।



बेवकूफ जो काम अन्त में करते हैं, बुद्धिमान वह पहले ही कर लेते हैं।



दूसरों को छोटा समझना आसान है, अपने को छोटा समझना कठिन।



पृथ्वी की रक्षा समुद्र करता है। घर की रक्षा चहारदीवारी

करती है। देश की रक्षा उसका शासक करता है। और नारी की रक्षा उसका चरित्र करता है।



स्त्री घी का कुप्पा है और पुरुष जलता हुआ अंगार। दोनों के संयोग से ज्वाला प्रज्वलित हो उठती है। इसलिए घी और आग को कभी भी बुद्धिमान पुरुष इकट्ठा न रखे।



पुराने अन्न, गत-यौवना— अर्थात् ढलती उम्र की अपनी पत्नी, युद्ध से लौटे वीर पुरुष तथा खलिहान से घर में आये नवशस्य की कभी निन्दा नहीं करना चाहिए। सदा उनकी प्रशंसा ही करना उचित है।



जिस घर में बेवकूफों का आदर नहीं होता, गृहस्थी का सामान जहाँ भरा पूरा रहता है और पति पत्नी में झगड़ा नहीं होता, वहाँ स्वयं लक्ष्मी का निवास होता है।



सुख दुःख का चक्कर मनुष्य के जीवन में लगा ही रहता है। कभी किसी को अनन्त सुख प्राप्त नहीं हुआ करता।



जो नौकर मालिक की बात सुनना पसन्द न करे और उल्टा जवाब दे, अपने को बड़ा बुद्धिमान समझे तथा मालिक की बुराई करता फिरे उसे एक मिनट घर में न रखना चाहिए, तुरन्त निकाल बाहर करना चाहिए।



उदारहृदय पुरुष के लिए पैसा तिनके के समान होता है। वीर पुरुष मृत्यु को तिनके की तरह समझता है। विरक्त के लिए

नारी तिनके की तरह अनाकर्षक होती है तथा सन्तोषी व्यक्ति के लिए संसार का ऐश्वर्य तृणवत् होता है।

❀

भोजन और लेनदेन के मामले में लज्जा छोड़कर साफ बात ही करनी चाहिए, अन्यथा मनुष्य को अपमान सहना पड़ता है और दुःख उठाना पड़ता है। इसमें रत्ती भर भी संदेह नहीं है।

❀

"सखि, क्या वे नित्य इसी प्रकार आकर चले जायेंगे?

जा और मेरी वेणी का एक पुष्प उनके चरणों पर चढ़ा दे!

और यदि वे पूछें-- किसने दिया, किस उद्यान का है? तो तुझे मेरी शपथ, उन्हें मेरा नाम न बताना ....।"

❀

जो मेरा बटुआ चुराता है वह कूड़ा चुराता है। लेकिन जो मुझसे मेरा अच्छा नाम छीन लेता है, वह ऐसी चीज लेता है जिससे वह स्वयं धनी नहीं होता परन्तु मुझे अवश्य निर्धन कर देता है।

❀

(जीते जी) मृत्यु क्या है? मूर्खता। अमूल्य क्या है? जो समय पर दिया जाय। जीवन पर्यन्त हृदय में कांटे की तरह क्या चुभता है? छिपकर किया गया अपराध।

❀

जिस प्रकार गरिष्ठ भोजन पेट में जाकर अवश्य दुःख देता है, उसी प्रकार पाप अपने लिये अनिष्टकर न प्रतीत होने पर भी बेटे पोतों तक पहुंचकर अपना प्रभाव दिखाता है।

❀

किसी नीतिकार ने कहा है कि दुराचार तो दुष्ट करता है और उसका फल साधु को भोगना पड़ता है। सीता का हरण रावण ने किया, लेकिन बांधा गया बेचारा समुद्र।



जैसे जैसे मनुष्य अपना किया अधर्म लोगों में ज्यों का त्यों प्रकट करता है, वैसे वैसे वह अधर्म से उसी प्रकार मुक्त होता है जैसे केंचुली से सांप।





आपकी सलाह दूसरे लोग नहीं लेते, इसका रंज क्या? कई

बार आप स्वयं अपने को अनमोल सलाह देते हैं और आप स्वयं ही उसे नहीं लेते।



जो मनुष्य बुरे कर्मों का पश्चात्ताप करता है वह पाप से मुक्त हो जाता है।



श्रेष्ठ पुरुष जैसा आचरण करते हैं, साधारण लोग उसी का अनुसरण करते हैं। वे जैसा आदर्श उपस्थित करते हैं, लोक उसी को अपना लेता है।



शिष्टाचार की शिक्षा उन्हीं से मिलती है जिनमें शिष्टता का अभाव होता है।



स्पेन में एक कहावत प्रचलित है-- "कुछ न करना कितना अच्छा लगता है और तत्पश्चात् आराम करना।"



भाग्य से यदि किसी की पत्नी साफ सुथरी, कार्यकुशल, नित्य पति की इच्छानुगामिनी तथा सदा मधुरभाषिणी निकल आये तो उसे समझना चाहिये कि उसके घर में मानुषी नहीं सचमुच देवी का पदार्पण हुआ है!



यदि हृदयवल्लभा पत्नी साथ हो तो पेड़ की छाया ही घर का आनन्द देती है। उसके बिना बड़ा सा महल भी घोर बन की तरह भयानक लगने लगता है।



जो सास ससुर को सदा सन्तुष्ट रख कर पति की अनुगामिनी और हृदयेश्वरी भी बनी रहे तथा अपने माता पिता की

इच्छाओं का भी उल्लंघन न करे वास्तव में वह नारी ही सच्ची पतिव्रता कहाती है।



शास्त्रों ने स्त्री के लिये अलग से न किसी यज्ञ का विधान किया है न और किसी व्रत और उपवास करने की ही आज्ञा दी है। पति की सेवा शुश्रूषा मात्र ही उसका यज्ञ, व्रत और उपवास सब कुछ है। केवल सेवा के कारण उसे स्वर्ग में भी महती प्रतिष्ठा मिलती है।



जो गृहिणी सदा प्रसन्नवदना, गृहकार्यों में कुशल, घर को साफ सुथरा रखने वाली और सोच समझ कर केवल आवश्यक खर्च करने वाली होती है वह ही श्रेष्ठ गृहस्थिन कहलाती है।



पति को कर्त्तव्य निश्चय करने में सच्ची सलाह देने वाली, घर के काम काज में दासी की तरह सदा जुटी रहने वाली, माता के समान स्नेहपूर्वक अनुरोध कर करके भोजन कराने में दक्ष, सोते समय अप्सरा रम्भा के समान मनोरंजन-कुशल, धर्मकार्यों में सदा सहयोग देने वाली और क्षमा करने में पृथ्वी से भी अधिक क्षमाशील, ऐसी छः गुणों वाली पत्नी बड़े भाग्यवानों को ही मिला करती है।



जिसने योगाभ्यास की अग्नि से अपने शरीर को खूब तपा लिया उसे फिर न रोग सताता है न बुढ़ापा। मृत्यु भी उसके पास आते डरती है।



मन के बुढ़ापे का नाम ही मोह ममता है।



जो पूछा है वह नहीं कहता, पूछने पर दूसरी बात कहता है; और सदा अपनी प्रशंसा किया करता है ऐसा पुरुष हमें अच्छा नहीं लगता।



आयु, क्रिया, धन, विद्या और कुल इनके अनुरूप वेश, वचन, बुद्धि रखता हुआ संसार में रहे।



संसार के लोगो! ज्यादा बात करने से क्या लाभ। संक्षेप में ही धर्म का तत्त्व तुम्हें बताता हूँ कि परोपकार करके ही पुण्य कमाया जाता है और दूसरों को कष्ट पहुँचा कर पाप।



अपनी तथा शत्रुओं की शक्ति और निर्बलता का विचार किये बिना ही जो व्यक्ति पागलपन से ऊल जलूल काम करने लगता है वह विपत्तियों को न्योता देता है।



सब प्रकार के जन्तुओं को मार भगाने वाले साधनों का आविष्कार हो चुका है, पर आज तक किसी आविष्कारक का ध्यान घरों में बिना बुलाये, सहसा आ जाने वाले मेहमानों की ओर नहीं गया।



जो जिसके हृदय में रहता है, वह दूर होते हुए भी समीप है; जो हृदय में नहीं है, वह समीप होते हुए भी दूर है।



गुणवान होते हुए भी भारी यान नदी में डूब जाता है। इसी तरह अधिक संग्रह करने वाला पुरुष भी जीवन समुद्र के पानी में परिग्रह गुरुत्व के कारण डूब जायगा।



मनुष्य जीवन का कोई भी भाग उपद्रवरहित नहीं होता। बचपन में बिना विचारे किये कामों का उपद्रव उसे घेरे रहता है, यौवन में काम वासनाओं की व्याधि और बुढ़ापे में इन्द्रिय शैथिल्य तथा बीमारियाँ।

*

मनुष्य को कभी अपने धन, यौवन और परिवार की ठसक नहीं दिखाना चाहिए। पलक मारते ही काल का काला हाथ उन्हें मिटा कर चल देता है। संसार की इस सब मोहमाया को छोड़कर ज्ञान प्राप्त करो और तुरन्त ही ब्रह्मपद प्राप्त करने की तैयारी करते रहो।

*

केवल अपने पेट के लिए कमा और पकाकर जो मनुष्य अकेला ही खा पी लिया करता है वह वास्तव में पाप भोजन करता है। आदमी को अपनी कमाई उत्तम कार्य के हेतु ही करनी चाहिए और उसे करने के बाद जो कुछ बचे उसी का उपयोग करना चाहिए।

*

जवानी के बलबले मिट चुके और काम-कथाओं की मस्ती भी निकल गई। मोह भी छूटता जाता है और तृष्णा भी नष्ट हो रही है। इसी कारण अब मन पुण्य की ओर प्रवृत्त होने लगा है।

*

मनुष्य को हर समय बड़बड़ाते नहीं रहना चाहिए, न कभी किसी का अपमान करना चाहिए। मित्रों का विरोध और नीचों का संग कभी न करना चाहिए। अभिमान और दुराचरण छोड़कर कभी भी रूखे वचन किसी से न कहने चाहिएँ।

*

कोई दो गाली भी दे जाय तो सह लेना चाहिए और किसी को नीचा नहीं समझना चाहिए। अगर कोई तुमसे गुस्से की बात करे तो तुम्हें उससे मीठा बोलना चाहिए और यदि कोई तुम्हें कोसे तो तुम्हें उसकी कुशलक्षेम पूछना चाहिए।

*

शूद्र के घर पैदा होकर भी जो व्यक्ति इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करके सदा सत्य और धर्म के पथ पर उद्यत रहता है उसे मैं ब्राह्मण ही मानता हूँ क्योंकि आचार और चरित्र पर ही ब्राह्मणत्व निर्भर रहता है।

*

जो कभी भूलकर भी सत्कर्म नहीं करता, जो बेहद खाता है, दुनिया जिसे दुष्ट समझती है, जो पक्का मायावी और क्रूर है तथा जो कभी भी स्थान और समय देखकर काम नहीं किया करता, ऐसे किसी भी व्यक्ति को घर में न घुसने देना चाहिए।

*

धर्म धारण करता है इसलिये उसे धर्म कहा गया है। धर्म प्रजा को धारण करता है। जो धारण करने की योग्यता रखता है वही धर्म है। समस्त विश्व को धारण करने वाला है सर्वशक्तिमान भगवान का परमसमर्थ न्याय या कानून। उस न्याय या कानून को मानकर उसके अनुसार चलना ही धर्म का आचरण करना है। यह धर्म ऐसा है जो इहलोक और परलोक दोनों में कल्याण करता है। इसी से वैशेषिक दर्शन के रचयिता महर्षि कणाद धर्म का लक्षण करते हुए कहते हैं:—

"यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।"

जिससे इस लोक में अभ्युदय हो और परमकल्याणरूप मोक्ष की प्राप्ति हो, वही धर्म है।

❀

अत्यन्त भोजन करने वाला योगी नहीं हो सकता। किन्तु सर्वथा भोजन न करने वाला भी योगसाधन नहीं कर सकता।

❀

मानसिक विकारों की शुद्धि अज्ञान के दूर करने से होती है। अज्ञान दूर करने का साधन बाह्य उपकरणों से ज्ञान लाभ करना नहीं; किन्तु अंतस्थित होना अर्थात् बाह्य वृत्तियों से मन को समेट कर आत्मा में स्थित होना है।

❀

हे पाण्डुपुत्र! आत्मा ही नदी है। संयम का ही दूसरा नाम तीर्थ है। सत्य पानी है, शील तट है और दयापूर्ण व्यवहार लहरें हैं। ऐसी आत्म नदी में स्नान करके पुण्यभाग बन। केवल तीर्थ-यात्रा से क्या लाभ! अन्तरात्मा पानी से शुद्ध नहीं होता।

❀

व्यावहारिक कार्यों में अथवा आध्यात्मिक साधना में दुख के सब कारण विद्यमान होते हुए भी जो पुरुष न तो क्रोध ही करता है, न दूसरों को हानि पहुँचाता है, वही क्षमाशील है।

❀

जो पुरुष उपकारी व्यक्ति के प्रति, सज्जनता दिखलाता है, उसकी सज्जनता का कोई मूल्य नहीं। सज्जनता या साधुता तो वही है जो दुर्जन के प्रति सज्जनतापूर्ण व्यवहार दिखलाये और सच्चा साधु भी वही है जो दुष्ट के प्रति भी साधु व्यवहार करे।

❀

साधु वही है जो जैसे भाव हृदय में हों, वाणी से प्रकट करे और जैसे वाणी में हों वैसा आचरण करे। मन, वचन और कर्म में एकरूपता रखने वाला ही साधु कहलाता है।

❀

इन्द्रियों के समुदाय को भली प्रकार वश में करके सब में समान भाव देखने वाले योगी सम्पूर्ण भूतों के हित में रत हुए मुझे, भगवान को ही प्राप्त होते हैं।

❀

हे अर्जुन! जो योगी सम्पूर्ण भूतों में ममत्व देखता है और सुख अथवा दुःख को समान मानता है, वह योगी परम श्रेष्ठ माना गया है।

❀

सर्वव्यापी अनन्त चेतन में समभाव से स्थित आत्मा वाला तथा सबमें समभाव से देखने वाला योगी ही आत्मा को सम्पूर्ण भूतों में और सम्पूर्ण भूतों को आत्मा में देखता है। यही योग दृष्टि है।

❀

प्रेम, प्रेमी, और प्रेमपात्र, ये देखने में तीन होने पर भी वास्तव में एक हैं। इनका तत्त्व सदा सबकी समझ में नहीं आता। इन्हें एक रूप ही जानना चाहिए। मैं इन तीनों को, जो वस्तुतः एक हैं, प्रणाम करता हूँ।

❀

सुहृद्, मित्र, बैरी, उदासीन, मध्यस्थ और बन्धुगणों में, धर्मात्माओं और पापियों में भी, समान भाव रखने वाला श्रेष्ठ है।

❀

शील मानव जीवन का अनमोल रत्न है। उसे जिस मनुष्य ने खो दिया उसका जीना ही व्यर्थ है। वह चाहे जितना धनी अथवा भरे पुरे घर का हो उसका कोई मूल्य नहीं रहता।

❀

देवतुल्य विद्वानों, घर के बूढ़ों, संन्यासियों, अतिथियों और मानवता की सहानुभूति के पात्र मनुष्यों की जो ठीक प्रकार से सेवा करता है वही पुरुष संसार में यशस्वी होता है।



दीनता मनुष्य की सबसे बड़ी शत्रु है। दैन्य-ग्रसित व्यक्ति कभी चरित्रवान नहीं बन सकता। "मैं अकिंचन हूँ" ये शब्द कहने वाले या तो वे पाखंडी होते हैं जो दूसरों के मुख से "आप बादशाह हैं" सुनना चाहते हैं या वे गिरे आदमी होते हैं, जो गिरकर उठने की आशा छोड़ चुकते हैं। स्वयं को अकिंचन कहना विनय नहीं है। लोग अपने गर्वित व्यवहारों को ढकने के लिए भी इन शब्दों का प्रयोग किया करते हैं।



कुछ लक्ष्मी के लाड़ले बच्चे ज़िन्दगी का संघर्षमय खेल खेलना नहीं जानते। कभी यह ज़िन्दगी के जीत हार का खेल खेलना पड़ जाय तो वे पहली हार में ही "मैं और नहीं खेलता", "सब मुझे धोखा देते हैं", कहकर एक कोने में मुँह फुलाकर बैठ जाते हैं। ऐसे लोग हर समय अपने को दीन, हीन और असहाय अनुभव करते हैं।



परवशता दीनता की जननी है। सब श्रमजीवी परवश नहीं होते। यह ज़रूरी नहीं कि हर सेवक दीन हो। अपनी योग्यता के बल पर बने सेवक की सेवा का अर्थ परस्पर सहयोग का होता है; किन्तु जो व्यक्ति अपने श्रम से अधिक मूल्य चाहेगा, उसे दीन बनना होगा।



संसार की बाहर की कोई भी शक्ति सच्चे आदमी को दीन नहीं बना सकती। उसके भीतर की वासना ही उसे दीन बनाती है। जब उसका लोभ बढ़ जाता है तो वह अनैतिक उपायों से अपनी वासना को तृप्त करने के साधन जुटाना चाहता है। अपनी वासनाओं का गुलाम बनकर ही वह मनुष्य का गुलाम बनता है और यह गुलामी मनुष्य को दीन बना देती है।

*

जिसके कारण मनुष्य को शोक, भय, दुःख अथवा चिन्ता सदा रहे, वह चाहे अपना अंग ही क्यों न हो, उसे तुरन्त त्याग देना चाहिए।

*

जब तक भय का कारण आ ही न पहुंचे तब तक उससे डरते रहकर उससे बचने का उपाय करते रहना चाहिए। किन्तु जब वह सर पर आ ही पहुंचे तो उसे देख निडर होकर उसे मार भगाना चाहिए।

*

दूसरे की तराजू पर अपने को तोलना दीनता की पराकाष्ठा है। मनुष्य में प्रायः दूसरों को स्वयं से अधिक सम्पन्न देखकर ईर्ष्या पैदा होती है। औरों की अपेक्षा अपने को नीचा देखकर मनुष्य का मन हीन हो जाता है। इसलिये समान स्थिति के लोगों से मिलना स्वास्थ्यकर है। जो लोग अपने दर्जे से ऊँचे दर्जे के लोगों में लोभवश मेल-जोल बढ़ाते हैं, प्रायः वही दीनता का रोग पाल लेते हैं। इस मेल-जोल का, जो समान-शील-व्यसन वाले व्यक्तियों में नहीं होता, आधार ही स्वार्थ होता है। इसलिये उसका परिणाम कभी अच्छा नहीं होगा।

*

जो घटना या व्यक्ति मनुष्य को दीन बनाता है, उसे छोड़ देना चाहिए चाहे वह कितना ही प्रिय क्यों न हो। प्रेम और दीनता साथ साथ नहीं रह सकते। प्रेम के सम्बन्ध में दीनता की भावना आना ही प्रेम के अभाव की सूचना है। सच्चे अर्थों में प्रेम करने वाला व्यक्ति कभी अपने मित्र को दीनता में नहीं देखना चाहेगा। यदि कोई मित्र या पिता ऐसा चाहे तो वह सच्चा मित्र या पिता नहीं।

❀



स्त्री पर नयी साड़ी का वही प्रभाव होता है जो मदिरा के तीन प्यालों का पुरुष पर होता है।



अदंडित अपराधों की स्मृति भी मनुष्य को दीन बनाती है। अपराध मनुष्य को दीन बना देता है। जो अपराध एकान्त में किया गया हो, जिसका साक्षी केवल अन्तःकरण हो, उसका दण्ड समाज की ओर से मिले या न मिले, भगवान की ओर से अवश्य मिलता है। और वही यह दण्ड है कि मनुष्य दीनता अनुभव करने लगता है। उसकी आत्मा कमज़ोर हो जाती है। इस तरह से समाज द्वारा अदण्डित अपराध मनुष्य को जन्म भर सताते हैं।



सफल होना भी क्या विचित्र अनुभव है! रोज़ नये नये रिश्तेदार देखने को मिल जाते हैं!



जीवन में सफल और धनी होना पहले तो अपनी पत्नी के हित के लिये ज़रूरी है और फिर इन्कमटैक्स-विभाग के हित के लिये!



अपने वायलिन को बस एक बार झंकृत कर दीजिए। कोई न कोई पड़ौसी तुरन्त अपनी उपस्थिति से आपके घर को झंकृत कर देगा।



सहानुभूति-प्राप्ति के लिए विवाह करने वाले एक सज्जन को विवाह के बाद उसकी प्राप्ति हुई— मित्रों से।



नवयुवावस्था = जब कुछ लड़कियाँ 'ना' के स्थान पर 'हाँ' कहना आरम्भ कर देती हैं।



समय-असमय की असत्य और असंयत स्तुति-श्लाघा से हम जितना आश्वस्त होते हैं उसकी सच्चाई पर विश्वास करने के यत्न में उससे भी अधिक परेशान हो जाते हैं।

❀

याद रखिये झूठी खुशामद हमें ज़रा भी खुश नहीं करती; खुश तो केवल यह कल्पना करती है कि हमें भी कुछ लोग झूठी खुशामद से खुश करने योग्य समझ रहे हैं।

❀

अपनी विस्मृति पर आश्चर्य न करिये, विशिष्ट पुरुषों में विस्मरण की स्मृति को विस्मृत न करने का गुण होता है।

❀

जीवन के उत्तराध में आराम पाने के लिए आप पूर्वार्ध में काम करते हैं, यह तो ठीक ही है; लेकिन कल आराम पाने की धुन में आज अपने को इतना न धुन डालिये कि वह कल कभी आये ही नहीं।

❀

भूलों का दुख भूल जाइये। भूलों के तृण ही अनुभव की मज़बूत रस्सी को बनाते हैं।

❀

यह सच है कि जीवन का मार्ग कांटों से पटा है, लेकिन वे चुभते तभी हैं, जब हम ढलवान पर उतर रहे होते हैं। चढ़ते हुए नहीं।

❀

जीवन का सबसे महान् रहस्य यह है कि इसका व्यय ऐसी वस्तु पर किया जाय जो जीवन के बाद बनी रहने वाली हो।

❀

जिस जीवन में संघर्ष न हो, निर्माण की टीस न हो, और जो केवल स्वार्थ के उद्देश्यों से संचालित होता हो, वह मानव को पतित बना देता है।



सत्य ही सबसे मज़ेदार विनोद है।



कोई सद्गुण है तो युद्धप्रियता और कोई बुराई है तो शांतिवाद, यही युद्ध का सबसे बड़ा कारण बन जाता है।



वन की अग्नि जड़ों को बचा देती है, पर मृदु और शीतल वायु उन्हें उखाड़ फेंकता है।



धनवान पति = एक ऐसा व्यक्ति जो अपनी आमदनी अपनी पत्नी तथा इनकमटैक्स विभाग में विभाजित करने के लिए तैयार हो गया हो।



आपरेशन = शरीर विधान में एक संशोधन।



जिस तरह आभूषण के बारे में कोई स्त्री दूसरी स्त्री की सलाह नहीं पूछती उसी तरह हम अपने शत्रु से युद्ध में जीतने का उपाय नहीं पूछते।



स्त्री किसी श्रेष्ठतर वस्तु को पाने के लिये ही कोई त्याग करती है, पुरुष निम्नतर पाने की आशा से भी उतना ही त्याग कर देता है।



शिखर पर सदैव स्थान रहता है। क्योंकि जो वहाँ पहुँचता है वह प्रायः वहाँ पहुंच कर नीचे गिर जाता है।



संसार में बत्तख की तरह रहिये जो सतह पर स्थिर और शान्त रहती है, किन्तु अन्दर ही अन्दर निरन्तर पैर मार कर उथल पुथल मचाया करती है।



मितव्ययी पत्नी वह है जो आपकी सब उपयोगी आवश्यकताओं में मितव्यय कर दे।



प्रतिष्ठा वह आड़ है, जिसका सहारा मूर्ख व्यक्ति अपनी मूर्खता छिपाने के लिये लेते हैं।



"दूसरों के साथ ऐसा ही व्यवहार करो" यह एक अच्छा सिद्धान्त— अपने लिये नहीं, दूसरों के लिये— है।



पैसा हाथ में आया, तो आदमी "भला" बन ही जाता है, लेकिन यह जरूरी नहीं कि "भले" आदमी के हाथ में पैसा आये ही।



सबसे अधिक स्थायी प्रेम वही होता है जो अंत तक अस्वीकृत रहता है।



अगर आप पीछे की ओर बहुत देखेंगे तो किसी दिन पीछे की ओर चल भी पड़ेंगे।



गाँव के लोगों का गृहस्थ जीवन सुखी और शान्त होता है, क्योंकि वह रेडियो नहीं सुन पाते।

❀

हज़ार बार सुने हुए झूठ पर विश्वास करना जितना आसान है एक बार सुने सच पर विश्वास करना उतना ही कठिन है।

❀

सत्य के मार्ग पर चलते हुये यदि हमारे हज़ारों अन्धविश्वास नष्ट हो जायं तो भी हमें उसी मार्ग पर आगे बढ़ते जाना चाहिए।

❀

हममें से अधिकांश चुप रहना जानते हैं— लेकिन कब चुप रहना यह जानने वाले इने-गिने ही हैं।

❀

नारद जी ने भगवान् से पूछा: "भगवन् आप कभी पेट भर भोजन नहीं खाते, यद्यपि सारे दुनिया के ख़ज़ाने आपके हाथ में हैं?"

भगवान् बोले: "मैं अगर पेट भर लूं तो दुनिया के भूखों को भूल जाऊँगा। इसलिए पेट भरकर खाना नहीं खाता।"

❀

मार्कण्डेय मुनि ने त्रिकालदर्शी होने का दावा किया था। एक दिन वह अपनी कुटिया में बैठे थे कि नारदजी ने आकर उनका दरवाज़ा खटखटाया। मुनि ने पूछा: "कौन है?"

नारद जी ने कहा: "धिक्कार है, तुझ जैसे त्रिकालदर्शी होने का दावा करने वाले पर, जो इतना भी नहीं जानता कि दरवाज़े पर कौन खड़ा है।"

❀

हज़रत दाऊद ने एक दिन प्रार्थना में कहा : "परमात्मन्, मैं तेरा किस प्रकार धन्यवाद कहूं, धन्यवाद भी तो तेरी ही दी हुई विभूति है।"

ईश्वर की ओर से वाणी हुई कि दाऊद, आज तुमने हमारा वास्तविक धन्यवाद किया।



जब तक स्त्री अन्त में कुछ न कुछ ख़रीद नहीं लेती, तब तक उसे स्वयं नहीं मालूम होता कि उसे क्या ख़रीदना था।



काम से बचने की सबसे आसान विधि है— आने वाले कल की याद।



पतले होने के लिए बस एक व्यायाम करना याद रखिये: आवश्यकता से अधिक खाना परोसे जाने पर थाली से उठ जाना।



दुनिया उस उत्साही की है, जो सदैव शांत रहता है।



दुनिया का सबसे कंजूस व्यक्ति शायद वह था, जिसने आत्म-हत्या भी पड़ोसी का ज़हर पीकर की।



स्त्रियों को सुखी करने के लिए पहले उन्हें यह विश्वास दिलाना आवश्यक है कि वे कभी सुखी नहीं हो सकतीं।



शत्रु को हानि पहुँचाकर आप उससे नीचे हो जाते हैं, बदला

लेकर बराबर हो जाते हैं, पर उसे क्षमा करके उससे ऊँचे हो जाते हैं।



एक होटल का विज्ञापन: "सर्वथा एकान्त चाहने वाले हज़ारों व्यक्ति चारों ओर से इस होटल में रोज़ आते हैं!"



पतियों के लिये: पहले पत्नी को आश्वासित कर दीजिये कि वह संसार की अन्य स्त्रियों से भिन्न— अद्वितीय— है। जब उसे इस बात पर पूरा विश्वास हो जाय तब आप बेखटके उसे संसार की अन्य स्त्रियों के समान ही मान कर व्यवहार कर सकते हैं।



प्रत्येक प्रश्न के दो पहलू हैं, इसका सबसे अधिक लाभ वकील लोग ही उठा पाते हैं।



सारी दुनिया का प्रकाश भी एक अकेली मोमबत्ती के प्रकाश को कम नहीं कर सकता।



सबसे अच्छा विक्रेता वही है जो आप को यह मनाकर छोड़े कि आपके पास वह चीज़ होनी ही चाहिये, जो वह अपने पास रखना नहीं चाहता।



मुस्कराहट आपके मुख के वातायन पर फैला वह प्रकाश है, जिसे देखकर जाना जा सकता है कि आपका मन अपने स्थान पर है, कहीं भटक नहीं रहा।



संसार शान्ति-भूमि नहीं, समर-भूमि है। यहाँ वीरों और पुरुषार्थियों की विजय होती है, निर्बल और कायर मारे जाते हैं।



आप जब साथियों, मित्रों में या सभा में अपने को अल्पज्ञ अथवा अनभिज्ञ कहते हैं, तो ऐसा करके कहीं आप अपनी निरभिमानिता की स्तुति तो नहीं चाहते ?



इच्छा-शक्ति ही सबसे अधिक बलवती है। इसके सामने हर एक वस्तु झुक जाती है। क्योंकि वह स्वयं ईश्वर से ही आती है, पवित्र और दृढ़ इच्छा-शक्ति सर्वशक्तिमान है।



मैं उस धर्म और ईश्वर में विश्वास नहीं करता, जो विधवा के आँसू पोंछने या अनाथों को रोटी देने में असमर्थ है।



जो दूसरों का सहारा ढूँढता है वह सत्य-स्वरूप भगवान की सेवा नहीं कर सकता।



तुम्हें ईश्वर को ढूँढने कहाँ जाना है? क्या गरीब, निर्बल, और दुःखी ईश्वर नहीं हैं ? पहले इन्हीं की पूजा क्यों नहीं करते ? तुम गंगा के किनारे खड़े होकर कूआं क्यों खोदते हो ?



आयु मस्तिष्क का गुण है। यदि आप अपने सपनों को पीछे छोड़ आये हैं, यदि आपकी आशाएँ सो गई हैं, यदि आप भविष्य के प्रति लालायित नहीं हैं, यदि आपकी महत्वाकांक्षाएँ ठण्डी पड़ गईं हैं, तो आप जान लीजिए कि आप बूढ़े हो गये हैं।



अहिंसा की शक्ति अमाप है वैसे ही अहिंसक की है। अहिंसक स्वयं कुछ नहीं करता, उसका प्रेरक ईश्वर होता है।



यह एक भयंकर भूल है कि हम दूसरे की बात ज़बरदस्ती मान लेते हैं। यह उससे भी भयंकर भूल है कि हम अपनी बात ज़बरदस्ती दूसरे पर लादना चाहते हैं।



विश्वास करना एक धर्म है, अविश्वास करना एक दुर्बलता है।



जो मनुष्य एक गज़ खादी ख़रीद लेता है वह गरीब इंसान को एक वक्त खाना देता है।



जो औरों की सेवा करता है उसके हृदय में ईश्वर अपने आप अपनी गरज से रहता है।



अहिंसा कायरों का भरोसा नहीं वीर-हृदय की प्राण-वायु है।



ब्रह्मचर्य-हीन जीवन मुझे शून्य और पशुवत् मालूम होता है। पशु स्वभावतः निरंकुश होता है परन्तु मनुष्यत्व इसी बात में है कि मनुष्य स्वेच्छा से अपने को अंकुश में रक्खे।



जो खुद मेहनत न करे उसे खाने का हक़ ही क्या है ?



पाप से घृणा करो पापी से नहीं।



आप दूसरे की निन्दा करते हैं, क्योंकि उसकी सम्मति आपसे नहीं मिलती। यदि दूसरा भी इसी कारण आपकी निन्दा करे, तो आप क्षुब्ध एवं क्रुद्ध होते हैं, यह कितना उपहासास्पद है।



आप अपनी आवश्यकताओं पर कितना ध्यान, कितना सोच-विचार करते हैं, और उन्हें यथासम्भव पूर्ण करने का कितना प्रयत्न करते हैं ? किन्तु दूसरे की आवश्यकताओं को अनावश्यक और अवांछित ठहराते हैं। यदि दूसरा भी आपकी आवश्यकताओं एवं इच्छाओं की उपेक्षा कर अपनी आवश्यकताओं को महत्त्व दे, तो इसमें उसका क्या दोष! क्या आश्चर्य!





विवाह करते हुए मनुष्य को यह भय इतना नहीं सताता कि उसे एक ही स्त्री के साथ बंधना पड़ेगा। किन्तु, यह कि उसे कितनों से जुदा होना पड़ेगा।



जो कुछ नहीं करता, वह परिवार अथवा समाज के लिये ही नहीं— विश्व के लिये दुर्भाग्य है।

❀

आप अपनी विद्वता पर अभिमान करते हैं, पर क्या यह अभिमान ही आपकी मूर्खता का प्रमाण नहीं है ?

❀

आप अपनी निरभिमानिता का दावा करते हैं, पर क्या यह दावा ही बड़ा अभिमान नहीं है ?

❀

एक दिन सौभाग्य ने एक व्यक्ति का द्वार खटखटया परन्तु उस व्यक्ति ने वह आवाज़ नहीं सुनी। वह पड़ौसी के यहाँ बैठा अपने दुर्भाग्य की कहानी सुना रहा था।

❀

भरोसा रखो कि वह जो एकान्त में तुम्हें तुम्हारी गलतियां बताए तुम्हारा मित्र है, क्योंकि वह बदले में तुम्हारी अरुचि और घृणा पाने का खतरा उठाता है। कुछ ही लोग हैं जो अपनी बुराई सह सकते हैं। हर आदमी अधिकतर अपनी प्रशंसा में ही आनन्द पाता है और यह उन कमज़ोरियों में से है जो सारी मानव जाति में है।

❀

संसार में कोई भी व्यक्ति इतना धनाढ्य अथवा महान् नहीं है कि मुस्कान के बिना काम चला सके और न कोई इतना निर्धन है कि मुस्कान से सम्पन्न न बनाया जा सके।

❀

जो लोग इतने थके हुए हैं कि कभी मुस्करा नहीं पाते उन्हें अपनी एक मुस्कान प्रदान कीजिये; क्योंकि जो मुस्करा नहीं सकता उसे ही उसकी सबसे ज़्यादा आवश्यकता है।

❀

कोई भी व्यक्ति सम्पूर्ण मानवता के बराबर महान् नहीं है।



मनुष्य की तीन ही क़िस्में हैं— पीछे जाने वाले, जहाँ के तहाँ अड़े रहने वाले, और आगे बढ़ने वाले।



क्या जाने उसे वहम है क्या मेरी तरफ से।
जो ख्वाब में भी रात को तनहा नहीं आता ॥



प्रेम चन्द्रमा के समान है; अगर वह बढ़ेगा नहीं, तो घटना शुरू हो जायगा।



अयोग्य मनुष्यों की प्रशंसा छिपे हुए व्यंग्य के समान होती है।



किनारे से किनारा कब मिला है बहर का यारो।
पलक लगने की लज्जत दीदए-पुरआब क्या जाने ॥



जिस प्रकार ईश्वर के सामने दान हज़ार पापों को भी ढक लेता है, मनुष्य के सम्मुख नम्रता अनेक बुराइयों को छिपा लेती है।



कभी कभी चुप्पी सबसे तीखी आलोचना होती है।



साहित्य समाज का दर्पण है।



एक व्यक्ति की स्वतन्त्रता वहीं समाप्त हो जाती है, जहाँ वह स्वतन्त्रता उसके पड़ौसियों के लिए शाप बन जाती है।

❀

दुख एक प्रकार का छूत का रोग है। हम अगर लटका हुआ मुँह लेकर किसी से मिलें तो उसका उल्लास कम हो जाता है।

❀

कहीं वह आके मिटा न दें इन्तज़ार का लुत्फ़,
कहीं क़बूल न हो जाए इल्तजा मेरी।

❀

मूर्ख अपने आपको अपनी झूठी प्रशंसा से खुश करते हैं, बुद्धिमान बेवक़ूफ़ों को उनकी झूठी प्रशंसा से खुश करते हैं।

❀



लबे-बाम उस परी ने बाल क्या चेहरे से सरकाए।
उठाकर अब्र के परदे को गोया बर्क़ ने झांका।

❀

'दूसरे तुम्हारे बारे में क्या सोचते हैं' इसकी अपेक्षा अपने बारे में तुम्हारे विचार बहुत महत्त्व की चीज़ है।



फूल लाखों बरस नहीं रहते,
दो घड़ी और है बहारे शबाब।



भूल करना मनुष्य का स्वभाव है। की हुई भूल को मान लेना और इस तरह आचरण करना कि भूल दोबारा न होने पाए, पौरुष है।



जो आदमी दूसरों के गुप्त भेद तुझ पर प्रकट कर दे, जहाँ तक बने उसे अपना भेद न बता; क्योंकि जो कुछ वह दूसरे के भेद के साथ कर रहा है, वही तेरे भेद के साथ भी करेगा।



हृदय से सब आदमी कवि हैं।



कलाकार कभी मरता नहीं, वह अमर है।



बदनामी से छूटने का शर्तिया और शीघ्र इलाज अपने को सुधार लेना है।



अगर हम जीवन पथ पर फूल नहीं बिखेर सकते, तो कम से कम हम उस पर मुस्कानें तो बिखेर सकते हैं।



जीवन सुख दुख का सागर है।



जीवन नाटक में खेलने के लिए हम अपना पार्ट स्वयं नहीं चुनते, न ही उसके चुनाव से हमें कोई वास्ता है। हमारा कर्त्तव्य तो बस अपने पार्ट को अच्छी तरह निभाने में है।



मीरी में, फ़क़ीरी में, शाही में, गुलामी में,
कुछ काम नहीं बनता बेजुरअते-रिंदाना।



सीमाएँ और उनसे घिरा प्रदेश किसी राष्ट्र का केवल शरीर ही होता है। राष्ट्र की आत्मा तो उसके पहाड़ों और मैदानों में बसने वाले लोग होते हैं।



मद्य की पहली घूंट स्वास्थ्य के लिए होती है; दूसरी 'आमोद प्रमोद' के लिए; तीसरी घूंट पीना लज्जा का और चौथी उन्माद का कारण है।



'मीर' बन्दों से काम कब निकला?
माँगना है जो कुछ खुदा से माँग।



हर एक प्रकार की उन्नति का आधार प्रत्येक व्यक्ति की अपनी आय से अधिक ऊँचा रहने की आंतरिक आकांक्षा पर है।



यदि आप किसी बड़े आदमी को अपना मित्र बनाना चाहते हैं तो उसके ग़लती करने पर उसे सुधार दें। यदि आप किसी छोटे आदमी को मित्र बनाना चाहते हैं तो उसकी प्रशंसा करें।



अपनी बुराइयों और कमज़ोरियों को जितना हम जानते हैं उतना और कोई नहीं जानता। फिर भी कोई और हमें इतना महान् नहीं समझता जितना हम स्वयं अपने को समझते हैं।



संसार का समस्त अन्धकार भी यदि इकट्ठा हो जाए, तो एक छोटे से दीप को नहीं बुझा सकता।



घमण्ड बिजली की क्षणिक चमक के समान है, जबकि प्रसन्नता मन में सूर्य के समान प्रकाश करती है।



चुप रहकर मूर्ख समझे जाना इससे अधिक अच्छा है कि बोलकर अपनी मूर्खता में कोई सन्देह ही न रहने दिया जाए।



यदि आप ग़रीबी में प्रसन्न नहीं रह सकते, तो अमीरी भी आपके लिए प्रसन्नता का सन्देश नहीं ला सकती।



हमारे मत तभी स्थिर हो पाते हैं, जब हम सोचना बन्द कर देते हैं।



हृदय के तर्क अपने ही होते हैं तर्कशास्त्र तक को उनका ज्ञान नहीं।



अपने प्रति असंतुष्ट भले ही हो जाओ, लेकिन जीवन के प्रति असंतोष का भाव कभी न लाओ।



अपनी जवानी में कभी न रोने वाला युवक असम्भव है; और बुढ़ापे में न हँसने वाला बूढ़ा बेवकूफ।



कोई व्यक्ति यदि चाहे तो संसार पर थूक सकता है, संसार की कोई हानि न होगी; लेकिन दुनिया उस पर थूकने लगे तो वह उसमें डूब ही जायगा।



चिकित्सक के अलावा किसी और को अपने जख्म कभी मत दिखाओ।



प्रसन्नता प्राप्त करना बड़ा ही कठिन है, क्योंकि दूसरों को प्रसन्न करके ही इसे प्राप्त किया जा सकता है।



नारी में दान और त्याग होना चाहिए। उसकी यही सबसे बड़ी विभूति है। इसी आधार पर समाज का भवन खड़ा है।



औरत वफा और त्याग की मूर्ति है, जो अपनी बेजबानी से, अपनी कुरबानी से, अपने को बिल्कुल मिटाकर पति की आत्मा का एक अंग बन जाती है।



स्त्री पृथ्वी की भांति धैर्यवान् है, शांतिसम्पन्न है, सहिष्णु है।



संसार की जनसंख्या का पचास प्रतिशत भाग स्त्रियाँ हैं, फिर भी उनके प्रति पुरुषों का कौतुक बना ही रहता है।



पुरुष को शिक्षित करना ऐसे व्यक्ति की रचना करना है जो अपने पीछे कुछ नहीं छोड़ जाता; लेकिन नारी को शिक्षित करने का अर्थ है आने वाली पीढ़ियों का निर्माण करना।





सौंदर्यवान स्त्री नयनाभिराम होती है; बुद्धिमान स्त्री हृदय को प्रसन्न करती है; एक अनमोल रत्न है, तो दूसरी रत्नराशि।



जिस तरह खौलते पानी में अपना प्रतिबिम्ब दिखाई नहीं दे सकता, उसी तरह क्रोधी मनुष्य यह नहीं समझ सकता कि उसकी भलाई किसमें है।



झिड़कियाँ और बदनामी वही सह सकते हैं जो प्रशंसा के योग्य होते हैं।



मेरा विश्वास है कि किसी बड़े आदमी की कसौटी उसकी नम्रता ही है। नम्रता से मेरा तात्पर्य उसका अपनी शक्ति में अविश्वास से नहीं है। लेकिन जो वास्तव में महान् पुरुष होते हैं, उनकी कुछ ऐसी विचित्र भावनाएँ होती हैं कि बड़प्पन उनमें नहीं है, बल्कि उनके द्वारा है। उन्हें प्रत्येक प्राणी में किसी न किसी बड़ाई के दर्शन होते रहते हैं। उनकी दया भावना इतनी अनन्त होती है कि विश्वास करना कठिन हो जाता है और साधारण जन को मूर्खता प्रतीत होती है।



इतिहास तो उत्तर देने का एक ही तरीक़ा जानता है, और वह है पुराने सवालों के जवाब में नए सवाल पेश कर देना।



किसी भी राष्ट्र को तीन मंज़िलों से होकर गुज़रना पड़ता है—पहले उसको सफलता मिलती है, फिर उस सफलता के अभिमान में अन्याय और उद्दण्डता शुरू होती है और तब इन बुराइयों के फलस्वरूप उसका पतन हो जाता है।

